शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय , आष्टा जिला - सीहोर (म.प्र.)
(नैक द्वारा 'B' ग्रेड प्राप्त) **सम्बद्ध :** बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार
(4 नवम्बर 2025)

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन, भोपाल

शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला–सीहोर (म.प्र.)

Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District Sehore, Madhya Pradesh, India - 466116

स्मारिका

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग

Utility of Indian Knowledge Tradition in Human Life

राष्ट्रीय वेबिनार (National Webinar)

आयोजन तिथि: 4 नवम्बर 2025

आयोजक संस्था (Organizing Institution) : शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत. Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India.

Email: hegcashseh@mp.gov.in

प्रायोजक: उच्च शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश शासन , भोपाल

This publication supports United Nations Sustainable Development Goals (UNSDGs) RSYN RESEARCH LLP is a signatory of UNSDG PUBLISHERs compact. This article supports UNSDG goals: Goal 4 (Quality Education) and Goal 12 (Responsible Consumption).

COPYRIGHT NOTICE / कॉपीराइट सूचना

The copyright of individual content remains with the respective authors and editors. By submitting their work, authors grant RSYN RESEARCH LLP the exclusive right of first publication and a worldwide license to distribute, sell, remix, archive, and utilize the material in any physical or digital form.

व्यक्तिगत सामग्री का कॉपीराइट संबंधित लेखकों और संपादकों के पास सुरक्षित रहता है। अपनी सामग्री जमा करके, लेखक RSYN RESEARCH LLP को प्रथम प्रकाशन का अनन्य अधिकार और सामग्री को किसी भी भौतिक या डिजिटल रूप में वितरित करने, बेचने, रीमिक्स करने और संग्रहित करने का वैश्विक लाइसेंस प्रदान करते हैं।

LICENSE (CC BY-NC-ND 4.0) / लाइसेंस

This work is released under the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International License. This allows others to download and share the work with credit, but they cannot change it or use it commercially.

यह पुस्तक Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International लाइसेंस के तहत जारी की गई है। इसके तहत अन्य लोग श्रेय देकर इसे साझा कर सकते हैं, लेकिन वे इसे बदल नहीं सकते या इसका व्यावसायिक उपयोग नहीं कर सकते।

PUBLICATION DETAILS / प्रकाशन विवरण

Published with all reasonable efforts to ensure error-free content. No part of this publication may be used or reproduced in any manner without written permission from the Publisher, except for brief quotations in critical reviews.

सामग्री को त्रुटि-मुक्त सुनिश्चित करने के प्रयासों के साथ प्रकाशित। समीक्षाओं में संक्षिप्त उद्धरणों को छोड़कर, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से का पुनरुत्पादन या उपयोग प्रतिबंधित है।

DISCLAIMER / अस्वीकरण

Author(s) are solely responsible for the views expressed. The Content does not reflect the opinion of the Publisher or Editor. They shall not be liable for any errors, omissions, or claims arising out of use or reliance on information herein.

लेखक अपने संबंधित अध्यायों में व्यक्त विचारों के लिए स्वयं उत्तरदायी हैं। सामग्री प्रकाशक या संपादक की राय को प्रतिबिंबित नहीं करती है। वे किसी भी त्रुटि, चूक या दावों के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे जो इस जानकारी के उपयोग से उत्पन्न होते हैं।

TERMS & CONDITIONS / नियम एवं शर्तें

Co-published as a Souvenir and RSYN Proceedings. This integrated model shall not constitute a duplicate publication.

ज्ञान प्रसार के लिए स्मारिका और RSYN Proceedings में सह-प्रकाशित। यह एकीकृत मॉडल 'डुप्लिकेट प्रकाशन' की श्रेणी में नहीं आएगा।

Digital download and online
books.rsyn.org
rsynresearch.com/books/
rsynpress.com

Published in India
by RSYN RESEARCH LLP, Indore, India
www.rsyn.org

Editorial Board (संपादक मण्डल):
Dharmendra Suryavanshi (धर्मेंद्र सूर्यवंशी)
Bhaskar Parmar (भास्कर परमार).
Dr. Shashank Dubey (डॉ. शशांक दुबे).

प्रकाशक: RSYN RESEARCH LLP
प्रकाशन वर्ष: 2026

कॉपीराइट: © 2026, RSYN RESEARCH LLP. All rights reserved for design, layout, and other creative elements. Authors reserves the copyright of their respective chapter.
लाइसेंस: Released under Creative Commons Attribution – NonCommercial – NoDerivatives 4.0 International

ISBN : 978-81-998593-3-3 (Paperback)
ISBN: 978-81-998593-4-0 (ebook/online)
DOI:: 10.70130/RP.2026.0301

ISBN 978-819985933-3
9 788199 859333

978-81-998593-3-3

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा द्वारा राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन दिनांक **4** नवम्बर **2025** को किया जा रहा है। भारतीय गौरवशाली ज्ञान परंपरा से विद्यार्थियों एवं शिक्षक वर्ग को समग्र रूप से परिचित कराने एवं उसे अपनी विषय–सामग्री में समाविष्ट करने के उद्देश्य से स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

वेबिनार के सफल आयोजन के लिए मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(गोपाल सिंह बाथम**)**
विधायक, आष्टा

शुभकामना संदेश

महाविद्यालय परिवार हमेशा से अध्ययनरत विद्यार्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए संकल्पित एवं प्रयासरत रहता है। इसी तारतम्य में दिनांक 4 नवम्बर 2025 को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय वेबिनार के सफल आयोजन की बहुत–बहुत बधाई एवं स्मारिका प्रकाशन अपने उद्देश्य में सफल हो।

मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ।

(नीलेश खंडेलवाल)
जन भागीदारी समिति अध्यक्ष
शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय,
आष्टा, जिला–सीहोर

प्राचार्य की कलम से

अत्यंत हर्ष का विषय है कि उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन के सौजन्य से शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा द्वारा "मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध वेबिनार का आयोजन किया गया।

इस वेबिनार का उद्देश्य प्राचीन भारतीय विरासत के नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना तथा समकालीन चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए इसे आधुनिक शिक्षा और जीवनशैली से जोड़ना है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके तथा वे स्वयं को और विश्व को समझकर एक सार्थक जीवन जी सकें और सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ा सकें।

मुझे आशा है कि यह वेबिनार उच्च शिक्षा से जुड़े सभी सुधीजनों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए लाभदायी सिद्ध होगा।

(धर्मेन्द्र सिंह सूर्यवंशी)
प्राचार्य
शहीद भगत सिंह शासकीय
स्नातक महाविद्यालय,
आष्टा, जिला–सीहोर

संपादकीय

भारत में ज्ञान की परंपरा अत्यंत प्राचीन है और इसका आरंभ वेदों से माना जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध एवं विविधतापूर्ण धरोहर है, जो सदियों से मानव सभ्यता को आकार देती रही है।

यह परंपरा मानव जीवन को समग्रता प्रदान करती है, जिसमें नैतिक मूल्य, सामाजिक समरसता और व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलती है। यह सांस्कृतिक विरासत को सहेजती है तथा विविधता में एकता, सहिष्णुता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती है। साथ ही यह एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक सही दिशा–निर्देश प्रदान करती है।

इस स्मारिका में उपलब्ध लेखों के माध्यम से "मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग" विषय पर विभिन्न स्रोतों से महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करने का सुविचारित एवं दूरदर्शी प्रयास किया गया है।

(भास्कर परमार)
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
शहीद भगत सिंह शासकीय
स्नातक महाविद्यालय,
आष्टा, जिला–सीहोर

Shaheed Bhagat Singh Government College Ashta, District-Sehore (M.P.)

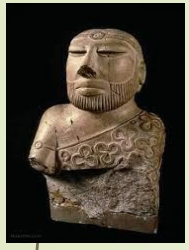

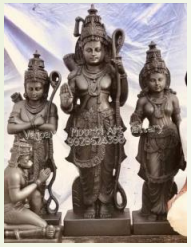

Organizes
One day National Webinar
on

"Application of the Indian Knowledge Tradition in Human Life"

(मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परम्परा का उपयोग)

-: प्रायोजक :-
(उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. भोपाल)

Date of Webinar- 04.11.2025

12PM onwards
(Hybrid Mode)

Whatsapp group link:

https://chat.whatsapp.com/E03mzYg52O211o3pznbZ2G

Link for online mode of Webinar will be provided in the group

Resource Persons:

Dr. Divya Deshpanday
Assistant Professor, Sanskrit
Government D.S.V Sanskrit College,
Raipur (Chhattisgarh)

Dr. Anu Sharma
Founding Director – Green PaVAK Biotech Pvt. Lmt.
Lucknow (Uttar Pradesh)

Registration is free for all.
E-certificates will be provided to all participants after submission of feedback form.

REGISTRATION LINK:
https://forms.gle/Zi3zgQyevLGT9SNb6

Those who want to present paper offline, kindly select the option in registration form accordingly.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परम्परा का उपयोग

Application of the Indian Knowledge Tradition in Human Life

उप-विषय :

1. भारतीय ज्ञान परम्परा का वैज्ञानिक महत्व
   Scientific Importance of the Indian Knowledge Tradition
2. भारतीय ज्ञान परम्परा का सामाजिक उपयोग
   Social Application of the Indian Knowledge Tradition
3. भारतीय ज्ञान परम्परा में रोजगार के नए अवसर
   New Employment Opportunities in the Indian Knowledge Tradition
4. भारतीय ज्ञान परम्परा का उपयोग-पद्धति में महत्व
   Importance of the Indian Knowledge Tradition in the Use of Resources
5. भारतीय ज्ञान परम्परा में गणित एवं विज्ञान का योगदान
   Contribution of Mathematics and Science in the Indian Knowledge Tradition
6. भारतीय ज्ञान परम्परा और ज्योतिष
   Indian Knowledge Tradition and Astrology
7. भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म और आध्यात्म
   Religion and Spirituality in the Indian Knowledge Tradition
8. भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक दृष्टिकोण
   Moral Vision in the Indian Knowledge Tradition
9. भारतीय ज्ञान परम्परा और पर्यावरण
   Indian Knowledge Tradition and Environment
10. भारतीय ज्ञान परम्परा में महिला सशक्तिकरण का योगदान
    Contribution of the Indian Knowledge Tradition to Women Empowerment

Organizing committee:

- Miss. Sheela Mewada
- Dr. Deepesh Pathak
- Dr. Amila Patel
- Mr. Jagdeesh Nagle
- Dr. Lalita Rai Shrivastava

Screening and Publication committee:

- Dr. Deepesh Pathak
- Dr. Kripal Vishwakarma
- Dr. Kumkum Agrawal
- Mr. Wasim Khan
- Mr. Rajeshwar Bhutiya

Technical committee:

- Mr. Mukesh Parmar
- Mr. Bane Singh Mewara
- Mr. Satendra Saxena
- Mr. Sumit Bhutiya

Researchers and academicians from different fields are invited to submit Research articles/paper (1500-2500 words), typed in MS word format as provided below

webinarashta@gmail.com

For English: Title of the Paper-Font size- 14, Body of the paper-: Font size 12, Font Style: Times New Roman.

For Hindi: Use Arial Unicode MS Font Size 12 or in Kruti Dev Font Size 14.**Spacing:** 1.5

Last date for submission: 04.11.2025

Selected papers/articles will be published in research compendium with ISBN.

Chief Patron
Dr. Mathura Prasad
Additional Director, Higher Education Department, Bhopal Division

Special Guest
Dr. Rohitashva Kumar Sharma
Principal
C.S.A. P.G. College, Sehore

Patron
Mr. Dharmendra Suryavanshi
Principal
S.B.S. Govt. College, Ashta

Convenor
Dr. Shashank Dubey
Guest Faculty
(Physics)

Co-convenor
Smt. Sapna Tamrakar
Guest Faculty
(Mathematics)

शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला–सीहोर (म.प्र.)
Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District Sehore, Madhya Pradesh, India - 466116

शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा (जिला सीहोर) की स्थापना सन 1983 में मध्यप्रदेश शासन द्वारा की गई थी। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से संबद्ध यह महाविद्यालय इंदौर एवं भोपाल के मध्य कन्नौद रोड पर स्थित है और लगभग 20 किमी के क्षेत्र में एकमात्र शासकीय महाविद्यालय के रूप में अपनी सेवाएं दे रहा है। यहाँ की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि अध्ययनरत विद्यार्थियों में छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक है, जो महिला शिक्षा के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। वर्तमान में, लगभग 2200 पंजीकृत विद्यार्थियों के साथ यह महाविद्यालय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है, तथा आधुनिक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

Established in 1983 by the Government of Madhya Pradesh, Shaheed Bhagat Singh Government Post Graduate College, Ashta (District Sehore) serves as a vital educational hub. Affiliated with Barkatullah University, Bhopal, the college is strategically located on Kannod Road between Indore and Bhopal, making it the only government institution within a 20 km radius. A significant highlight of the college is that the enrollment of female students exceeds that of male students, underscoring its role in promoting women's education. With approximately 2,200 registered students, the institution offers undergraduate and postgraduate courses in Arts, Science, and Commerce, continually evolving to meet modern academic challenges and maintaining a steady path of progress.

Glimpses of the National Webinar (राष्ट्रीय वेबिनार की झलकियाँ)

Glimpses of the National Webinar (राष्ट्रीय वेबिनार की झलकियाँ)

विषय-सूची (Table of Contents)

I.	**प्रस्तावना (Preface)**		1
II.	**विज्ञान, गणित एवं तकनीक (Science, Math & Technology)**		3
1	भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिक विज्ञान	डॉ. शशांक दुबे	5
2	Contribution of Mathematics in the Indian Knowledge Tradition (भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित का योगदान)	डॉ. सपना ताम्रकार	8
3	Chemical Kinetics and Buddhism: A Dialogue between Science and Philosophy of Change (रासायनिक गतिकी और बौद्ध धर्म: विज्ञान और परिवर्तन के दर्शन के बीच संवाद)	अखिलेश शिंदे एवं अंजलि आचार्य	13
4	Revisiting Indian Knowledge System: Scientific Heritage and Its Contemporary Relevance (भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरावलोकन: वैज्ञानिक विरासत और इसकी समकालीन प्रासंगिकता)	बिन्देश कुमार शुक्ला	19
5	भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में गणित एवं मनुष्य की जीवन-शैली में सम्बन्ध	वसीम खान	24
III.	**पर्यावरण, दर्शन एवं आध्यात्म (Environment & Philosophy)**		27
6	भारतीय ज्ञान परंपरा और पर्यावरण संरक्षण	शीला मेवाड़ा	29
7	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति और मानव का सह-अस्तित्व	प्रथम भनोत्रा	34
8	भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म और आध्यात्म	डॉ. मेघा जैन	40
9	भारतीय ज्ञान परंपरा: कल, आज और कल	प्रो. जीतेन्द्र गुप्ता	43

IV.	**समाज, राजनीति एवं सशक्तिकरण (Society, Polity & Empowerment)**		49
10	भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण: एक अध्ययन	डॉ. ललिता राय श्रीवास्तव	51
11	भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तिकरण का योगदान	भास्कर परमार	54
12	रामायण में शासन कला में जनमत की भूमिका का अध्ययन	भगवत सिंह पाल	57
13	भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक उपयोग	धर्मेन्द्र सूर्यवंशी	64
14	Contribution of the Indian Knowledge Tradition to Women Empowerment (महिला सशक्तिकरण में भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान)	डॉ. किरण वर्मा	68
V.	**प्रबंधन, राजस्व एवं शिक्षा (Management, Revenue & Education)**		77
15	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणालियों में राज्य राजस्व (कोष) प्रबंधन	अनिमेष पटेल एवं डॉ. लोकेन्द्र सिंह	79
16	शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता	डॉ. दीपेश कुमार पाठक	87
17	भारतीय ज्ञान परंपरा में रोजगार के नए अवसर	राजेश मधुकर सोनकुसरे	91
18	An Exploratory Study of Marketing Practices through Purushārthas in the Context of Bharatiya Gyan Parampara (भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में पुरुषार्थों के माध्यम से विपणन प्रथाओं का अन्वेषणात्मक अध्ययन)	डॉ. लोकेन्द्र विक्रम सिंह एवं अनिमेष पटेल	98
19	भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक महत्व	डॉ. देवेंद्र कुमार कोली	104
20	भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में पुस्तकालय का योगदान	डॉ. दीपक मालवीय	112
VI.	**सारांश (Summary)**		117

VII. नाम अनुक्रमणिका (Name Index) 120

VIII. वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका (Alphabetical Subject Index) 122

IX. विषय अनुक्रमणिका (Subject Index) 125

प्रस्तावना (Preface)

भारतीय ज्ञान परंपरा: शाश्वत ज्ञान से आधुनिक समाधान तक

भारत की ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सबसे समृद्ध परंपराओं में से एक है। यह केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक पद्धति है, जो 'सत्य' की खोज और 'लोक-कल्याण' की भावना पर आधारित है। ऋग्वेद का उद्घोष **"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः"** (अर्थात् सभी दिशाओं से हमें कल्याणकारी विचार प्राप्त हों) इस परंपरा की उदारता और ग्रहणशीलता का प्रतीक है।

प्रस्तुत संपादित पुस्तक '**मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग** ' उन शोधार्थियों, आचार्यों और विचारकों के लेखों का संकलन है, जिन्होंने भारतीय प्रज्ञा के विभिन्न पहलुओं को आधुनिक संदर्भों में टटोलने का प्रयास किया है।

प्रमुख स्तंभ (Key Themes of the Book)

इस पुस्तक को मुख्य रूप से चार वैचारिक खंडों में विभाजित किया गया है:

1. **विज्ञान और तकनीक:** अक्सर यह भ्रम फैलाया जाता है कि विज्ञान पश्चिम की देन है। इस खंड के शोध पत्र (जैसे डॉ. शशांक दुबे और बिन्देश शुक्ला के लेख) यह सिद्ध करते हैं कि कणाद का परमाणुवाद, आर्यभट्ट की खगोलिकी और प्राचीन भारत की रासायनिक गतिकी (Chemical Kinetics) आधुनिक विज्ञान के मजबूत आधार रहे हैं।
2. **पर्यावरण और सह-अस्तित्व:** आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन के संकट से जूझ रहा है, भारतीय दर्शन का 'पंचमहाभूत' (पृथ्वी, जल, पावक, गगन, समीरा) सिद्धांत हमें प्रकृति के शोषण के बजाय पोषण की शिक्षा देता है। शीला मेवाड़ा और प्रथम भनोत्रा के शोध इस दिशा में नई दृष्टि प्रदान करते हैं।
3. **महिला सशक्तिकरण और समाज:** वैदिक काल की विदुषियों से लेकर आधुनिक युग तक, भारतीय समाज में स्त्री शक्ति की भूमिका और रामायण कालीन शासन कला (भगवत सिंह पाल के अनुसार) यह दर्शाती है कि हमारी परंपराएँ सदैव समावेशी और न्यायप्रिय रही हैं।
4. **प्रबंधन और शिक्षा:** नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के आलोक में डॉ. दीपेश पाठक और राजेश मधुकर ने यह रेखांकित किया है कि कैसे भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा से जोड़कर रोजगार और चारित्रिक

उत्थान संभव है। वहीं, अनिमेष पटेल और डॉ. लोकेन्द्र सिंह के शोध कौटिल्य के 'कोष' प्रबंधन को आधुनिक कर (Tax) प्रणालियों से जोड़ते हैं।

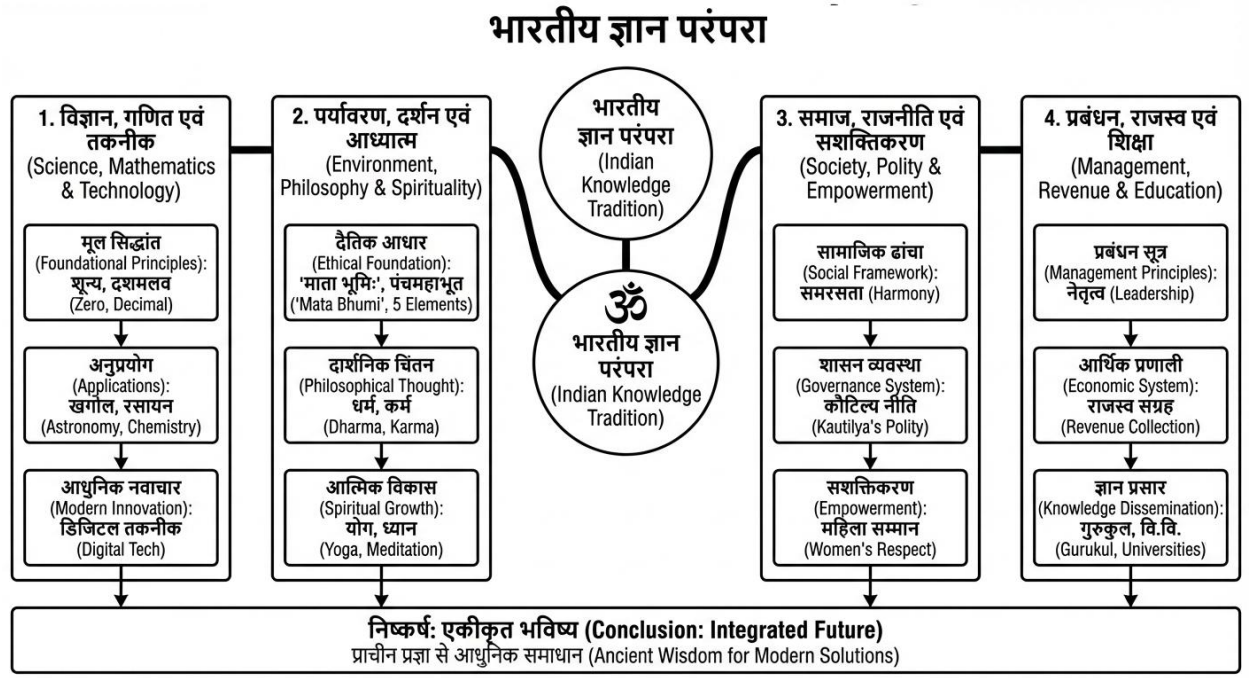

निष्कर्ष और आभार

यह पुस्तक केवल अतीत का गुणगान नहीं करती, बल्कि वर्तमान की समस्याओं—चाहे वह मानसिक तनाव हो, आर्थिक असमानता हो या पर्यावरणीय विनाश—के लिए भारतीय चक्षु से समाधान खोजने का प्रयास करती है।

हम उन सभी विद्वान लेखकों के आभारी हैं जिन्होंने अपने गहन शोध के माध्यम से इस ग्रंथ को पूर्णता प्रदान की। हमें विश्वास है कि यह संकलन शिक्षाविदों, नीति निर्धारकों और जिज्ञासु पाठकों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा।

संपादक मंडल

खण्ड I

विज्ञान, गणित एवं तकनीक

Science, Mathematics & Technology

भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान, गणित और तकनीक का अत्यंत समृद्ध इतिहास रहा है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने शून्य की खोज, दशमलव पद्धति, त्रिकोणमिति, खगोल विज्ञान, रसायन शास्त्र और भौतिक विज्ञान में अमूल्य योगदान दिया। वैदिक गणित की सूक्ष्म विधियाँ, आर्यभट्ट का पाई का मान, भास्कराचार्य का बीजगणित, और कणाद का परमाणु सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। यह खण्ड इन्हीं वैज्ञानिक परंपराओं और उनके आधुनिक अनुप्रयोगों पर केंद्रित शोध पत्रों को प्रस्तुत करता है।

The Indian Knowledge Tradition boasts an extraordinarily rich history in science, mathematics, and technology. Ancient Indian scholars made

invaluable contributions including the discovery of zero, the decimal system, trigonometry, astronomy, chemistry, and physics. The refined methods of Vedic mathematics, Aryabhata's calculation of pi, Bhaskaracharya's algebra, and Kanada's atomic theory remain relevant today. This section presents research papers focusing on these scientific traditions and their modern applications, bridging ancient wisdom with contemporary scientific inquiry.

भारतीय ज्ञान परम्परा में भौतिक विज्ञान

Physics in Indian Knowledge Tradition

डॉ. शशांक दुबे / Dr. Shashank Dubey

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), भौतिक विज्ञान विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Physics, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध एवं विविधापूर्ण धरोहर है। प्राचीन भारत में विज्ञान के युग में तीव्र गति से वैज्ञानिक अवधारणाएं विकसित हुई थीं। भारतीय ऋषि मुनियों ने प्राकृतिक नियमों का विस्तृत अध्ययन कर उन्हें विभिन्न शास्त्रों में संकलित किया। भौतिक विज्ञान का प्रारंभ प्राचीन भारत में हुआ था। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं - क्वांटम भौतिकी, विद्युत, गुरुत्वाकर्षण और यांत्रिकी - का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

The Indian knowledge tradition is a rich and diverse heritage. In ancient India, scientific concepts developed rapidly during the age of science. Indian sages conducted extensive studies of natural laws and compiled them into various scriptures. Physics originated in ancient India. This research paper presents an analysis of various aspects of physics in the Indian knowledge tradition - quantum physics, electricity, gravitation, and mechanics.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, भौतिक विज्ञान, क्वांटम भौतिकी, परमाणु सिद्धांत, गुरुत्वाकर्षण

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Physics, Quantum Physics, Atomic Theory, Gravitation

परिचय

भारतीय ऋषियों एवं वैज्ञानिकों द्वारा की गई खोज एवं अवधारणा ने आधुनिक विज्ञान को भी प्रभावित किया। प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों में मुख्य रूप से नंदीश, अत्री, गर्ग, अगस्त्य, परशुराम, द्रोण, भृगु, वशिष्ठ, चक्रयाण, धुंडीनाथ आदि ने रसायन विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, सैन्य विज्ञान, जहाज निर्माण के क्षेत्र में जीवन पर्यंत कार्य कर अमूल्य योगदान दिया है। वर्तमान युग में हमारे प्राचीन भारतीय सिद्धांतों का उपयोग मौसम पूर्वानुमान, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, विमानन, खगोलशास्त्र इत्यादि के लिए किया जा रहा है।

क्वांटम भौतिकी

हमारे वेदों में 600 ईसा पूर्व में परमाणु सिद्धांत में क्वांटम भौतिकी के बारे में उल्लेखित है जिसमें परमाणु एवं कणों की सूक्ष्मता का वर्णन था। क्वांटम भौतिकी में अपना योगदान देने वाले पाश्चात्य वैज्ञानिक नील्स बोहर एवं श्रोडिंगर वैदिक ग्रंथों के पाठक थे। आधुनिक परमाणु बम के जनक कहे जाने वाले जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर की भी संस्कृत और भगवद् गीता में गहरी रुचि थी। भगवद् गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं: "कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो" जिसका अर्थ है 'मैं समय हूं, लोकों का विनाशकर्ता।' ओपेनहाइमर ने इस श्लोक को परमाणु बम के विनाशकारी प्रभाव के संदर्भ में उद्धृत किया।

विद्युत (इलेक्ट्रिसिटी)

लगभग 7000 वर्ष पूर्व अगस्त्य ऋषि द्वारा लिखित पुस्तक 'अगस्त्य संहिता' में विद्युत का उल्लेख मिलता है। उसमें वर्णित है कि 'एक मिट्टी का बर्तन लो, एक तांबे की चादर रखो और शिखीग्रीवा इसमें। फिर इसे गीले चूरे, पारा और जस्ता के साथ धब्बा दें। फिर, यदि आप तारों को जोड़ते हैं, तो यह जन्म देगा मित्रवरुणशक्ति।' इन्होंने विवरण दिया कि जल को ऑक्सीजन और हाइड्रोजन में विभाजित किया जा सकता है। अगस्त्य संहिता और अन्य शास्त्र में बिजली बनाने के अलग-अलग तरीकों को बताया गया है।

गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत

गुरुत्वाकर्षण बल एक सार्वभौम बल है जिसके प्रभाव से एक पिंड दूसरे पिंड को अपनी ओर आकर्षित करता है। जिस पिंड का द्रव्यमान जितना अधिक होता है, उतना ही उसके द्वारा अध्यारोपित गुरुत्वाकर्षण बल होता है। आज हम सभी जानते हैं कि सर्वप्रथम न्यूटन ने पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज की थी, लेकिन उनसे 550 साल पहले भास्कराचार्य ने इसके बारे में बताया था। भारतीय गणितज्ञ भास्कराचार्य द्वारा रचित लीलावती में उन्होंने पृथ्वी के आकार का उल्लेख किया है और बताया है कि पृथ्वी समतल प्रतीत होती है लेकिन वास्तविकता में गोलाकार है।

यांत्रिकी और प्रौद्योगिकी

महर्षि भारद्वाज के 'यंत्र सर्वस्व' और 'वैमानिक शास्त्र' में विमानों, उड़ने वाली मशीनों और अंतरिक्ष यात्रा से संबंधित विस्तृत वर्णन है, जिनमें इंजीनियरिंग और यांत्रिकी के सिद्धांत शामिल हैं। भारतीय ग्रंथों में भौतिकी एवं यांत्रिकी के अद्भुत विचार मिलते हैं, खासकर कणाद ऋषि के परमाणुवाद में जो आधुनिक क्वांटम यांत्रिकी की झलक दिखाते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिकों का मत

कुछ आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक जैसे हाइजेनबर्ग एवं श्रोडिंगर मानते हैं कि क्वांटम भौतिकी के कई विचार वेदांत और उपनिषदों के दर्शन में मिलते हैं। अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि 'हमें भारत का आभारी होना चाहिए जिसने संपूर्ण विश्व को गणना करना सिखाया।' उनका मत था कि वेद और पुराणों के अध्ययन से उन्हें अपने प्रयोगों को समझने में बहुत मदद मिली। थॉमस अल्वा एडिसन ने ध्वनि विभाजन के सिद्धांतों पर आधारित ग्रामोफोन को आविष्कृत किया था और पहली रिकॉर्डिंग के लिए ऋग्वेद के पहले श्लोक 'अग्निमीले पुरोहितम्' को अपनी आवाज में रिकॉर्ड किया।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा और क्वांटम भौतिकी दोनों ही हमें वास्तविकता की गहराई, चेतना की भूमिका और ब्रह्मांड के गहरे अंतर्संबंध को समझने के लिए एक नया, एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो भौतिक और आध्यात्मिक को एक साथ लाते हैं। प्राचीन भारतीय विज्ञान ने आधुनिक भौतिकी की नींव रखी और आज भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

संदर्भ सूची (References)

सोनी, सुरेश। (2003)। *भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परंपरा।* अर्चना प्रकाशन।

चट्टोपाध्याय, देवीप्रसाद एवं सरदेसाई, *एस.जी. Science and society in ancient India.*

तिवारी, विश्व मोहन। (2015)। *भारत में विज्ञान एवं विज्ञान संचार की परंपरा।* आईसेक्ट प्रकाशन।

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 5-7

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 5-7

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित का योगदान

Contribution of Mathematics in the Indian Knowledge Tradition

डॉ. सपना तामकार / Dr. Sapna Tamrakar

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), गणित विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Mathematics, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से अपनी बौद्धिक समृद्धि, वैज्ञानिक विचार और तार्किक तर्क के लिए प्रसिद्ध रही है। इस परंपरा में गणित का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यह न केवल सैद्धांतिक अध्ययन का विषय रहा है बल्कि खगोल विज्ञान, वास्तुकला, दर्शन और व्यापार जैसे क्षेत्रों में भारतीय सभ्यता के विकास की नींव भी रहा है। यह लेख भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित के योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

The Indian knowledge tradition has been renowned for its intellectual richness, scientific thought, and logical reasoning for millennia. Mathematics holds a central and highly significant place in this tradition, serving not merely as a subject of theoretical study but as the foundation for the growth of Indian civilization in diverse fields including astronomy, architecture, philosophy, and trade. This article examines the major contributions of Indian mathematics from the Vedic period through medieval times, highlighting innovations such as the decimal system, the concept of zero, geometric principles, trigonometric functions, and algebraic methods. These developments profoundly influenced global mathematical thought and laid the groundwork for modern science and technology.

मुख्य शब्द: भारतीय गणित, शून्य, दशमलव प्रणाली, आर्यभट्ट, त्रिकोणमिति, बीजगणित

Keywords: Indian Mathematics, Zero, Decimal System, Aryabhata, Trigonometry, Algebra

INTRODUCTION

The history of mathematics in India extends back several thousand years, representing one of humanity's most enduring intellectual traditions. From the sophisticated measurement systems of the Indus–Saraswati civilization (circa 2600–1900 BCE) to the geometric principles codified in the Vedic Śulba Sūtras, India has consistently demonstrated remarkable mathematical innovation. Unlike purely theoretical pursuits, Indian mathematics found practical applications across multiple domains: the construction of yajna-vedis (sacrificial altars), agricultural planning, astronomical calculations, medical diagnostics, and commercial transactions. The synthesis of theoretical rigor with practical utility characterized the Indian approach to mathematics throughout its history.

DEVELOPMENT OF MATHEMATICS IN THE VEDIC PERIOD

In Vedic literature, dating from approximately 1500–500 BCE, mathematics appears under the nomenclatures Gaṇanā (calculation) and Sāṅkhya (numerical science). The Śulba Sūtras, religious texts containing geometric instructions for altar construction, represent some of the earliest systematic treatments of geometry. These texts demonstrate sophisticated understanding of geometric relationships and spatial reasoning.

Major Contributions:

The Śulba Sūtras, particularly those attributed to Baudhāyana, Āpastamba, and Kātyāyana, contain early principles of geometry including methods for constructing geometric figures such as squares, rectangles, circles, and triangles with precise proportions.

Remarkably, the Baudhāyana Śulba Sūtra (circa 800 BCE) contains a clear statement of what is now known as the Pythagorean theorem—centuries before Pythagoras (circa 570–495 BCE). The theorem states that the diagonal of a rectangle produces an area equal to the sum of the areas produced by its two sides.

The Śulba Sūtras also provide remarkably accurate approximations for irrational numbers, including the square root of 2, calculated to several decimal places of accuracy.

DEVELOPMENT OF NUMERALS AND THE NUMBER SYSTEM IN ANCIENT INDIA

India's most transformative contribution to world mathematics was undoubtedly the decimal place-value system and the concept of zero (śūnya). These innovations revolutionized mathematical calculation and laid the foundation for all subsequent mathematical development worldwide.

Key Developments:

Aryabhata (476–550 CE), one of India's most celebrated mathematician-astronomers, systematically employed the place-value system in his astronomical calculations. His work, the Aryabhatiya, demonstrates sophisticated use of positional notation.

Brahmagupta (598–668 CE) made the groundbreaking achievement of defining zero (śūnya) as a number in its own right rather than merely a placeholder. In his seminal work Brāhmasphuṭasiddhānta (628 CE), he established comprehensive algebraic rules for operations involving zero, including rules for addition, subtraction, and multiplication with zero. He recognized that any number multiplied by zero yields zero, and that zero subtracted from a number leaves it unchanged.

The Indian system of naming large numbers—including lakh (100,000), crore (10,000,000), arbuda (100,000,000), and kharva (10,000,000,000)—existed millennia before comparable systems emerged elsewhere, demonstrating an extraordinary facility with large-scale numerical thinking.

GEOMETRY, TRIGONOMETRY, AND ALGEBRA

Geometry

Precise geometrical methods evolved through the practical requirements of altar construction and religious architecture. The Śulba Sūtras provided detailed geometric procedures for constructing altars of various shapes while maintaining specific proportional relationships.

The remarkable urban planning evident in cities such as Mohenjo-daro and Harappa, with their grid-based layouts and sophisticated drainage systems, reflects advanced understanding of geometric principles and mathematical precision in civil engineering.

Trigonometry

India pioneered the development of trigonometry as a mathematical discipline. The systematic study of trigonometric functions emerged from astronomical requirements, particularly the need to calculate positions of celestial bodies.

Aryabhata introduced the trigonometric functions jya (sine), kojya (cosine), and utkramjya (versed sine). Significantly, the modern English term 'sine' derives from the Sanskrit jya through Arabic transliteration—the Arabic 'jiba' was mistranslated as 'sinus' (meaning 'bay' or 'curve') in Latin, giving us the current term.

Comprehensive trigonometric tables were compiled in India centuries before they appeared in Europe. These tables provided values for trigonometric functions at regular intervals, enabling precise astronomical and geometric calculations.

Algebra

India made fundamental contributions to the development of algebra. The term 'algebra' itself derives from Arabic 'al-jabr,' but the discipline's foundations were substantially Indian.

Brahmagupta systematically developed methods for solving linear and quadratic equations, and he worked extensively with indeterminate equations—problems seeking integer solutions to algebraic equations.

Bhaskara II (1114–1185 CE), also known as Bhaskaracharya, presented algebra with exceptional clarity and elegance in his works Līlāvatī and Bījagaṇita. The Līlāvatī, named after his daughter, covers arithmetic and geometry, while the Bījagaṇita focuses on algebra. These texts remained authoritative for centuries and were studied throughout the Indian subcontinent and beyond.

MATHEMATICS IN ASTRONOMY

Mathematics and astronomy were deeply interconnected in the Indian scientific tradition. Astronomical problems motivated mathematical innovations, while mathematical techniques enabled increasingly sophisticated astronomical models.

Planetary motion, eclipses, and celestial phenomena were explained through mathematical models. Aryabhata proposed that the Earth rotates on its axis, a remarkable insight for his era, and developed mathematical methods to accurately compute eclipses with impressive precision.

Varāhamihira (505–587 CE) employed sophisticated mathematical models to predict weather patterns, seasonal changes, and stellar movements. His comprehensive work, the Bṛhat Saṃhitā, integrated mathematical, astronomical, and observational knowledge.

MATHEMATICS IN INDIAN ARCHITECTURE AND ART

Ancient Indian temples, stupas, and sculptures embody sophisticated mathematical principles. The precise proportions, symmetrical designs, and geometric complexity of these structures demonstrate advanced mathematical knowledge applied to aesthetic and spiritual purposes.

Monuments such as the Sanchi Stupa, Konark Sun Temple, and the temples of Khajuraho exemplify the application of geometric principles and proportional systems. These structures incorporate complex mathematical relationships in their design, including the use of the golden ratio and other harmonic proportions.

Mandala art and yantras (mystical diagrams) are based on intricate mathematical patterns involving symmetry, tessellation, and geometric transformation. These artistic-spiritual creations reflect a deep understanding of mathematical principles.

MATHEMATICS IN TRADE AND ECONOMICS

Ancient India's sophisticated economic system relied heavily on mathematical techniques. Systems of currency, land measurement, taxation, and accounting all employed mathematical principles.

The Arthaśāstra, attributed to Kautilya (Chanakya, circa 4th century BCE), contains detailed discussions of interest calculation, profit-and-loss analysis, proportional taxation, and economic planning. This ancient text demonstrates sophisticated understanding of mathematical economics.

INFLUENCE OF INDIAN MATHEMATICS ON GLOBAL MATHEMATICAL DEVELOPMENT

Indian mathematical knowledge profoundly influenced the development of mathematics worldwide through cultural transmission and scholarly exchange.

The Fibonacci sequence, while named after the Italian mathematician Leonardo Fibonacci (1170–1250 CE), has roots in ancient Indian mathematical works. Indian mathematicians studied similar numerical patterns in the context of Sanskrit prosody and combinatorics centuries earlier.

Indian trigonometry and algebra were transmitted to the Islamic world during the 8th and 9th centuries CE, where they were further developed by scholars such as Al-Khwarizmi and Al-Biruni. This knowledge subsequently reached Europe through Arabic translations during the medieval period, profoundly influencing the European Renaissance in mathematics.

Without the Indian concepts of zero and the decimal place-value system, modern science, engineering, computing, and economics would be fundamentally different. These innovations provided the notational and conceptual foundations for all subsequent mathematical and scientific development.

CONCLUSION

The contribution of mathematics to the Indian knowledge tradition extends far beyond historical interest—it constitutes a foundational pillar of modern science and technology. The decimal system, the concept of zero, algebraic methods, trigonometric functions, astronomical calculations, and architectural applications of geometry demonstrate India's unparalleled and enduring influence on global mathematical thought. These achievements reflect not merely technical innovation but a distinctive philosophical approach that integrated mathematical reasoning with practical application, spiritual inquiry, and aesthetic expression. The Indian mathematical tradition thus represents one of humanity's most significant intellectual accomplishments, continuing to shape mathematical thinking and scientific practice across the contemporary world.

REFERENCES

Boyer, C. B., & Merzbach, U. C. (2011). *A History of Mathematics* (3rd ed.). John Wiley & Sons.

Datta, B., & Singh, A. N. (1962). *History of Hindu Mathematics: A Source Book* (Parts I & II). Asia Publishing House. (Original work published 1935-1938)

Gupta, R. C. (1992). Gañita-Yukti-Bhāsā (Rationales in Mathematical Astronomy) of Jyeṣṭhadeva. *Indian Journal of History of Science*, 27(2), 185-207.

Hayashi, T. (1995). *The Bakhshālī Manuscript: An Ancient Indian Mathematical Treatise*. Egbert Forsten.

Ifrah, G. (2000). *The Universal History of Numbers: From Prehistory to the Invention of the Computer*. John Wiley & Sons.

Joseph, G. G. (2011). *The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics* (3rd ed.). Princeton University Press.

Keller, A. (2006). *Expounding the Mathematical Seed: A Translation of Bhaskara I on the Mathematical Chapter of the Aryabhatiya*. Birkhäuser.

Pingree, D. (1981). *Jyotiḥśāstra: Astral and Mathematical Literature*. Otto Harrassowitz.

Plofker, K. (2009). *Mathematics in India*. Princeton University Press.

Sarma, K. V., & Sastri, T. S. K. (1977). *Āryabhaṭīya of Āryabhaṭa with the Commentary of Bhāskara I and Someśvara*. Indian National Science Academy.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 8-12

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 8-12

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

रासायनिक गतिकी और बौद्ध धर्म: विज्ञान और परिवर्तन के दर्शन के बीच संवाद

Chemical Kinetics and Buddhism: A Dialogue between Science and Philosophy of Change

डॉ. अखिलेश शिंदे एवं अंजलि आचार्य / Dr. Akhilesh Shende and Anjali Acharya

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Institute for Excellence in Higher Education (IEHE), Bhopal (M.P.), India

सारांश (Abstract)

यह शोधपत्र रासायनिक गतिकी (प्रतिक्रिया दरों और तंत्रों का अध्ययन) और बौद्ध धर्म के बीच दार्शनिक और वैचारिक समानताओं का अन्वेषण करता है, विशेष रूप से इसके मूल सिद्धांत - अनित्यता (अनिच्च), प्रतीत्यसमुत्पाद, और मध्यम मार्ग। दोनों ढांचे परिवर्तन की प्रक्रियाओं की जांच करते हैं जो कड़े अंतर्संबंध और कारक कारकों द्वारा शासित होती हैं। यह लेख रासायनिक गतिकी को एक सटीक, अनुभवजन्य रूपक के रूप में उपयोग करता है जो भारतीय ज्ञान परंपरा (IKT) में निहित वैज्ञानिक कठोरता को प्रदर्शित करता है। यह बौद्ध दर्शन, विशेष रूप से धर्मकीर्ति के विचारों को उजागर करता है, जो वास्तविकता को समझने का एक तार्किक और खुला तरीका प्रदान करता है।

The present paper explores the philosophical and conceptual equivalents between chemical kinetics, the study of reaction rates and mechanisms and Buddhism, particularly its core principles are impermanence (anicca), dependent origination (pratītyasamutpāda), and the Middle Path. Both frameworks investigate processes of transformation that are governed by strict interconnection and conditioning factors. This article uses the chemical kinetics as a precise, empirical metaphor to demonstrate the scientific rigor inherent in the Indian Knowledge Tradition (IKT). It highlights the Buddhist philosophy, especially Dharmakīrti's ideas, gives a logical and open way to understand reality. This philosophy is similar to the scientific method which helps students to learn the change, connection, and moral balance.

मुख्य शब्द (Keywords): रासायनिक गतिकी, बौद्ध धर्म, अनित्यता, प्रतीत्यसमुत्पाद, प्रमाण, वैज्ञानिक विधि, सतत विकास, ज्ञानमीमांसा

Keywords: Chemical Kinetics, Buddhism, Impermanence, Dependent Origination, Pramāṇa, Scientific Method, Sustainable Development, Epistemology

1. Introduction: Uniting the Sciences of Matter and Mind

Chemistry is the science of transformation. Every chemical reaction, from decomposition to complex biological syntheses, shows the dynamic interaction of matter and energy, which

reflects the universal principle of change. Chemical kinetics is a specialized field that quantifies this transformation. It uses concepts like rate laws, activation energy, and transition states to determine reaction speed and conditions (Atkins & de Paula, 2022). Therefore, kinetics is an investigation into the essential and sufficient conditioning factors which govern the changes.

The Indian Knowledge Tradition (IKT) uses the philosophical lens of Buddhism to provide a rigorous framework for understanding universal reality. The Buddha's core teaching states that all compounded things are primarily impermanent (anicca) (Rahula, 1974). These phenomena arise from dependent origination (pratītyasamutpāda) (Rahula, 1974). This framework is not only a spiritual concept (Rahula, 1974). Instead, it is a sophisticated methodology or approach for analytically observing and analyzing change, which is termed as "inner science" (Gyatso, 2005; King, 2009).

This article uses Buddhist philosophy (IKT) to provide a rigorous scientific temper of inquiry. This temper is based on verifiable experience and systematic logic independent of dogma. The article's objective is to establish a dialogue between chemical kinetics' macro-observations and Buddhist ontology's micro-principles. This dialogue emphatically demonstrates Buddhism's scientific and epistemological sophistication. This comparative approach aims to explore the scientific importance of IKT. It also serves as a useful teaching method that connects traditional wisdom with modern science.

2. Impermanence (Anicca) and Dynamic Atomism

The core Buddhist principle of anicca states that all conditioned things are momentary and transient, which are subject to continuous formation and disappearance. At the fundamental level, this concept is parallel to the modern scientific view of matter. It can be applied to simple chemical reactions as well as to the nature of existence.

Chemical Change as Macro-Anicca

In chemistry, the half-life (t½) means how long it takes for half of something to be gone. In things like radioactive decay, it shows how change never stops (Atkins & de Paula, 2022). The decay curve shows that everything keeps changing and nothing stays the same forever.

The Concept of Momentary Atoms (Kṣaṇika-vāda)

Long ago, some Buddhist thinkers, such as the Sautrāntika and philosophers like Dharmakīrti (c. 6th–7th Century CE), wanted to explain that everything changes. They said tiny things, called atoms (kalāpas or paramāṇu), appear and disappear very fast. These atoms don't stay forever. This idea was different from other Indian thinkers who believed atoms never change (Karunadasa, 1967).

Analogy to Modern Physics

The idea says that everything is always changing and never stays the same. Tiny parts of things come and go very fast instead of lasting forever. This is like what scientists say in quantum

field theory, where particles are not solid things but short moves in invisible fields (King, 2009). Long ago, Buddhist thinkers already understood that everything changes all the time, which shows how wise their ideas were about the moving and living world.

3. Dependent Origination (Pratītyasamutpāda) and the Scientific Method (Pramāṇa)

The idea of Dependent Origination means that everything happens because of many causes and conditions. Nothing exists on its own; everything is connected and depends on something else. This is how Buddhism explains why and how things happen.

Kinetics as a Causal Map

In chemical kinetics, this idea is very important for understanding the rate law. The speed of a reaction depends on how much of each substance is present and how they react with each other.

$Rate = k \cdot [Reactant\ A]^m \cdot [Reactant\ B]^n$

This equation shows how things happen only when the right conditions are there. The speed of the reaction depends on how much of A and B we have, their power in the reaction (m and n), and the temperature that changes the rate constant k. If any of these are missing, the reaction cannot happen. It's like the idea of pratītyasamutpāda—everything happens because of causes and conditions.

Epistemological Rigor of Pramāṇa

A great thinker named Dignāga started a school of thought, and another thinker named Dharmakīrti made it even better. They taught people how to check if knowledge is true. This method is called Pramāṇavāda, which means the theory of right understanding. Dharmakīrti's famous book, Pramāṇavārttika, says there are only two good ways to know things: by seeing them (Perception) and by thinking carefully about them (Inference) (Dunne, 2004).

IKT's Scientific Methodology

- ***Pratyakṣa (Perception)***: Pratyaksha means seeing or knowing something directly. It is like when scientists look carefully to collect data and learn from what they can really see.
- ***Anumāṇa (Inference)***: Anumana means using reasoning to think about what we saw and find new ideas. It is like when scientists make conclusions from experiments (Hayes, 1991).

This way of knowing does not depend on blind belief or stories but on careful thinking and real proof, just like modern science.

4. Activation Energy and Mindful Effort: The Catalyst for Transformation

Energy helps things happen and change. If you want to mix chemicals or grow in your mind, you always need to try or work hard to get past what's stopping you.

The Energy Barrier

In chemical reactions, activation energy (E_a) is the smallest amount of energy molecules need to start reacting and make new products (Levine, 2009). If the activation energy is high, the reaction happens more slowly. Without enough energy, like heat, the reaction can be almost too slow to notice.

Mindful Effort as E_a Input

In Buddhism, people try to grow by becoming wiser and kinder. To do this, they work to overcome things like not understanding, being too attached, and old bad habits. This takes steady effort, called Right Effort in the Noble Eightfold Path (Bodhi, 2000). Mindfulness means paying attention carefully without judging, and it helps the mind move from being upset to being calm and free.

Meditation as a Catalyst

Meditation and mindfulness are like catalysts. A catalyst helps a reaction go faster by giving it an easier way to happen without using itself up (Anastas & Warner, 1998). In the same way, when we practice mindfulness, it helps our mind change more easily, like getting calmer or letting go of anger.

Empirical Validation in Education

This IKT idea is now used in modern education through something called Mindfulness-Based Interventions (MBIs). Studies show that when students practice mindfulness in school, they can focus better and think more clearly. It also helps them learn and get along with others in a positive way (Schonert-Reichl & Roeser, 2016).

5. Equilibrium and the Middle Path: A Sustainable Balance

The natural end-state of constant change and transformation is often a condition of dynamic balance.

Dynamic Equilibrium in Chemistry

Chemical systems often reach a state called dynamic equilibrium. At this stage, the system appears stable overall. However, the forward and reverse reactions continue to occur. They happen at equal and opposite rates, so there is no net change in the system. However, the process has not stopped. Matter is in continuous motion, maintaining a balanced flow.

The Middle Path as Psychological Equilibrium

This state is conceptually similar to the Buddhist Middle Path (Madhyama-pratipadā). It represents the principle of balance between two harmful extremes: rigid asceticism and excessive indulgence. The Middle Path is not about being passive. It is a continuous and mindful adjustment. This adjustment helps maintain harmony and stability within and around us, even in a changing world. It is a state of psychological dynamic equilibrium.

Implications for Sustainable Development

In the context of IKT, this convergence holds social importance. It also supports the principles of Sustainable Science and Green Chemistry. A system in dynamic equilibrium shows an optimal and efficient balance. It uses resources without waste. This kind of balance is a natural goal for any human system. Such systems aim to live in harmony with their environment (Anastas & Warner, 1998). The IKT talks about the "Middle Path." What does that mean? It means we should use our resources wisely—not too much, not too little.

6. Conclusion

A comparison of chemical kinetics and Buddhist philosophy shows that both methodically explain changes through the principles of cause and impermanence. Their ideas show a tight conceptual connection. This connection extends from the momentary atomism of Buddhist ontology to the kinetic parameters of chemical reactions. It clearly demonstrates that the Indian Knowledge Tradition, through Buddhist thought, has a profound and systematic foundation. This foundation aligns closely with the rational methods of modern science.

The scientific importance of the IKT is not limited to its historical contributions. It also lies in its ability to provide a deep and thoughtful way of understanding knowledge. This framework is ethical and reflective. It supports and enhances the empirical scientific method. Integrating IKT concepts into chemistry and science education can make learning more meaningful. Concepts like Pratyakṣa (direct observation) and Anumāṇa (inference) can help students in empirical inquiry. The idea of Mindful Effort can guide them to overcome intellectual barriers. Together, these approaches can help create scientists who are not only technically skilled but also philosophically grounded. They will understand the principles of interdependence, causality, and mindful, sustained inquiry.

References

Anastas, P. T., & Warner, J. C. (1998). Green chemistry: Theory and practice. Oxford University Press.

Atkins, P. W., & de Paula, J. (2022). Physical chemistry (12th ed.). Oxford University Press.

Bodhi, Bhikkhu. (2000). The noble eightfold path: Way to the end of suffering. Buddhist Publication Society.

Dunne, J. D. (2004). Foundations of Dharmakīrti's philosophy. Wisdom Publications.

Gyatso, T. (Dalai Lama XIV). (2005). The universe in a single atom: The convergence of science and spirituality. Morgan Road Books.

Hayes, R. P., & Gillon, B. S. (1991). Introduction to Dharmakīrti's theory of inference as presented in Pramāṇavārttika Svopajñavṛtti 1–10. Journal of Indian Philosophy, 19(1), 1–73.

Karunadasa, Y. (1967). Buddhist analysis of matter. Department of Cultural Affairs.

King, R. (2009). Buddhism and science: Breaking new ground. Columbia University Press.

Levine, I. N. (2009). Physical chemistry (6th ed.). McGraw-Hill Education.

Rahula, W. (1974). What the Buddha taught. Grove Press.

Schonert-Reichl, K. A., & Roeser, R. W. (2016). Mindfulness in education: Introduction and overview of the handbook. In K. A. Schonert-Reichl & R. W. Roeser (Eds.), Handbook of mindfulness in education: Integrating theory and research into practice (pp. 3–16). Springer.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 13-18

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 13-18

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरावलोकन: वैज्ञानिक विरासत और इसकी समकालीन प्रासंगिकता

Revisiting Indian Knowledge System: Scientific Heritage and Its Contemporary Relevance

बिन्देश कुमार शुक्ला / Bindesh Kumar Shukla

भौतिकी विभाग, शासकीय एस.जी.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंज बासोदा, भारत

Department of Physics, Govt SGS PG College, Ganj Basoda, India

सारांश (Abstract)

भारत की वैज्ञानिक विरासत मानव सभ्यता की सबसे समृद्ध विरासतों में से एक है, जिसमें गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, रसायन विज्ञान, धातुकर्म और पर्यावरण प्रबंधन में विशाल योगदान शामिल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक समग्र, सतत और अनुभवजन्य विश्वदृष्टि को दर्शाती है जो विज्ञान को दर्शन, नैतिकता और मानव कल्याण के साथ एकीकृत करती है। वर्तमान युग में, जो तीव्र तकनीकी परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियों से चिह्नित है, IKS संतुलन, स्थिरता और सामाजिक सद्भाव में निहित एक वैकल्पिक प्रतिमान प्रदान करता है।

India's scientific legacy is one of the richest in human civilization, encompassing vast contributions in mathematics, astronomy, medicine, chemistry, metallurgy, and environmental management. The Indian Knowledge System (IKS) reflects a holistic, sustainable, and empirical worldview that integrates science with philosophy, ethics, and human well-being. In the present era, marked by rapid technological change and environmental challenges, IKS offers an alternative paradigm rooted in balance, sustainability, and social harmony. This article explores the evolution, scientific essence, and modern-day relevance of IKS. It further discusses ongoing initiatives for integrating traditional Indian wisdom with contemporary science and education while addressing the challenges and possibilities for its global application.

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान प्रणाली, वैज्ञानिक विरासत, आयुर्वेद, प्राचीन भारतीय विज्ञान, सतत विकास

Keywords: Indian Knowledge System, Scientific Heritage, Ayurveda, Ancient Indian Science, Sustainable Development

1. INTRODUCTION

The Indian Knowledge System represents a unique synthesis of scientific inquiry, philosophical reflection, and spiritual understanding. From the Vedic age to the classical and medieval periods, Indian scholars developed systematic methods of reasoning and experimentation in natural

sciences, mathematics, medicine, and technology. Their approach was not limited to observation alone but emphasized interconnections between physical, biological, and metaphysical realms.

In recent decades, the global scientific community has increasingly recognized the value of traditional knowledge systems for their sustainable and human-centered approaches. The Government of India, through the Ministry of Education, has initiated efforts to promote the study of IKS in universities, fostering a renewed appreciation of the nation's scientific heritage and its relevance to present-day challenges.

2. HISTORICAL OVERVIEW OF THE INDIAN SCIENTIFIC TRADITION

India's scientific tradition has been deeply rooted in observation, experimentation, and rational analysis. The Rigveda and Upanishads reveal early concepts of cosmology and atomic theory. Kanada's Vaisheshika Sutra proposed the atomic nature of matter long before similar theories emerged in the West.

Mathematics and Astronomy

Indian mathematicians such as Aryabhata, Brahmagupta, and Bhaskaracharya made groundbreaking contributions, including the concept of zero, decimal notation, algebraic methods, and trigonometric principles. Aryabhata's Aryabhatiya described the Earth's rotation, while Bhaskara II introduced advanced calculus-like methods centuries before Newton.

Medicine and Life Sciences

The classical Ayurvedic texts, Charaka Samhita and Sushruta Samhita, laid the foundation of preventive medicine, surgery, and pharmacology. Sushruta, often regarded as the father of surgery, described detailed surgical instruments and procedures, including plastic surgery and cataract removal.

Metallurgy and Engineering

The iron pillar of Delhi and ancient zinc extraction at Zawar demonstrate advanced metallurgical knowledge and chemical engineering principles.

Environmental Management

Ancient Indian texts emphasize the coexistence of humans with nature through principles like Dharma and Rita, promoting ecological balance and sustainability. These examples illustrate that Indian science was not only empirical but also ethical, integrating human welfare and environmental stewardship within its methodology.

3. SCIENTIFIC PRINCIPLES WITHIN THE INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

IKS is distinguished by its holistic and interdisciplinary approach. Unlike compartmentalized modern disciplines, Indian science viewed knowledge as an interconnected whole.

Empirical Observation

Ancient scientists based their conclusions on repeated observation and experimentation (Pratyaksha and Anumana).

Logic and Reasoning

Schools such as Nyaya and Vaisheshika formalized logic and analytical reasoning, forming the foundation of the scientific method.

Integration of Science and Spirituality

Knowledge (Vidya) was considered complete only when it contributed to material as well as spiritual well-being.

Sustainability

Indian practices emphasized harmony with nature, visible in agriculture, architecture (Vastu Shastra), and healthcare (Ayurveda and Yoga). This philosophical framework ensured that scientific progress aligned with ethical responsibility and ecological sustainability.

4. CONTEMPORARY RELEVANCE OF IKS IN MODERN SCIENCE

In the contemporary era, characterized by climate crises, health challenges, and technological over-dependence, the Indian Knowledge System offers sustainable and ethical solutions.

Healthcare and Medicine

Integrative medicine combining Ayurveda, Yoga, and modern biomedicine has proven beneficial for chronic diseases such as diabetes, hypertension, and arthritis. The AYUSH ministry promotes scientific validation and standardization of traditional therapies.

Environmental Sustainability

Ancient water-harvesting structures like stepwells, tanks, and Johads are being revived for sustainable water management in rural India.

Agricultural Innovations

Traditional organic and Vedic farming methods encourage biodiversity, soil fertility, and natural pest control, supporting climate-resilient agriculture.

Architecture and Design

The principles of Vastu Shastra are being revisited for eco-friendly urban planning and energy-efficient construction.

Technology and Innovation

Concepts from Indian metallurgy, chemistry, and astronomy inspire new directions in materials science and renewable energy research. The fusion of traditional insights with cutting-edge technology is opening new pathways for innovation rooted in sustainability and human welfare.

5. EDUCATION AND POLICY INTEGRATION

The National Education Policy (NEP) 2020 recognizes IKS as an essential component of holistic education. It encourages multidisciplinary learning and inclusion of traditional scientific knowledge in curricula at all levels.

The Indian Knowledge System Division under the Ministry of Education supports research, documentation, and dissemination of traditional science and technology. Premier institutions like IITs and IISc are conducting workshops, certificate courses, and interdisciplinary research to bridge the gap between classical wisdom and modern science.

These initiatives not only revive lost knowledge but also inspire new generations to develop context-specific and sustainable solutions.

6. CHALLENGES AND THE PATH AHEAD

Despite its immense potential, mainstreaming IKS faces challenges:

a. Fragmented documentation of manuscripts and oral traditions.
b. Lack of modern scientific validation for many traditional practices.
c. Limited institutional funding and trained researchers.
d. Skepticism within modern scientific communities.

To overcome these barriers, a structured approach combining digital preservation, interdisciplinary research, community participation, and policy support is essential. Collaborative projects involving scientists, historians, and traditional practitioners can ensure scientific validation while preserving cultural authenticity.

7. CONCLUSION

The Indian Knowledge System embodies a timeless scientific spirit rooted in observation, logic, and sustainability. Its principles—holism, ethics, and ecological harmony—are not relics of the past but essential for building a sustainable future. Integrating IKS with modern science can lead to a new model of knowledge creation, one that balances material progress with environmental responsibility and human well-being. By revisiting India's scientific heritage with modern tools and open minds, we can rediscover a universal science that serves humanity in both spirit and practice.

REFERENCES

Joseph, G. G. (2000). *The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics*. Princeton University Press.

Plofker, K. (2009). *Mathematics in India*. Princeton University Press.

Pingree, D. (1981). *Jyotiḥśāstra: Astral and Mathematical Literature*. Otto Harrassowitz.

Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi: Government of India.

Patwardhan, B., Warude, D., Pushpangadan, P., & Bhatt, N. (2005). Ayurveda and traditional Chinese medicine: A comparative overview. *Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine*, 2(4), 465-473.

Singh, R. H. (2010). Exploring issues in the development of Ayurvedic research methodology. *Journal of Ayurveda and Integrative Medicine*, 1(2), 91-95.

Kak, S. C. (2000). *The Architecture of Knowledge: Quantum Mechanics, Neuroscience, Computers and Consciousness*. CSC Publications.

Tillu, G., Chaturvedi, S., Chopra, A., & Patwardhan, B. (2013). Public health approach of Ayurveda and Yoga for COVID-19 prophylaxis. *The Journal of Alternative and Complementary Medicine*, 26(5), 360-364.

Gupta, R. C. (2000). History of mathematics in India. In H. Selin (Ed.), *Mathematics Across Cultures: The History of Non-Western Mathematics* (pp. 167-176). Springer.

UNESCO. (2019). *Indigenous Knowledge and Education Policies: A Global Perspective*. Paris: UNESCO Publishing.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 19-23

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 19-23

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में गणित एवं मनुष्य की जीवन-शैली में सम्बन्ध

Relationship between Mathematics and Human Lifestyle in Indian Knowledge Tradition

वसीम खान / Vasim Khan

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), गणित विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Mathematics, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित केवल एक शैक्षणिक विषय नहीं बल्कि जीवन का अभिन्न अंग रहा है। प्राचीन भारत में गणित का उपयोग समय प्रबंधन, वास्तु शास्त्र, संगीत और नृत्य की लय, व्यापार और वाणिज्य, तथा दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में किया जाता था। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और मनुष्य की जीवन-शैली के बीच गहन संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

In the Indian knowledge tradition, mathematics was not just an academic subject but an integral part of life. In ancient India, mathematics was used in time management, Vastu Shastra, rhythm in music and dance, trade and commerce, and various aspects of daily life. This research paper presents an analysis of the deep relationship between mathematics and human lifestyle in the Indian knowledge tradition.

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, जीवन-शैली , वास्तुशास्त्र, समय प्रबंधन, गणित, संगीत

Keywords: Indian Mathematics, Lifestyle, Vastu Shastra, Time Management, Vedic Mathematics, Music

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध परंपराओं में से एक है। इसमें वेद, उपनिषद, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तु, संगीत और गणित जैसे अनेक विषयों का गहन समावेश है। भारतीय संस्कृति में गणित को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जोड़कर देखा गया है। प्राचीन ऋषियों ने गणित के सिद्धांतों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखा बल्कि उन्हें दैनिक जीवन में व्यावहारिक रूप से लागू किया। वैदिक गणित, ज्योतिष, वास्तु शास्त्र और संगीत में गणितीय सिद्धांतों का प्रयोग इसका प्रमाण है। भारतीय दृष्टि में गणित केवल अंकों और गणनाओं का विषय नहीं रहा, बल्कि यह मनुष्य की जीवन-शैली, चिंतन, अनुशासन और व्यवहार का अभिन्न अंग रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित का स्थान

भारत में गणित का विकास अत्यंत प्राचीन काल से हुआ है। शून्य (0) की खोज, दशमलव पद्धति, बीजगणित, त्रिकोणमिति और ज्यामिति जैसे महत्वपूर्ण योगदान भारतीय गणितज्ञों द्वारा दिए गए।

प्रमुख भारतीय गणितज्ञ

आर्यभट्ट - π (पाई) का मान, त्रिकोणमिति

भास्कराचार्य - बीजगणित और खगोल गणित

ब्रह्मगुप्त - शून्य और ऋणात्मक संख्याएँ

इन सभी का उद्देश्य केवल गणना करना नहीं था, बल्कि प्रकृति, समय और जीवन को समझना था।

जीवन-शैली में गणित के अनुप्रयोग

भारतीय जीवन-शैली में गणित का प्रयोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में दिखाई देता है–

1. समय प्रबंधन : तिथि, वार, नक्षत्र, योग आदि सभी गणितीय गणनाओं पर आधारित हैं। दिनचर्या और पर्व-त्योहार समय की गणना से ही निर्धारित होते हैं। प्राचीन भारत में घड़ी, पल, विपल जैसी समय इकाइयों का प्रयोग किया जाता था। मुहूर्त और पंचांग गणितीय गणनाओं पर आधारित हैं।

2. वास्तु एवं स्थापत्य : मंदिरों, भवनों और नगरों का निर्माण ज्यामितीय सिद्धांतों पर आधारित है। भवन निर्माण में ज्यामितीय अनुपात और दिशाओं का गणितीय समायोजन किया जाता था। खजुराहो, कोणार्क और ताजमहल इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

3. संगीत और नृत्य :ताल, लय और मात्रा पूर्णतः गणितीय संरचना पर आधारित होती हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में गणित का विशेष योगदान है। सात स्वरों की आवृत्तियां गणितीय अनुपात में हैं।

4. व्यापार और अर्थव्यवस्था :मापन, तौल, लाभ-हानि, ब्याज आदि में गणित का प्रयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है।

5. कृषि: भूमि मापन, फसल चक्र और सिंचाई प्रणाली में गणितीय गणनाओं का प्रयोग।

गणित और मानसिक अनुशासन

भारतीय परंपरा में गणित को बुद्धि, तर्क और एकाग्रता के विकास का साधन माना गया है। गणितीय अभ्यास से– (i) तार्किक सोच का विकास होता है, (ii) निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, (iii) समस्या-समाधान कौशल सुदृढ़ होता है, (iv) योग और ध्यान की भांति गणित भी मन को अनुशासित करता है।

गणित और आध्यात्मिक दृष्टिकोण

भारतीय दर्शन में गणित और आध्यात्मिकता का गहरा संबंध है। "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" जैसे विचार संख्या और एकता के भाव को प्रकट करते हैं। ब्रह्मांड की संरचना, ग्रह-नक्षत्रों की गति और जीवन का चक्र–सब गणितीय संतुलन पर आधारित हैं।

आधुनिक जीवन-शैली में भारतीय गणित

आज की डिजिटल दुनिया–कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस–सभी गणित पर आधारित हैं। इस प्रकार प्राचीन भारतीय गणित आधुनिक जीवन-शैली की आधारशिला बन चुका है।

वैदिक गणित की विशेषताएं

वैदिक गणित में 16 सूत्र और 13 उपसूत्र हैं जो जटिल गणनाओं को सरल बनाते हैं। एकाधिकेन पूर्वेण, निखिलम नवतश्चरमं दशतः जैसे सूत्र गुणा, भाग और वर्गमूल की गणना को अत्यंत सरल बनाते हैं। यह प्रणाली मानसिक गणित को प्रोत्साहित करती है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और जीवन-शैली का अटूट संबंध रहा है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने गणित को केवल अमूर्त विषय न मानकर जीवन के प्रत्येक पक्ष में इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग को महत्व दिया। मनुष्य की जीवन-शैली, सोच, संस्कृति और विकास में गणित का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज भी वैदिक गणित और इसके सिद्धांत शिक्षा और दैनिक जीवन में प्रासंगिक हैं।

संदर्भ (References)

Tirthaji, S. B. K. (1965). *Vedic Mathematics*. Motilal Banarsidass.
Datta, B., & Singh, A. N. (2001). *History of Hindu Mathematics*.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 24-26

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 24-26

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

खण्ड II

पर्यावरण, दर्शन एवं आध्यात्म

Environment, Philosophy & Spirituality

भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरण संरक्षण, दर्शन और आध्यात्म का अद्‌वितीय समन्वय रहा है। वेदों में 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' की उद्‌घोषणा से लेकर उपनिषदों के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तक, प्रकृति और मानव के सह-अस्तित्व पर बल दिया गया है। पंचमहाभूतों का सिद्‌धांत, धर्म की अवधारणा, और आत्मज्ञान की खोज भारतीय दर्शन के मूल स्तंभ हैं। यह खण्ड पर्यावरणीय चेतना, दार्शनिक चिंतन और आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित शोध पत्रों को समाहित करता है।

The Indian Knowledge Tradition presents a unique synthesis of environmental conservation, philosophy, and spirituality. From the Vedic proclamation 'Mata Bhumiḥ Putro'ham Prithivyaḥ' (Earth is my mother, I am her son) to the Upanishadic vision of 'Vasudhaiva Kutumbakam' (The world is one family), emphasis has been placed on the coexistence of nature and humanity. The theory of Panchamahabhutas (five elements), the concept of Dharma, and the pursuit of self-knowledge form the foundational pillars of Indian philosophy. This section encompasses research papers focused on environmental consciousness, philosophical contemplation, and spiritual development.

भारतीय ज्ञान परम्परा और पर्यावरण

Indian Knowledge Tradition and Environment

शीला मेवाड़ा / Sheela Mewada

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor, Department of History, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परम्परा पंचमहाभूतों पर आधारित एक समन्वित विश्वदृष्टि प्रस्तुत करती है, जिसमें मानव को प्रकृति का अभिन्न अंश माना गया है। ऋग्वैदिक सूक्तों से लेकर उपनिषदों, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र और लोक परम्पराओं तक भारतीय चिन्तन निरन्तर पर्यावरण संरक्षण और संतुलित जीवन शैली का आग्रह करता है। यह शोध पत्र भारतीय दार्शनिक आधारों और आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में इस परम्परा की उपयोगिता का विश्लेषण करता है। शोध से स्पष्ट है कि प्रकृति को देवस्वरूप मानने से विकसित होने वाला कर्तव्य-बोध आधुनिक पर्यावरण शिक्षा के लिए प्रेरक है।

The Indian knowledge tradition presents an integrated worldview based on the Panchamahabhutas, where humans are considered an integral part of nature. From Rigvedic hymns to the Upanishads, Ayurveda, and folk traditions, Indian thought consistently emphasizes environmental protection and a balanced lifestyle. This research paper analyzes the utility of the Indian knowledge tradition in the context of Indian philosophical foundations and modern environmental crises. The research clarifies that viewing nature as divine fosters a sense of duty toward the environment, which serves as an inspiration for modern environmental education.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा, पर्यावरण संरक्षण, पंचमहाभूत, सतत विकास, जैव विविधता

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Environmental Protection, Panchamahabhuta, Sustainable Development, Biodiversity

1. प्रस्तावना (Introduction)

वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी और प्रदूषण जैसे पर्यावरणीय संकट मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए चुनौती बन चुके हैं। ऐसे समय में भारत की प्राचीन ज्ञान परम्परा "पर्यावरण के साथ सह-अस्तित्व" का एक वैकल्पिक और टिकाऊ समाधान प्रस्तुत करती है। भारतीय परम्परा में प्रकृति केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, धर्म और संस्कृति का आधार है। अथर्ववेद का "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (भूमि मेरी माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ) का उद्घोष इस दृष्टि का सार है।

2. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

- भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रकृति और पर्यावरण की अवधारणा का विश्लेषण करना।
- वेद, उपनिषद, पुराण, आयुर्वेद और लोक परम्पराओं में निहित पर्यावरणीय सिद्धान्तों को समझना।
- आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में भारतीय परम्परा की प्रासंगिकता निर्धारित करना।
- सतत विकास के लिए पारंपरिक भारतीय ज्ञान के उपयोग की संभावनाओं को पहचानना।

3. शोध विधि (Research Methodology)

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है। इस अध्ययन के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के प्राचीन सिद्धांतों का वर्तमान संदर्भों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में वेद, उपनिषद, गीता, स्मृतियाँ, पुराण, आयुर्वेद ग्रन्थ और अर्थशास्त्र शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में शोध पत्र, पुस्तकें, सरकारी दस्तावेज और UGC आधारित सामग्री का उपयोग किया गया है।

3.1 डेटा संग्रहण के स्रोत (Sources of Data Collection)

शोध की प्रमाणिकता और गहराई सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

1. प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)

i. ये वे मूल ग्रंथ और साक्ष्य हैं जो सीधे प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा से संबद्ध हैं:

ii. वैदिक साहित्य: वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) एवं उपनिषद।

iii. दार्शनिक एवं नैतिक ग्रंथ: श्रीमद्भगवद्गीता, स्मृतियाँ (जैसे मनुस्मृति) एवं पुराण।

iv. शास्त्रीय ग्रंथ: आयुर्वेद ग्रंथ (चरक एवं सुश्रुत संहिता), कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

2. द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

i. प्राथमिक सिद्धांतों की व्याख्या और वर्तमान प्रासंगिकता को समझने के लिए सहायक स्रोतों का उपयोग किया गया है:

ii. अकादमिक सामग्री: प्रतिष्ठित शोध पत्र (Research Papers), विषय से संबंधित पुस्तकें और UGC आधारित संदर्भ सामग्री।

iii. आधिकारिक दस्तावेज: सरकारी प्रतिवेदन (Reports), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के दस्तावेज।

iv. समसामयिक डेटा: विभिन्न पर्यावरणीय रिपोर्ट और डिजिटल लाइब्रेरी के स्रोत।

- **ईशावास्योपनिषद:** प्रथम श्लोक **"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्"** स्पष्ट करता है कि इस चलायमान संसार में जो कुछ भी है, वह ईश्वर से व्याप्त है।
- **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:** अर्थात् त्याग पूर्वक भोग करो। यह संदेश आज के उपभोक्तावादी युग के लिए सबसे बड़ा समाधान है।

4.4 आयुर्वेद, योग और लोक परम्परा

आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ्य व्यक्ति और पर्यावरण के संतुलन पर निर्भर है। योग के यम और नियम संयमित जीवन और कम दोहन पर जोर देते हैं। लोक परम्पराओं में पीपल, बरगद, नीम और तुलसी जैसे वृक्षों की पूजा तथा गंगा, नर्मदा जैसी नदियों का पूजन संसाधनों के संरक्षण का माध्यम रहा है। आयुर्वेद: इसमें माना गया है कि व्यक्ति (पिण्ड) और ब्रह्मांड (ब्रह्माण्ड) एक ही तत्वों से बने हैं। स्वास्थ्य तभी संभव है जब मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच संतुलन हो। योग: अष्टांग योग के 'यम' (अहिंसा, अपरिग्रह) और 'नियम' (शौच, संतोष) मनुष्य को कम संसाधनों में सुखी रहना सिखाते हैं, जो सीधे तौर पर पर्यावरण पर दबाव कम करते हैं।

5. आधुनिक संकट और समाधान

आज के जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता क्षरण और जल संकट का समाधान भारतीय मॉडल में निहित है| वर्तमान वैश्विक संकटों (जलवायु परिवर्तन, जल संकट) का समाधान 'दोहन' के बजाय 'सह-अस्तित्व' में है।

- संतुलित उपभोग: 'अपरिग्रह' का पालन कर कचरा (Waste) कम करना।
- स्थानीय तकनीक: प्राचीन जल संरक्षण विधियाँ (जैसे कुएं, बावड़ियाँ, तालाब) जल संकट का स्थायी समाधान हैं।

6. भारतीय लोक परंपराओं में पर्यावरण-संरक्षण

लोक आस्था ने दर्शन को व्यवहार में बदला है:

- **वृक्ष पूजा:** पीपल (ऑक्सीजन का स्रोत), बरगद, नीम और तुलसी को पूज्य मानकर उनके संरक्षण को सुनिश्चित किया गया।
- **पवित्र वन (Sacred Groves):** भारत के कई हिस्सों में 'देवराय' या 'ओरण' के रूप में वनों को देवताओं के लिए आरक्षित रखा गया, जहाँ कटाई वर्जित थी।
- **पर्व एवं त्यौहार:** हरियाली अमावस्या, छठ पूजा (जल और सूर्य की उपासना) और वट सावित्री जैसे पर्व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता के उत्सव हैं।

7. सतत विकास के लिए भारतीय मॉडल

- **पंचमहाभूत मॉडल:** विकास की योजना बनाते समय पाँचों तत्वों की शुद्धता का ध्यान रखना।
- **ग्राम स्वावलम्बन:** गांधीजी का 'ग्राम स्वराज्य' मॉडल, जो स्थानीय संसाधनों के संरक्षण पर आधारित है।
- **अहिंसा आधारित जीवन शैली:** संसाधनों के प्रति हिंसक न होना, बल्कि उनके पुनर्चक्रण (Recycle) पर ध्यान देना।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान परम्परा पर्यावरण को केवल भौतिक सत्ता नहीं, बल्कि जीवनदायी और आध्यात्मिक इकाई के रूप में देखती है। इसमें निहित प्रकृति पूजन और कर्तव्य बोध के सिद्धांत आधुनिक पर्यावरणीय नीतियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। यदि इन सिद्धांतों को आधुनिक समाज अपनाता है, तो सतत विकास को एक सुदृढ़ आधार मिल सकता है।

संदर्भ (References)

Atharvaveda. (n.d.). Prithvi Sukta (Chapter 12).

Kalidasa. (n.d.). *Raghuvamsha & Kumar Sambhava*.

Kautilya. (n.d.). *Arthashastra*.

Rigveda. (n.d.). Mandala 1-10.

Upanishad. (n.d.). *Isha & Kena Upanishads*.

Vagbhata & Sushruta. (n.d.). *Charaka Samhita & Sushruta Samhita*.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 29-33

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 29-33

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति और मानव का सह-अस्तित्व

Nature-Human Coexistence in Indian Knowledge Tradition

प्रथम भनोत्रा / Pratham Bhanotra

सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, कन्नोद

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति और मानव के संबंध को सह-अस्तित्व के रूप में समझा गया है, न कि प्रभुत्व या दोहन के रूप में। प्राचीन भारतीय चिंतन में मानव स्वयं को प्रकृति से अलग नहीं मानता, बल्कि उसका अभिन्न अंग स्वीकार करता है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों और स्मृति ग्रंथों में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, वनस्पति तथा समस्त जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई है। प्रकृति को माता, देवता और जीवनदायिनी शक्ति मानकर उसके साथ संतुलित एवं संवेदनशील व्यवहार करने की शिक्षा दी गई है। वैदिक साहित्य में प्रकृति के विभिन्न तत्वों को पवित्र मानते हुए उनकी शुद्धता और संतुलन बनाए रखने पर बल दिया गया है। पृथ्वी को माता, आकाश को पिता और वायु को प्राणस्वरूप माना गया है। अथर्ववेद में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि स्वच्छ और संतुलित पर्यावरण में ही मानव सहित समस्त जीव सुरक्षित और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते हैं। जल, वन और भूमि के संरक्षण को धार्मिक और नैतिक कर्तव्य के रूप में स्थापित किया गया है, जिससे मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य बना रहे। भारतीय ज्ञान परंपरा यह भी सिखाती है कि प्रकृति से संसाधन ग्रहण करते समय संयम और उत्तरदायित्व आवश्यक है। प्रकृति का अंधाधुंध दोहन असंतुलन और विनाश को जन्म देता है, जबकि सह-अस्तित्व की भावना सतत जीवन और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। इस प्रकार भारतीय चिंतन में प्रकृति और मानव का सह-अस्तित्व न केवल पर्यावरण संरक्षण की आधारशिला है, बल्कि समग्र मानव कल्याण और सतत विकास की दिशा में मार्गदर्शक सिद्धांत भी है।

In the Indian Knowledge Tradition, the relationship between nature and humanity is understood as co-existence rather than dominance or exploitation. In ancient Indian thought, humans do not consider themselves separate from nature; instead, they accept themselves as an integral part of it. A deep sense of respect and conservation toward the earth, water, air, space, vegetation, and all living beings is explicitly expressed in the Vedas, Upanishads, Puranas, and Smriti texts. Nature is revered as a mother, a deity, and a life-giving force, and the teachings advocate for a balanced and sensitive interaction with it. Vedic literature emphasizes maintaining the purity and equilibrium of the various elements of nature, regarding them as sacred. The Earth is personified as the Mother, the Sky as the Father, and Air as the very form of life (Prana).

The Atharvaveda presents the idea that all living beings, including humans, can lead a safe and happy life only within a clean and balanced environment. The conservation of water, forests, and land has been established as a religious and moral duty to ensure harmony between humanity and the natural world. Furthermore, the Indian Knowledge Tradition teaches that restraint and responsibility are essential while extracting resources from nature. Indiscriminate exploitation of nature leads to imbalance and destruction, whereas the spirit of co-existence paves the way for sustainable life and prosperity. Thus, the co-existence of nature and humanity in Indian thought is not only the cornerstone of environmental protection but also a guiding principle for overall human welfare and sustainable development.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति और जीवन, वैदिक साहित्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, पंचमहाभूत, पृथ्वी माता, वायु शुद्धता, जल संरक्षण, भूमि संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन, पारिस्थितिकी, जैव-विविधता, वृक्ष संरक्षण।

Keywords: Nature-Human Coexistence, Environmental Conservation, Vedas, Sustainable Development, Panchtattva

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरण को केवल भौतिक संसाधनों के रूप में नहीं देखा गया है, बल्कि उसे जीवन का मूल आधार और चेतना से युक्त सत्ता माना गया है। भारत एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र है, जिसकी प्राकृतिक बनावट, जलवायु और जैव-विविधता अत्यंत व्यापक है। इसी भौगोलिक विस्तार के कारण भारत में पर्वत, पठार, नदियाँ, वन, मरुस्थल और समुद्र जैसे विविध प्राकृतिक स्वरूप विद्यमान हैं। इस विविधता ने भारतीय संस्कृति और जीवन-पद्धति को भी गहराई से प्रभावित किया है। यही कारण है कि भारत को प्रायः संपूर्ण विश्व का लघुरूप कहा गया है।

प्रकृति ने भारत को संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध बनाया है और यहाँ का प्राचीन समाज इन्हीं संसाधनों के साथ सामंजस्य स्थापित कर जीवन यापन करता रहा है। भारतीय चिंतन में जीवन और पर्यावरण के बीच अटूट संबंध स्वीकार किया गया है, जिसे वैदिक, उपनिषदिक, पौराणिक और स्मृति साहित्य में निरंतर अभिव्यक्त किया गया है।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण चेतना

ऋग्वेद में पृथ्वी सूक्त: ऋग्वेद में प्रकृति को मानवीय संबंधों के माध्यम से समझाया गया है। ऋग्वेद 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' - पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं। यह मंत्र मानव और प्रकृति के पवित्र संबंध को दर्शाता है।

"द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम्।"

इस मंत्र में आकाश को पिता, पृथ्वी को माता और वातावरण को जीवन का केंद्र बताया गया है। यह विचार दर्शाता है कि वैदिक समाज में प्रकृति को परिवार के समान आदरणीय स्थान प्राप्त था। पृथ्वी सूक्त में भी पृथ्वी से अन्न, समृद्धि और सुरक्षा की कामना की गई है। इस प्रकार पृथ्वी को केवल निवास स्थान नहीं, बल्कि पोषण करने वाली माता के रूप में स्वीकार किया गया है। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता के अत्यंत निकट प्रतीत होता है।

वायु के महत्व को रेखांकित करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है– **"नूतचन्नू वायोरमृतं वि दतयेत।"** यहाँ वायु को अमृत के समान माना गया है। इसका तात्पर्य यह है कि वायु जीवनदायिनी शक्ति है और इसे दूषित करना जीवन के विरुद्ध आचरण है। वैदिक ऋषि यह समझते थे कि वायु की शुद्धता बनाए रखना मानव स्वास्थ्य और प्रकृति के संतुलन के लिए अनिवार्य है। यह विचार आज के समय में वायु प्रदूषण की समस्या को देखते हुए अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

यजुर्वेद में जल संरक्षण

जल को जीवन का आधार माना गया है और इसके संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। यजुर्वेद में पर्यावरण की व्यापक अवधारणा प्रस्तुत की गई है– **"परितः आवृणोति तत्पर्यावरणम्।"** इस परिभाषा के अनुसार जो तत्व मानव को चारों ओर से घेरे रहते हैं और उसके जीवन को प्रभावित करते हैं, वही पर्यावरण कहलाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण केवल बाहरी प्राकृतिक वस्तुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह संपूर्ण जीवन परिवेश को समाहित करता है।

अथर्ववेद में वायु शुद्धि

वायु को प्राण का स्रोत मानते हुए इसकी शुद्धता बनाए रखने के उपाय बताए गए हैं। अथर्ववेद में पर्यावरणीय शुद्धता को सुखी जीवन की अनिवार्य शर्त माना गया है– **"सर्वो वैतत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः। यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परधिजीवनाय कम्॥"** इस मंत्र का भाव यह है कि जहाँ पर्यावरण स्वच्छ और संतुलित होता है, वहाँ मनुष्य, पशु और अन्य जीव बिना बाधा के जीवन व्यतीत करते हैं। यहाँ 'परिधि' शब्द पर्यावरण के लिए और 'ब्रह्म' शब्द पूर्ण शुद्धता के लिए प्रयुक्त हुआ है।

भूमि सूक्त में जल की शुद्धता

भूमि सूक्त में जल की शुद्धता की कामना करते हुए कहा गया है– **"शुद्धा व आपस्तन्वेक्षरन्तु।"** इसका आशय है कि जल सदैव शुद्ध रूप में शरीर और प्रकृति में प्रवाहित होता रहे। भारतीय परंपरा में जल को देवता के समान माना गया है और नदियों को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।

पृथ्वी के दोहन और संरक्षण के संतुलन पर बल देते हुए अथर्ववेद में कहा गया है– **"यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्॥"** इस मंत्र में यह स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि पृथ्वी से जो कुछ भी लिया जाए, उसकी क्षतिपूर्ति अवश्य की जाए। पृथ्वी के मर्मस्थलों और हृदय को क्षति न पहुँचाई जाए। इसका तात्पर्य यह है कि यदि मानव खनिज, कोयला, पेट्रोल या अन्य संसाधन पृथ्वी से निकालता है, तो उसे प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने की जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए।

जल प्रदूषण को रोकने के लिए मनुस्मृति में स्पष्ट निर्देश मिलता है– **"नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं समुत्सृजेत्।"** इसका आशय यह है कि जल में मल-मूत्र, थूक, रक्त या विषैले पदार्थों का विसर्जन नहीं किया जाना चाहिए।

वृक्षों और वनस्पतियों को भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान प्राप्त है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है– **"ओषधयो वै पशुपतिः।"** अर्थात् वृक्ष और औषधियाँ पशुपति शिव के स्वरूप हैं। यजुर्वेद के रुद्राध्याय में शिव को वन, वृक्ष, औषधि और कृषि का स्वामी बताया गया है। वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड जैसी हानिकारक गैस को अवशोषित कर ऑक्सीजन रूपी प्राणवायु प्रदान करते हैं। ऋग्वेद में वृक्षों के संरक्षण का स्पष्ट संदेश दिया गया है– **"मा काकं वीरम् उद्वृहो वनस्पतिम्।"** इसका भाव यह है कि वृक्षों को काटने का विचार भी नहीं करना चाहिए।

मत्स्यपुराण में वृक्षारोपण का महत्व

मत्स्यपुराण में वृक्षारोपण के महत्व को अत्यंत प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया गया है– **"दशकूप समा वापी दशवापी समो ह्रदः। दशह्रदः समः पुत्रो दशपुत्रः समो वृक्षः॥"** इस श्लोक से यह स्पष्ट होता है कि एक वृक्ष का महत्व दस पुत्रों के समान है।

भारतीय परंपरा में पशु-पक्षियों को भी देवी-देवताओं से जोड़कर उनके संरक्षण की भावना विकसित की गई है। गाय, बैल, सिंह, हाथी, गरुड़, सर्प और अन्य जीवों को धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से संरक्षित किया गया, जिससे जैव-विविधता बनी रही।

उपनिषदों में संयम और संतुलन का संदेश देते हुए कहा गया है– "ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।" इसका भाव यह है कि मनुष्य को प्रकृति से उतना ही ग्रहण करना चाहिए, जिससे उसकी पूर्णता को क्षति न पहुँचे। यह विचार सतत विकास की अवधारणा का मूल आधार है।

वृक्ष संरक्षण और जैव विविधता

भारतीय परंपरा में वृक्षों को देवताओं का निवास माना गया है। पीपल, बरगद, नीम और तुलसी जैसे वृक्षों की पूजा की जाती है। वृक्षारोपण को पुण्य कार्य और वृक्ष काटने को पाप माना गया है। मनुस्मृति में

वृक्ष काटने पर दंड का प्रावधान है। यह परंपरा आज के जैव विविधता संरक्षण के सिद्धांतों से पूर्णतः मेल खाती है।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता के क्षय जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, भारतीय ज्ञान परंपरा की पर्यावरण चेतना अत्यंत प्रासंगिक है। सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में यह प्राचीन ज्ञान मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति और मानव का संबंध परस्पर सम्मान और सह-अस्तित्व पर आधारित है। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरण संकट के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वित कर सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरण संरक्षण को केवल भौतिक आवश्यकता के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दायित्व के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीय ऋषियों ने मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता को गहराई से समझा और उसे धर्म एवं संस्कृति के माध्यम से समाज के आचरण में स्थापित किया। प्राचीन ग्रंथों में निहित यह विचार कि मनुष्य को प्रकृति से उतना ही ग्रहण करना चाहिए, जिससे उसके संतुलन को क्षति न पहुँचे, आज के भौतिकतावादी युग में अत्यंत प्रासंगिक है। पर्यावरण प्रदूषण और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन आधुनिक समाज के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं, जिनका समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा के समन्वयवादी दृष्टिकोण में निहित है। अतः प्रकृति के साथ सहयोग और संवेदनशीलता ही मानव कल्याण का स्थायी मार्ग है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को मात्र संसाधन नहीं बल्कि देवता का स्वरूप माना गया है। पृथ्वी को माता, नदियों को देवी, वृक्षों को पवित्र और पशु-पक्षियों को परिवार का सदस्य माना गया है। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरण विज्ञान की सतत विकास की अवधारणा से मेल खाता है।

संदर्भ (References)

United Nations. (2015). *Sustainable Development Goals*.

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद (हिंदी अनुवाद)।

गुप्ता, विनीता– भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा, पृ. 69

देवदत्त, रमेश– भारतीय जीवन दर्शन और पर्यावरणीय संतुलन, पृ. 91

पाण्डेय, ओमप्रकाश– वेदों में पर्यावरण दृष्टि, पृ. 22

मनुस्मृति।

यादव, वीरेन्द्र सिंह– भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, पृ. 37

शर्मा, सरोज (प्रो.)– भारतीय ज्ञान परंपरा : विविध आयाम, पृ. 76

शर्मा, हरिशंकर– भारतीय साहित्य में पर्यावरण चेतना, पृ. 20-60

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 34-39

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 34-39

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म और आध्यात्म

Religion and Spirituality in Indian Knowledge Tradition

डॉ. मेघा जैन /Dr. Megha Jain

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), वाणिज्य विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Commerce, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

किसी भी सभ्यता का उत्थान पतन उसकी आर्थिक स्थिति और राजनीतिक स्थिति नहीं होती है बल्कि ज्ञान परंपरा होती है। भारतीय संस्कृति ने हमेशा ही ज्ञान परंपरा को महत्व दिया है। चिंतन की प्राचीन परंपरा "उपनिषद" अर्थात गुरु के पास बैठकर अज्ञान की स्थितियों को नष्ट कर ज्ञान को निरंतर संवाद द्वारा पाने की परंपरा रही है। भारतीय ज्ञान का सबसे बड़ा आधार वेद है। ज्ञान का यह स्वरूप तर्क मूलक, मूल्य निष्ठ और आचरण सापेक्ष एवं जिज्ञासा मूलक है और सामाजिक उद्देश्यों से बंधा हुआ है। भारत की राष्ट्रीयता की बुनियाद धर्म एवं आध्यात्म से है। धर्म का उद्देश्य किसी समुदाय या संप्रदाय से नहीं है, धर्म का उद्देश्य सत्यता से है।

The rise and fall of any civilization is not determined by its economic or political status, but by its knowledge tradition. Indian culture has always given importance to knowledge tradition. The ancient tradition of contemplation "Upanishad" means the tradition of gaining knowledge through continuous dialogue while sitting with the Guru. The Vedas are the greatest foundation of Indian knowledge. This form of knowledge is logic-based, value-oriented, conduct-relative, inquiry-based, and bound by social objectives. The foundation of India's nationality is religion and spirituality. The purpose of religion is not about any community or sect; the purpose of religion is about truth.

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, धर्म, आध्यात्म, वेद, उपनिषद, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Religion, Spirituality, Vedas, Upanishads, Soul, Brahman, Liberation

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक है। इस परंपरा में धर्म और आध्यात्म का विशेष स्थान है। "सा विद्या या विमुक्तायै" अर्थात विद्या वह नहीं जो बांधती है, बल्कि वह

है जो मुक्त करती है। हमारा उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के धार्मिक सिद्धांत, धर्म एवं आध्यात्म की वर्तमान आवश्यकता एवं महत्व से लोगों को परिचित कराना है।

धर्म की अवधारणा

भारत की राष्ट्रीयता की बुनियाद धर्म एवं आध्यात्म से है। धर्म का उद्देश्य किसी समुदाय या संप्रदाय से नहीं है, धर्म का उद्देश्य सत्यता से है। मनुष्य के आंतरिक मन में सत्य की खोज, सत्य की प्रतिपूर्ति और सत्य की प्राप्ति के लिए वह कितना बड़ा मूल्य चुकाता है, यही धार्मिकता कहलाती है। यदि यह धार्मिकता राष्ट्र की जनता की आत्म परिभाषा और सर्वसम्मति का आधार हो तो वह राष्ट्र अत्यंत शुभकारी होगा।

आध्यात्म का स्वरूप

आध्यात्म का अर्थ है स्वयं और संसार दोनों को एक साथ जानना। संसार को समझने के लिए पहले स्वयं को जानना होगा। आध्यात्मिकता, ईश्वर, धर्म, जीव, प्रकृति, स्वर्ग-नरक, कर्म-अकर्म, पुरुषार्थ, नीति आदि के माध्यम से भारतीय संस्कृति मनुष्य को चरित्रवान, संयमी, कर्तव्यपरायण, सज्जन, विवेकवान, उदार और न्यायशील बनने की प्रेरणा देती है। आध्यात्म मनुष्य के चरित्र निर्माण का आधार होता है। भारतीय संस्कृति की आत्मा आध्यात्म पर टिकी होने के कारण शाश्वत है, अमर है।

आत्मा की अमरता

आध्यात्मिकता व्यक्ति के मन में यह विश्वास जगाती है कि इस स्थूल जगत में इसके अणु-अणु में एक पूर्ण अद्वितीय, अनादि और अनंत, नित्य, अविनाशी आत्मा है और वह मैं हूं। भगवद्गीता में कहा गया है:

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।"

अर्थात शस्त्र इसे काट नहीं सकते, अग्नि इसे जला नहीं सकती, जल इसे गला नहीं सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती।

धर्म और आध्यात्म की पूरकता

धर्म और आध्यात्म एक दूसरे के पूरक हैं। धर्म व्यक्तिगत जीवन के लिए नियम और कर्तव्य निर्धारित करता है जबकि आध्यात्म उस जीवन को अर्थ और उद्देश्य प्रदान करता है। अध्यात्म के माध्यम से ही व्यक्ति धर्म के सिद्धांतों को सही मायने में समझ पाता है और उनका पालन करता है। जब धर्म और

आध्यात्म के सिद्धांत व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अपनाए जाते हैं तो यह समाज में शांति, प्रेम और एकता को बढ़ाता है।

निष्कर्ष

भारतीय परंपरा में आध्यात्मिक विभूतियों का अवलोकन आध्यात्मिक परिदृश्य की हमारी समझ को गहरा करने के लिए रचा गया है, साथ ही सत्य, धार्मिकता और पारलौकिकता के सार्वभौमिक विषयों को भी रेखांकित करता है। विभूतियों के जीवन और शिक्षाओं का अन्वेषण करके हम मानव स्वभाव और अर्थ की खोज के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं जो सभी संस्कृतियों और युगों में प्रासंगिक है। आधुनिक ऋषि-मुनि इस विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं, प्राचीन ज्ञान को समकालीन प्रासंगिकता से जोड़ रहे हैं।

संदर्भ (References)

बाजपेयी, न. (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म और आध्यात्म। *International Journal of Research and Analytical Review*.

चक्रवर्ती, प. (2022). *भारतीय संस्कृति में विज्ञान के तत्व*। मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।

Radhakrishnan, S. (1994). *The principal Upanishads*. HarperCollins.

Sharma, C. (2000). *A critical survey of Indian philosophy*. Motilal Banarsidass.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 40-42

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 40-42

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा: कल, आज और कल

Indian Knowledge Tradition: Yesterday, Today and Tomorrow

प्रो. जीतेन्द्र गुप्ता / Prof. Jitendra Gupta
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
शासकीय स्नातक महाविद्यालय, करैरा, जिला शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत प्राचीन, विविध और समावेशी है, जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों, शास्त्रों और लोक साहित्य के माध्यम से विकसित हुई है। इसका मूल उद्देश्य जीवन के उद्देश्य को समझना, आत्मा की प्रकृति को जानना और समाज को नैतिक तथा व्यवहारिक स्तर पर उत्थान देना रहा है। वर्तमान युग में तेजी से बदलती वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु इसकी अवधारणाएँ जैसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्', नीतिशीलता, योग और सम्पूर्ण स्वास्थ्य महत्वपूर्ण हैं।

The Indian knowledge tradition is extremely ancient, diverse and inclusive, developed through Vedas, Upanishads, Puranas, Shastras and folk literature. Its fundamental purpose has been to understand life's purpose, know the soul's nature, and elevate society morally and practically. In the modern era, concepts like 'Vasudhaiva Kutumbakam', ethical conduct, Yoga and holistic health are important for addressing rapidly changing global challenges.

प्रमुख शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिकता, आयुर्वेद, योग, वसुधैव कुटुम्बकम्, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
Keywords: Indian Knowledge Tradition, Ethics, Ayurveda, Yoga, Vasudhaiva Kutumbakam, NEP 2020

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता ज्ञान और संस्कृति के गहन आधार पर विकसित हुई है। वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य और शास्त्र इस परंपरा के स्तंभ रहे हैं। आचार्य चाणक्य का राज्यशास्त्र, चरक और सुश्रुत का आयुर्वेद, पाणिनि का व्याकरण, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य का गणित एवं खगोल विज्ञान - ये सभी ज्ञान परंपरा की ऊँचाइयों को दर्शाते हैं। भारतीय परंपरा में ज्ञान को 'साधना' के रूप में देखा गया।

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास (कल)

भारतीय ज्ञान परंपरा का आरंभ वेदों से माना जाता है (लगभग 1500 ईसा पूर्व)। वेदों में दर्शन, कर्मकांड और सामाजिक व्यवहार के नियम समाहित हैं। उपनिषदों ने आत्मा, ब्रह्म और ज्ञान के दार्शनिक विचार विकसित किए। षड्दर्शन - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत ने विश्व दर्शन में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। जैन और बौद्ध धर्म की दार्शनिक परंपराओं ने भी इसे समृद्ध किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्तमान (आज)

आज की वैश्विक दुनिया में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः महत्व मिल रहा है। योग और आयुर्वेद विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रहे हैं। भारतीय दर्शन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल है। डिजिटल माध्यम से प्राचीन ग्रंथों का संरक्षण हो रहा है। परंपरागत ज्ञान को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी के साथ जोड़ने की पहलें नवाचार के नए अवसर खोल रही हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का भविष्य (कल)

भविष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक संदर्भ में विस्तार और प्रभाव की संभावना है। सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिकता जैसे क्षेत्रों में यह ज्ञान समाधान प्रस्तुत कर सकता है। शिक्षा प्रणालियों में इसके समावेश से राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना प्रबल होगी।

शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर बल दिया है। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं, संस्कृति, योग, आयुर्वेद और नैतिक मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। प्राचीन गुरुकुल पद्धति का मूल उद्देश्य चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण था। आज शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भावना का विकास करना है।

आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता आज के आधुनिक युग में और भी अधिक स्पष्ट हो गई है। योग और ध्यान जैसी विधाएँ मानसिक स्वास्थ्य और जीवनशैली संबंधी रोगों के उपचार में विश्व स्तर पर अपनाई जा रही हैं। आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों का पूरक बनकर उभर रही हैं। गणित और खगोल विज्ञान में प्राचीन भारतीय योगदान आज भी शोध और तकनीकी विकास की नींव को मजबूत करता है। वैश्वीकरण और भौतिकतावादी प्रवृत्तियों के बीच भारतीय दर्शन, धर्म और नैतिकता जीवन के लिए संतुलन और दिशा प्रदान करते हैं। यह परंपरा न केवल भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखती है, बल्कि विश्व को भी “वसुधैव कुटुंबकम्” जैसी सार्वभौमिक दृष्टि देती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा प्रणाली

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी भारतीय परंपरा की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं, संस्कृति, योग, आयुर्वेद और नैतिक मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। प्राचीन गुरुकुल पद्धति

का मूल उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं था, बल्कि चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण करना था। आज जब शिक्षा को मात्र रोजगार का साधन मान लिया गया है, तब भारतीय दृष्टिकोण हमें यह याद दिलाता है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भावना का विकास करना है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को विद्यार्थी जीवन में समावेश करने हेतु सुझाव-

पाठ्यक्रम स्तर पर-

1. वैदिक गणित का समावेश - कक्षा स्तर पर वैदिक गणित की तकनीकों को शामिल करना, जिससे गणनाओं में तीव्रता और सटीकता आए
2. संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य बनाना - प्राथमिक से उच्च स्तर तक संस्कृत को भाषा विषय के रूप में शामिल करना, जिससे प्राचीन ग्रंथों और भारतीय सभ्यता की समझ विकसित हो
3. भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधार पाठ्यक्रम - वेद अध्ययन, संस्कृत व्याकरण, भारतीय दर्शन, संस्कृत साहित्य जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देना
4. विषय-विशिष्ट भारतीय योगदान - रसायन शास्त्र में प्रफुल्लचंद्र राय, गणित में रामानुजन, प्रबंधन में चाणक्य और गीता के सिद्धांतों का समावेश
5. पंचकोश आधारित पाठ्यक्रम विकास - अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोश के सिद्धांत पर आधारित समग्र शिक्षा

शैक्षणिक गतिविधियों में

1. योग और ध्यान की अनिवार्य शिक्षा - दैनिक विद्यालय दिनचर्या में योगासन, प्राणायाम और ध्यान को शामिल करना
2. स्वाध्याय और श्रवण-मनन-निदिध्यासन विधि - उपनिषदों में वर्णित सीखने की प्रक्रिया को अपनाना
3. गुरु-शिष्य परंपरा का पुनर्स्थापन - व्यक्तिगत मार्गदर्शन, संवाद और अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देना
4. कौशल विकास कार्यक्रम - स्थानीय कला, कारीगरी, पारंपरिक कौशलों का प्रशिक्षण
5. नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण - संस्कारों, मूल्यों और नैतिकता की शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाना

अध्ययन सामग्री में-

1. प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन - उपनिषद, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों से नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा

2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भारतीय ज्ञान - आयुर्वेद, खगोल विज्ञान, वास्तुशास्त्र में भारतीय योगदान को वैज्ञानिक संदर्भ में पढ़ाना
3. क्षेत्रीय और राष्ट्रीय कहानियों का समावेश - रामायण, महाकाव्यों की कथाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना

भारतीय ज्ञान परंपरा को नागरिक जीवन में समावेश करने हेतु सुझाव-

1. योग और प्राणायाम का नियमित अभ्यास - मानसिक शांति, तनाव प्रबंधन और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए दैनिक योग
2. आयुर्वेदिक जीवनशैली अपनाना - ऋतुचर्या, दिनचर्या, संतुलित आहार और प्राकृतिक उपचार
3. सूर्योदय से पूर्व उठना - ब्रह्म मुहूर्त में जागना, सुबह गुनगुना पानी पीना और नियमित दिनचर्या
4. ध्यान और मानसिक साधना - ओंकार ध्यान, त्राटक, विपश्यना, मानस जप जैसी विधियों का अभ्यास
5. सात्विक भोजन और समय पर भोजन - दोपहर को मुख्य भोजन, रात को हल्का भोजन, ताजे और पौष्टिक आहार का सेवन

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत का गौरव नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक है। आधुनिक समय में जब विश्व अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है–चाहे वह पर्यावरण संकट हो, मानसिक तनाव हो या मूल्यहीनता की समस्या–भारतीय परंपरा इनके समाधान प्रस्तुत करती है। योग और आयुर्वेद स्वास्थ्य की स्थायी दिशा प्रदान करते हैं, भारतीय दर्शन जीवन की जटिलताओं में संतुलन लाता है, और साहित्य-संस्कृति मानवता को जोड़ने का कार्य करती है। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन और उसका समावेश आज भी उतना ही आवश्यक है जितना प्राचीन काल में था। यह न केवल भारतीय समाज को अपनी जड़ों से जोड़ता है, बल्कि संपूर्ण मानवता को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

संदर्भ (References)

Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020.*

NCERT. (2025). *भारतीय आधुनिक शिक्षा और ज्ञान परंपरा.*

UOU. (n.d.). भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा. Retrieved from uou.ac.in

भारतीय दर्शन - विकिपीडिया, https://hi.wikipedia.org

भारतीय ज्ञान परंपरा - ज्ञानविविधा, 2024

भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय -shivohamwisdom.com, 2024

भारतीय योग दर्शन - shisrrj.com, 2025

भारतीय आयुर्वेद एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, 2025

IGNITED Insights - भारतीय ज्ञान परंपरा, 2025

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 43-46

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 40-44

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

खण्ड III

समाज, राजनीति एवं सशक्तिकरण

Society, Polity & Empowerment

भारतीय ज्ञान परंपरा में सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक दर्शन और सशक्तिकरण की गहन अवधारणाएँ निहित हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' जैसे सिद्धांतों ने महिला सम्मान को प्रतिष्ठित किया। रामायण और महाभारत में शासन कला, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनकल्याण के आदर्श प्रस्तुत हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्य संचालन की व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है। यह खण्ड सामाजिक समरसता, राजनीतिक विचारधारा और विशेषकर महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित शोध पत्रों को प्रस्तुत करता है।

The Indian Knowledge Tradition encompasses profound concepts of social organization, political philosophy, and empowerment. Principles such as 'Yatra Naryastu Pujyante Ramante Tatra Devatah' (Where women are honored, there the gods rejoice) established the veneration of women. The Ramayana and Mahabharata present ideals of governance, democratic values, and public welfare. Kautilya's Arthashastra provides a comprehensive framework for statecraft. This section presents research papers focused on social harmony, political ideology, and particularly women's empowerment, drawing insights from ancient wisdom for contemporary challenges.

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण: एक अध्ययन

Indian Knowledge Tradition and Women Empowerment: A Study

डॉ. ललिता राय श्रीवास्तव / Dr. Lalita Rai Srivastava

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), समाजशास्त्र विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Sociology, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध परंपराओं में से एक है, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृतियाँ, पुराण तथा लोक-संस्कृति सम्मिलित हैं। इस परंपरा में नारी को केवल सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि शक्ति, ज्ञान और सृजन की आधारशिला माना गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी की स्थिति, उसके ऐतिहासिक स्वरूप तथा आधुनिक संदर्भ में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा का अध्ययन करना है।

The Indian knowledge tradition is one of the oldest and richest traditions in the world, encompassing Vedas, Upanishads, philosophy, Smritis, Puranas and folk culture. In this tradition, woman is considered not just a social unit, but the foundation of power, knowledge and creation. This research paper aims to study the status of women in Indian knowledge tradition, its historical form and the concept of women empowerment in modern context.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, महिला सशक्तिकरण, वैदिक काल, लैंगिक समानता, सामाजिक सुधार

Keywords: IKT, Women Empowerment, Vedic Period, Gender Equality, Social Reform

भूमिका

भारतीय ज्ञान परंपरा एक जीवंत और परिवर्तनशील परंपरा रही है। इसमें जीवन को समग्र दृष्टि से देखने की परिकल्पना की गई है, जहाँ भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सभी पक्षों का संतुलन आवश्यक माना गया है। भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त रही है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे विचार मानवता और समानता का संदेश देते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृतियाँ और लोक परंपराएँ हैं। यह परंपरा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी दिशा देती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे

भवन्तु सुखिनः' जैसे विचार मानवता और समानता का संदेश देते हैं, जिनमें नारी-पुरुष भेद का स्थान नहीं है।

वैदिक काल में नारी की स्थिति

वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा, धर्म और सामाजिक निर्णयों में समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाएँ दार्शनिक संवादों में भाग लेती थीं। यज्ञ, अध्ययन और उपासना में नारी की सहभागिता यह दर्शाती है कि उस काल में महिलाएँ बौद्धिक और सामाजिक रूप से सशक्त थीं। देवी-पूजा की परंपरा भी नारी के सम्मान को प्रकट करती है।

मध्यकालीन एवं औपनिवेशिक काल में परिवर्तन

मध्यकाल में सामाजिक असुरक्षा, रूढ़िवादिता और विदेशी आक्रमणों के कारण नारी की स्थिति में गिरावट आई। शिक्षा और सार्वजनिक जीवन से महिलाओं की सहभागिता सीमित होती चली गई। औपनिवेशिक काल में सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से पुनः महिला शिक्षा और अधिकारों की चर्चा प्रारंभ हुई।

आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए। शिक्षा, राजनीति, प्रशासन और आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण ने उनके राजनीतिक सशक्तिकरण को नई दिशा दी है। आज महिलाएँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी दक्षता सिद्ध कर रही हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर है, जिसमें वेद, उपनिषद और दर्शन मानव जीवन के सभी पहलुओं को समग्र दृष्टि से देखने पर बल देते हैं। यह परंपरा आध्यात्मिकता और व्यवहारिक विज्ञान के समन्वय द्वारा जीवन को बेहतर और संतुलित बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय दर्शन और समाज में नारी को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। वैदिक काल में महिलाओं को देवी का स्थान दिया जाता था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय महिलाएँ सामाजिक रूप से सशक्त थीं।

किंतु आधुनिक युग के प्रारंभ में सामाजिक रूढ़ियों और संकीर्ण मान्यताओं के कारण महिलाओं की भूमिका सीमित होती चली गई। वर्तमान समय में इस परंपरा को आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। भारत को प्रारंभ से ही 'विश्वगुरु' की संज्ञा दी जाती रही है, क्योंकि यहाँ की संस्कृति सदैव

परिवर्तनशील और समन्वयकारी रही है। अन्य संस्कृतियों के संपर्क में आने पर भारतीय संस्कृति ने उन्हें आत्मसात किया, जिसके परिणामस्वरूप परंपराओं में निरंतर परिवर्तन होता रहा।

इसी परिवर्तनशीलता के कारण आज भारत में भी महिलाओं की स्थिति विश्व के अन्य देशों की महिलाओं के समकक्ष होती जा रही है। वैश्विक स्तर पर महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा दिए जाने का प्रभाव भारतीय समाज और भारतीय महिलाओं पर भी पड़ा है। स्वतंत्रता के समय लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के लिए कोई आरक्षित सीटें नहीं थीं, परंतु समय के साथ समाज यह समझने लगा कि जैसे महिलाएँ परिवार का संचालन कुशलतापूर्वक करती हैं, वैसे ही वे राजनीति और प्रशासन में भी प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं। इसी सोच के परिणामस्वरूप राजनीति के विभिन्न स्तरों पर महिलाओं को आरक्षण प्रदान किया गया, जिसने उनके सशक्तिकरण को नई दिशा दी।

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा निहित है। आवश्यकता केवल इसे आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित करने की है। शिक्षा, नैतिक मूल्यों और समान अवसरों के माध्यम से नारी को सशक्त बनाकर ही समाज और राष्ट्र का समग्र विकास संभव है।

संदर्भ (References)

ऋग्वेद एवं उपनिषद।

राधाकृष्णन, एस. *भारतीय दर्शन।*

भारतीय संविधान।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट्स।

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 51-53

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 51-53

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तिकरण का योगदान

Contribution of Women Empowerment in Indian Knowledge Tradition

भास्कर परमार / Bhaskar Parmar

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Hindi, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी को केवल सामाजिक इकाई नहीं अपितु सृजन, ध्यान व शक्ति के मूल स्रोत के रूप में देखा गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक काल से लेकर उत्तर वैदिक, उपनिषद, बौद्ध-जैन तथा भक्ति परंपराओं से लेकर आधुनिक भारत तक महिला सशक्तिकरण तथा उसकी प्रतिष्ठा, अधिकार व सम्मान के विचार विविध रूपों में विकसित होते रहे हैं। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला की स्थिति, अधिकार, शिक्षा, आध्यात्मिकता व सामाजिक सहभागिता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Since ancient times, women have held an important place in Indian civilization and culture. In the Indian knowledge tradition, women have been viewed not merely as social units but as the fundamental source of creation, meditation, and power. From the Vedic period to post-Vedic, Upanishadic, Buddhist-Jain, and Bhakti traditions to modern India, concepts of women empowerment, dignity, rights, and respect have developed in various forms. This research paper presents an analysis of women's status, rights, education, spirituality, and social participation in the Indian knowledge tradition.

कुंजी शब्द (Keywords): महिला सशक्तिकरण, भारतीय ज्ञान परंपरा, महिला शिक्षा, वैदिक काल, नारी सम्मान

Keywords: Women Empowerment, Indian Knowledge Tradition, Women Education, Vedic Period, Women's Dignity

प्रस्तावना

महिला सशक्तीकरण पर बात करते हुए सबसे बुनियादी प्रश्न यह है कि वास्तव में महिला सशक्तीकरण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर आसान शब्दों में यह है कि जिन सामाजिक आर्थिक या राजनीतिक उपायों से महिलाएं शक्तिशाली बनती हैं, जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं, तथा समाज में उनके

वास्तविक अधिकार एवं स्वाभिमान को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तीकरण कहलाता है।

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का प्रतीक माना गया है। **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता** जैसी उक्ति नारी के सम्मान व सशक्तीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं के सम्मान, गरिमा व आत्मनिर्भरता प्रदान करने के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

वैदिक युग में नारी सशक्तीकरण

प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता व संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, वेदों में वर्णित समाज में स्त्री पुरुष में किसी भी प्रकार के विभेद का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

अनेक वैदिक मंत्रों में भावनात्मक दृष्टि से भी नारी का समान रूप से आदर भाव दृष्टिगोचर होता है। नारी को शिक्षा, धर्म, राजनीति व अन्य सामाजिक कार्यों में भाग लेने की पूर्ण स्वतंत्रता की चर्चा वेदों में की गई है। इसी प्रकार राजा के समान नारियों की भी राज्य कार्य में सहभागिता की बात वेदों में प्राप्त होती है। न्याय व्यवस्था में भी उसके समान रूप से भाग लेने का वर्णन है।

स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में नारी की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी। स्त्रियां शिक्षा, यज्ञ, दर्शन व संवाद में सक्रिय भागीदारी करती थीं। वेदों में घोषा, लोपामुद्रा, अपाला जैसी विदुषी स्त्रियों के मंत्र उपलब्ध हैं। गार्गी व मैत्रेयी जैसी दार्शनिक स्त्रियां ब्रह्म विद्या पर शास्त्रार्थ करती थीं। वैदिक समाज में महिलाएं बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से भी अत्यंत सशक्त थीं।

उपनिषद एवं दर्शन में नारी सशक्तीकरण

उपनिषदों में नारी को आत्मज्ञान की अधिकारी माना गया है, महिलाएं सक्षम थीं और बौद्धिक रूप से इतनी मजबूत और तेज थीं कि वह अपने पुरुष समकक्षों के साथ समान स्तर पर बहस व चर्चा में भाग लेती थीं। प्रसिद्ध ऋषि राजा जनक द्वारा बुलाई गई धार्मिक सभा में गार्गी व याज्ञवल्क्य के बीच हुई बहस व संवाद उपनिषद में अत्यंत प्रसिद्ध है।

इस समय स्त्री अपने पति के साथ यज्ञ व धार्मिक कार्यों में भाग ले सकती थी। गार्गी, मैत्रेयी व लोपामुद्रा जैसी दार्शनिक स्त्रियां उपनिषदों व भारतीय दर्शन में स्त्री सशक्तीकरण की सशक्त उदाहरण हैं।

स्मृति काल व सामाजिक परिवर्तन

स्मृति ग्रंथों में नारी के कर्तव्यों के साथ-साथ उसके अधिकार व सम्मान की बात भी कही गई है यद्यपि मध्यकाल की रूढ़ियों, पर्दाप्रथा, सती प्रथा, बालविवाह व विदेशी आक्रमणों के कारण महिलाओं की सामाजिक

स्थिति में गिरावट आई और वह घरेलू दायरे में कैद हो गई। यह कल नारी सशक्तीकरण में आंशिक ह्रास का प्रतिनिधित्व करता है।

आधुनिक भारतीय ज्ञान परंपरा व महिला सशक्तीकरण

आधुनिक भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तीकरण एक सतत प्रक्रिया है, सशक्त नारी ही सशक्त राष्ट्र की आधारशिला है। वर्तमान भारत में शिक्षा, संविधान व सामाजिक सुधार आंदोलनों ने महिला सशक्तीकरण को नया आयाम दिया है। वर्तमान में शिक्षा, रोजगार व कानूनी अधिकारों के साथ महिलाओं ने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, चिकित्सक व सेनाधिकारी जैसे कई क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण की नजीर कायम की है।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तीकरण कोई आधुनिक अवधारणा नहीं है बल्कि प्राचीन काल से ही निहित मूल्य है। प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ थी तथा महिलाओं को समाज के हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे समय के साथ यद्यपि महिलाओं के साथ सामाजिक प्रतिबंध बढ़े फिर भी नारी को परिवार व समाज की धुरी माना जाता रहा।

वर्तमान परिवेश में आवश्यक है कि महिलाओं के प्रति भारतीय प्राचीन मूल्यों को व्यावहारिक रूप से अपनाया जाए ताकि नारी सशक्त, आत्मनिर्भर और सम्मानित जीवन जी सके।

संदर्भ सूची (References)

वेद व उपनिषद (हिंदी अनुवाद)।

राधाकृष्णन, एस. भारतीय दर्शन।

भारतीय संस्कृति व नारी। विभिन्न शोध लेख।

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 54-56

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 54-56

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

रामायण में शासन कला में जनमत की भूमिका का अध्ययन

A Study of the Role of Public Opinion in the Art of Governance in Ramayana

भगवत सिंह पाल /Bhagvat Singh Pal

सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय महाविद्यालय, विदिशा, मध्य प्रदेश, भारत

Assistant Professor, Department of Political Science, Prime Minister College of Excellence, Government College, Vidisha, Madhya Pradesh, India

सारांश (Abstract)

राजनीतिक सिद्धांत में सामान्यतः लोकतंत्र की उत्पत्ति यूनानी और यूरोपीय विचारों से मानी जाती है, लेकिन यह अध्ययन रामायण में प्राचीन भारतीय लोकतांत्रिक लोकाचार और स्वदेशी, सहभागी शासन प्रणाली को उजागर करता है। वाल्मीकि की रामायण में जनमत, संगठित चर्चा और धर्म के माध्यम से राजसत्ता को नियंत्रित किया जाता है। राजसभा और मंत्रिपरिषद ने लोकतांत्रिक निर्णय-प्रक्रिया और सीमित अधिनायकवाद सुनिश्चित किया। राम के वनवास के उदाहरण से यह दिखाया जाता है कि शासक की वैधता के लिए जनसहमति और कल्याण आवश्यक था। यह अध्ययन आदर्श राजा को एक सेवक-नेता के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसका मुख्य दायित्व प्रजा के प्रति था, जो आधुनिक उत्तरदायी शासन का संकेत है। लेख "धार्मिक लोकतंत्र" का प्रस्ताव करता है, जो नैतिक आचरण, संस्थागत नियंत्रण और सामुदायिक भलाई पर आधारित है। भारत के सांस्कृतिक ग्रंथों में लोकतांत्रिक प्रवृत्तियाँ और नेतृत्व के गैर-पश्चिमी मॉडल को उजागर करके, यह शोध वैश्विक राजनीतिक आदर्शों को व्यापक बनाता है। प्राचीन भारत में सहयोगात्मक निर्णय-निर्माण, सहभागी सरकार और नागरिक दायित्व की एक मजबूत परंपरा थी, जैसा कि ऋग्वेद, महाभारत, और अन्य ग्रंथों में दिखाया गया है।

In political theory, democracy is generally considered to have originated from Greek and European ideas. However, this study highlights the ancient Indian democratic ethos and indigenous participatory governance system in the Ramayana. In Valmiki's Ramayana, royal authority is controlled through public opinion, organized discussion, and dharma. The royal court and council of ministers ensured democratic decision-making processes and limited autocracy. The example of Rama's exile demonstrates that public consent and welfare were essential for the legitimacy of the ruler. This study presents the ideal king as a servant-leader whose primary responsibility was towards the subjects, indicating modern accountable governance. The article proposes "dharmic democracy," which is based on ethical conduct, institutional controls, and community welfare. By highlighting democratic tendencies in India's cultural texts and non-Western models of leadership, this research broadens global political ideals. Ancient India had a strong tradition of collaborative decision-making, participatory government, and civic responsibility, as shown in the Rigveda, Mahabharata, and other texts.

मुख्य शब्द (Keywords): रामायण, शासन कला, जनमत, लोकतंत्र, धर्म, राजसभा, सेवक-नेता, धार्मिक लोकतंत्र, प्राचीन भारतीय शासन

Keywords: Ramayana, Art of Governance, Public Opinion, Democracy, Dharma, Royal Court, Servant-Leader, Dharmic Democracy, Ancient Indian Governance

प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक सिद्धांत में सामान्यतः लोकतंत्र की उत्पत्ति यूनानी नगर-राज्यों, विशेषकर एथेंस (5वीं शताब्दी ई.पू.) से मानी जाती है (Held, 2006)। पश्चिमी विद्वानों ने प्रायः मान लिया कि लोकतांत्रिक विचार और संस्थाएँ विशिष्ट रूप से यूरोपीय योगदान हैं। तथापि, यह दृष्टिकोण प्राचीन भारत की समृद्ध राजनीतिक परंपरा की उपेक्षा करता है, जहाँ सहभागी शासन, जनमत का सम्मान और संस्थागत नियंत्रण के प्रमाण वैदिक काल (1500-500 ई.पू.) से ही मिलते हैं (Thapar, 2002)।

रामायण, जो भारतीय संस्कृति के दो महाकाव्यों में से एक है, केवल एक धार्मिक या साहित्यिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह शासन कला, राजधर्म और राज्य-प्रबंधन का एक व्यापक ग्रंथ भी है। वाल्मीकि रामायण में लगभग 24,000 श्लोक हैं और यह सात कांडों में विभाजित है (Goldman, 1984)। इस महाकाव्य में वर्णित अयोध्या राज्य की शासन व्यवस्था, राजा दशरथ और राम का प्रशासन, मंत्रिपरिषद की भूमिका, तथा जनमत का सम्मान - ये सभी तत्व प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की गहराई को प्रदर्शित करते हैं।

महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत के लिए अपनी दृष्टि को एक शब्द में व्यक्त किया था - 'रामराज्य' (Gandhi, 1947)। गांधी के अनुसार, रामराज्य का अर्थ एक ऐसा आदर्श राज्य था जहाँ न्याय, समानता और सत्य की प्रधानता हो; जहाँ प्रत्येक नागरिक का सम्मान हो, चाहे उसकी जाति, धर्म या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो; और जहाँ समाज का सबसे कमजोर व्यक्ति भी न्याय प्राप्त कर सके। यह अध्ययन रामायण में वर्णित शासन प्रणाली में जनमत की भूमिका का गहन विश्लेषण करता है।

प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक संस्थाएँ (Democratic Institutions in Ancient India)

सभा और समिति

वैदिक काल में दो महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थाएँ थीं - सभा और समिति। ऋग्वेद में 'सभा' का उल्लेख आठ बार और 'समिति' का नौ बार मिलता है (Altekar, 1949)। अथर्ववेद (4.1.5) में कहा गया है कि सभा और समिति राजा के दो पुत्रियों के समान हैं, जो उसके शासन को संतुलित करती हैं। प्रो.

ए.एस. अल्टेकर के अनुसार, ऐतरेय ब्राह्मण में 'राजन्' के चुनाव का उल्लेख है, जो प्रारंभिक लोकतांत्रिक प्रक्रिया का संकेत है (Altekar, 1949)।

सभा वरिष्ठ नागरिकों और विद्वानों की परिषद थी, जो न्यायिक और प्रशासनिक कार्यों का संपादन करती थी। समिति जनसाधारण की सभा थी, जो राजा के चुनाव और महत्वपूर्ण राजकीय निर्णयों में भाग लेती थी (Majumdar, 2022)। विदाथ सबसे प्राचीन जनसभा थी, जिसका ऋग्वेद में 122 बार उल्लेख है। इन संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी भी होती थी - 'सभावती' शब्द का प्रयोग सभा में उपस्थित महिलाओं के लिए किया जाता था (Sharma, 2005)।

पौर-जनपद

रामायण में 'पौर-जनपद' शब्द का प्रयोग बार-बार मिलता है। विद्वान के.पी. जायसवाल के अनुसार, यह दो सदनों वाली व्यवस्था थी - 'पौर' राजधानी के नागरिकों का प्रतिनिधित्व करती थी और 'जनपद' ग्रामीण क्षेत्रों का (Jayaswal, 1943)। वाल्मीकि रामायण (2.67) में दशरथ की मृत्यु के बाद अमात्यों और मंत्रियों की सभा में अराजकता (अराजकत्व) के दुष्परिणामों पर चर्चा होती है और वसिष्ठ से राजकुमार को आमंत्रित करने का अनुरोध किया जाता है। यह प्रकरण दर्शाता है कि राजा का चयन और राज्य के महत्वपूर्ण निर्णय संस्थागत प्रक्रियाओं के माध्यम से होते थे।

रामायण में शासन व्यवस्था (Governance System in Ramayana)

राजसभा और मंत्रिपरिषद

वाल्मीकि रामायण में अयोध्या की शासन व्यवस्था का विस्तृत वर्णन मिलता है। राजा दशरथ की मंत्रिपरिषद में आठ मंत्री थे, जिनमें सुमंत्र प्रधान थे (Dharma, 1940)। अयोध्याकाण्ड में वर्णित है कि राजा प्रतिदिन अपने मंत्रियों, सेनापतियों और अधिकारियों से परामर्श करते थे। दशरथ और उनके गुरु वसिष्ठ युवा राजकुमार राम को सिखाते हैं कि प्रजा के कल्याण और दुख-सुख की निरंतर चिंता तथा मंत्रियों, सेनापतियों और अधिकारियों से निरंतर परामर्श राजा के प्रमुख कर्तव्य हैं।

राम के राज्याभिषेक की तैयारी के प्रकरण में राजा दशरथ सभी मंत्रियों, पुरोहितों और पौर-जनपद के प्रतिनिधियों की सभा बुलाते हैं (रामायण, 2.2)। इस सभा में विदेह और केकय के राजाओं को छोड़कर साम्राज्य के अन्य सभी राजाओं को भी आमंत्रित किया गया था। यह प्रकरण दर्शाता है कि शासक का चयन एकतरफा निर्णय नहीं था, बल्कि इसमें विभिन्न हितधारकों की सहमति आवश्यक थी।

धर्म द्वारा नियंत्रित राजसत्ता

रामायण की राजनीतिक विचारधारा में धर्म सर्वोपरि है। राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता है - सामाजिक और नैतिक व्यवस्था के सर्वोच्च संरक्षक (Pollock, 1991)। महाकाव्य इस बात पर बल देता है कि राजा का प्रथम कर्तव्य धर्म के प्रति है, यहाँ तक कि व्यक्तिगत हितों या पारिवारिक संबंधों से भी ऊपर। राम ने अपने पिता दशरथ के वचन को पूरा करने के लिए 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया - यह प्रकरण दर्शाता है कि राजा भी धर्म से बंधा था और उसकी शक्ति असीमित नहीं थी।

रामायण में आदर्श राजा के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि राजा को सत्यवादी, करुणाशील, वीर, संयमी और प्रजा के कल्याण के प्रति समर्पित होना चाहिए। राम गरीब से गरीब नागरिक की याचिका भी सुनते हैं; एक कथा बताती है कि वे रात्रि में वेश बदलकर अपनी प्रजा की वास्तविक राय जानने के लिए निकलते थे - यह जनमत के प्रति उत्तरदायित्व की प्रारंभिक अवधारणा है (Sachdev, 2014)।

जनमत की भूमिका (Role of Public Opinion)

सीता-त्याग का प्रकरण

रामायण के उत्तरकाण्ड में वर्णित सीता-त्याग का प्रकरण जनमत की शक्ति और राजधर्म की जटिलता को सबसे स्पष्ट रूप से दर्शाता है। जब राम अयोध्या लौटकर राजा बने, तब एक धोबी ने अपनी पत्नी को डाँटते हुए कहा कि 'वह राम नहीं है जो अपनी पत्नी को दूसरे पुरुष के घर में रहने के बाद वापस स्वीकार करे' (वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड, 45)। यह बात गुप्तचरों द्वारा राम तक पहुँची।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, यह असंतोष केवल एक धोबी तक सीमित नहीं था, बल्कि नागरिकों में व्यापक था। राम ने, हालाँकि वे सीता की पवित्रता के बारे में पूर्णतः आश्वस्त थे, जनभावना का सम्मान करते हुए गर्भवती सीता को वन में भेज दिया। यह निर्णय उनके व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा राजधर्म और जनमत को प्राथमिकता देने का उदाहरण है। जैसा कि एक विद्वान ने लिखा है, 'यह प्रकरण राम के चरित्र की सबसे बड़ी आलोचना भी है और सबसे गहन शिक्षा भी - कि आदर्श होने के प्रयास में कितने गंभीर त्याग करने पड़ सकते हैं' (Richman, 1991)।

जनमत का सम्मान: राजधर्म की अनिवार्यता

रामायण में जनमत का सम्मान राजधर्म का अभिन्न अंग है। तुलसीदास के रामचरितमानस (16वीं शताब्दी) में एक दृश्य है जहाँ राजा राम नागरिकों की सभा बुलाकर उन्हें कहते हैं कि वे उनके निर्णयों से असहमत होने और अपनी राय व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हैं। वे उनके तर्कों की पूर्ण सराहना करेंगे और

इससे उन्हें उनका दृष्टिकोण समझने में सहायता मिलेगी। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सहभागी शासन का उल्लेखनीय उदाहरण है।

रामराज्य की अवधारणा में, जैसा कि वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड (128.98-106) में वर्णित है, किसी को कोई दुख, पीड़ा या भय नहीं था। वृद्ध लोगों को युवाओं का अंतिम संस्कार नहीं करना पड़ता था। प्रत्येक प्राणी प्रसन्न था। सभी धर्म में निष्ठावान थे। राम की ओर ही दृष्टि लगाए, प्राणी एक-दूसरे का वध नहीं करते थे। यह वर्णन एक आदर्श शासन व्यवस्था की परिकल्पना प्रस्तुत करता है जहाँ जनकल्याण सर्वोपरि था।

सेवक-नेता की अवधारणा (The Concept of Servant-Leader)

रामायण में आदर्श राजा की अवधारणा आधुनिक 'सेवक-नेतृत्व' (Servant Leadership) के सिद्धांत से मिलती-जुलती है। राम का शासन इस सिद्धांत पर आधारित था कि राजा प्रजा का स्वामी नहीं, बल्कि सेवक है। स्वामी कर्पात्री जी महाराज ने लिखा है कि रामराज्य में 'राजा प्रजा का वेतनभोगी सेवक है' (Karpatri, 1964)। राजा का कर्तव्य प्रजा के कल्याण और सुख को सुनिश्चित करना है, न कि अपने लिए संपत्ति संचय करना। यह अवधारणा आधुनिक उत्तरदायी शासन (Accountable Governance) की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत है। जैसा कि भगवद्गीता (3.21) में कहा गया है: 'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।' अर्थात् 'श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य लोग भी वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो प्रमाण स्थापित करता है, समस्त विश्व उसका अनुसरण करता है।' राम इस सिद्धांत के मूर्त रूप थे - उन्होंने स्वयं कठोर नियमों का पालन किया और प्रजा के लिए आदर्श प्रस्तुत किया।

धार्मिक लोकतंत्र की अवधारणा (The Concept of Dharmic Democracy)

यह अध्ययन 'धार्मिक लोकतंत्र' की अवधारणा प्रस्तावित करता है, जो पश्चिमी लोकतंत्र से भिन्न है, परंतु उसके मूल्यों के विरुद्ध नहीं है। धार्मिक लोकतंत्र नैतिक आचरण, संस्थागत नियंत्रण और सामुदायिक भलाई पर आधारित है। इसमें राजा और प्रजा दोनों धर्म से बंधे हैं। राजा की शक्ति असीमित नहीं है - वह सभा, मंत्रिपरिषद और धार्मिक नियमों द्वारा नियंत्रित है। प्रजा की भागीदारी निर्णय-प्रक्रिया में आवश्यक है। धार्मिक लोकतंत्र के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

- धर्म की सर्वोच्चता: राजा और प्रजा दोनों नैतिक नियमों से बंधे हैं।
- संस्थागत नियंत्रण: सभा, समिति, मंत्रिपरिषद जैसी संस्थाएँ राजसत्ता को नियंत्रित करती हैं।
- जनमत का सम्मान: शासक जनभावना को प्राथमिकता देता है।

- जनकल्याण: राज्य का उद्देश्य प्रजा का कल्याण है, शासक का व्यक्तिगत लाभ नहीं।
- उत्तरदायित्व: शासक अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी है।

यह मॉडल आधुनिक लोकतंत्र के मूल्यों - न्याय, समानता और जनकल्याण - के अनुरूप है, परंतु इसकी जड़ें भारतीय दार्शनिक परंपरा में हैं। जैसा कि अमर्त्य सेन ने लिखा है, भारत में सार्वजनिक तर्क-वितर्क और बहुलवाद की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है (Sen, 2005)।

समकालीन प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)

रामायण में वर्णित शासन सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। भारतीय संविधान में निहित लोकतांत्रिक मूल्य - स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुत्व - रामराज्य की अवधारणा से प्रेरित हैं। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जिन्होंने भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार किया, ने एक ऐसी संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली की स्थापना की जो सभी नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता और समानता सुनिश्चित करती है। आज के संदर्भ में, जब भ्रष्टाचार, असमानता और सत्ता का दुरुपयोग प्रमुख चुनौतियाँ हैं, रामायण के शासन सिद्धांत मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और जनकल्याण पर बल - ये सभी तत्व सुशासन के लिए आवश्यक हैं। जैसा कि एक विद्वान ने लिखा है, 'रामराज्य केवल एक पौराणिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह एक शासन मॉडल है जो नैतिक नेतृत्व और जनकेंद्रित शासन पर बल देता है' (Gupta, 2018)।

निष्कर्ष (Conclusion)

यह अध्ययन दर्शाता है कि लोकतांत्रिक मूल्य और सहभागी शासन की परंपरा भारतीय सभ्यता में प्राचीन काल से विद्यमान है। रामायण में वर्णित शासन प्रणाली - जिसमें सभा और समिति जैसी संस्थाएँ, जनमत का सम्मान, धर्म द्वारा नियंत्रित राजसत्ता, और सेवक-नेता की अवधारणा शामिल है - आधुनिक लोकतांत्रिक सिद्धांतों की पूर्वगामी है। भारत के सांस्कृतिक ग्रंथों में लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों और नेतृत्व के गैर-पश्चिमी मॉडलों को उजागर करके, यह शोध वैश्विक राजनीतिक आदर्शों को व्यापक बनाता है। प्राचीन भारत में सहयोगात्मक निर्णय-निर्माण, सहभागी सरकार और नागरिक दायित्व की एक मजबूत परंपरा थी। रामायण में वर्णित 'धार्मिक लोकतंत्र' का मॉडल आज भी प्रासंगिक है और आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। अंत में, जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था, रामराज्य का अर्थ एक ऐसा राज्य है जहाँ सत्य, न्याय और समानता की प्रधानता हो। यह दृष्टि आज भी प्रासंगिक है और भारतीय लोकतंत्र के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

Altekar, A. S. (1949). State and government in ancient India. Motilal Banarsidass.

Basham, A. L. (1967). The wonder that was India: A survey of the history and culture of the Indian sub-continent before the coming of the Muslims. Sidgwick & Jackson.

Dharma, P. C. (1940). The Ramayana polity. Banaras Hindu University.

Gandhi, M. K. (1947). India of my dreams. Navajivan Publishing House.

Goldman, R. P. (Ed.). (1984). The Ramayana of Valmiki: An epic of ancient India, Volume I: Balakanda. Princeton University Press.

Gupta, B. K. (2018). The concept of Ram Rajya and good governance: Lessons from the Ramayana. My India My Glory. https://www.myindiamyglory.com

Held, D. (2006). Models of democracy (3rd ed.). Stanford University Press.

Jayaswal, K. P. (1943). Hindu polity: A constitutional history of India in Hindu times. Butterworth & Co.

Karpatri, S. (1964). Marxism and Ramrajya (2nd ed.). Gita Press.

Majumdar, R. C. (2022). Ancient India (Updated ed.). Motilal Banarsidass. (Original work published 1977)

Pollock, S. (1991). The Ramayana of Valmiki: An epic of ancient India, Volume III: Aranyakanda. Princeton University Press.

Richman, P. (Ed.). (1991). Many Ramayanas: The diversity of a narrative tradition in South Asia. University of California Press.

Sachdev, J. (2014). Good governance in Indian statecraft, diplomacy and polity through prism of ancient Indian literature. Foundation for Indian Studies.

Sen, A. (2005). The argumentative Indian: Writings on Indian history, culture and identity. Penguin Books.

Sharma, R. S. (2005). India's ancient past. Oxford University Press.

Thapar, R. (2002). Early India: From the origins to AD 1300. University of California Press.

वाल्मीकि। रामायण (हिंदी अनुवाद)। गीता प्रेस, गोरखपुर।

https://www.valmiki.iitk.ac.in/ — IIT Kanpur Valmiki Ramayana Digital Resource

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 57-63

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 57-63

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक उपयोग

Social Application of Indian Knowledge Tradition

धर्मेंद्र सूर्यवंशी / Dharmendra Suryavanshi

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor, Department of Sociology, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा अर्थात जो ज्ञान वेदों, उपनिषदों, शास्त्रीय ग्रंथों, पांडुलिपियों या मौखिक संचार के रूप में हजारों वर्षों से चला आ रहा है। इसके अंतर्गत जीवन निर्वाह हेतु व्यवहारिक ज्ञान जैसे कृषि, पारंपरिक चिकित्सा, खगोल विज्ञान, शिल्प और पारंपरिक प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा ने वर्ण, आश्रम, जाति तथा ग्राम व्यवस्था जैसे सिद्धांतों से समाज को संरचित किया।

Indian knowledge tradition refers to the knowledge that has been passed down for thousands of years through Vedas, Upanishads, classical texts, manuscripts or oral communication. It includes practical knowledge for livelihood such as agriculture, traditional medicine, astronomy, crafts and traditional technologies. Indian knowledge tradition structured society through principles like Varna, Ashrama, Jati and village systems.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक अनुप्रयोग, आयुर्वेद, योग, सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Social Application, Ayurveda, Yoga, Cultural Unity, NEP 202

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा वह ज्ञान है जो वेदों, उपनिषदों, शास्त्रीय ग्रंथों, पांडुलिपियों तथा मौखिक परंपरा के माध्यम से हजारों वर्षों से निरंतर प्रवाहित होता आ रहा है। इसके अंतर्गत जीवन-निर्वाह से संबंधित व्यवहारिक ज्ञान– जैसे शिकार, कृषि, पारंपरिक चिकित्सा, आकाशीय ज्ञान (खगोल विज्ञान), शिल्प, कौशल, जलवायु तथा क्षेत्रीय पारंपरिक प्रौद्योगिकियाँ–शामिल हैं। मौखिक परंपरा के अंतर्गत यह ज्ञान कहानियों, किंवदंतियों, लोककथाओं, अनुष्ठानों, गीतों, पौराणिक कथाओं, दृश्य कला और वास्तुकला के रूप में प्रचलित रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने वर्ण, आश्रम, जाति तथा ग्राम व्यवस्था जैसे सिद्धांतों के माध्यम से समाज को संरचित किया, जो कर्तव्य और संतुलन पर आधारित थे। बौद्ध एवं जैन धर्म ने समानता और अहिंसा को बढ़ावा दिया,

जबकि गीता जैसे ग्रंथ सामाजिक असमानताओं पर गहन चिंतन प्रस्तुत करते हैं। जनजातीय समाजों में भी पारंपरिक ज्ञान सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में सहायक रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

- यह एक समृद्ध विरासत है जो हजारों वर्षों से चली आ रही है।
- प्राचीन शिक्षा प्रणाली मानवता और नैतिकता को प्रोत्साहित करती थी।
- यह सांस्कृतिक अधिकारों के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- यह आर्थिक स्थिरता और बेहतर जीवन-स्तर की प्राप्ति की कुंजी है।
- इसमें लौकिक और पारलौकिक ज्ञान, कर्म और धर्म, भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का समाज में उपयोग

भारतीय ज्ञान परंपरा का समाज में अनेक स्तरों पर उपयोग होता है और इसका प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में स्पष्ट दिखाई देता है–

(1) स्वास्थ्य

आयुर्वेद और योग को दैनिक जीवन में स्वास्थ्य, तनाव-मुक्ति और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अपनाया जा रहा है। कई अस्पताल और क्लिनिक आयुर्वेदिक उपचार भी प्रदान करते हैं।

(2) शिक्षा

गणित (शून्य, दशमलव प्रणाली) और विज्ञान (सुश्रुत, चरक) के प्राचीन सिद्धांतों को विद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जा रहा है।

(3) संस्कृति एवं कला

नृत्य, संगीत, नाट्य और चित्रकला में रथ, मंडल, नवरंग जैसे प्रतीकात्मक तत्वों का प्रयोग सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है।

(4) पर्यावरण

वेदों में वर्णित "पंचभूत" सिद्धांत के आधार पर जल-संरक्षण, वन-संरक्षण और सतत कृषि से संबंधित परियोजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

(5) समाज-सेवा

दान-धर्म, अन्नदान और सेवा-भावना जैसे मूल्य प्राचीन ग्रंथों से प्रेरित होकर गैर-सरकारी संगठनों और सामुदायिक समूहों द्वारा अपनाए जा रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का समाज में योगदान

भारत की सामाजिक संरचना–वर्ण, आश्रम, जाति, परिवार, ग्राम व्यवस्था, धर्म और कर्तव्य–भारतीय ज्ञान प्रणालियों में निहित रही है और समाज के संतुलन एवं संचालन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

वर्तमान युग में, जब मानव सभ्यता तकनीकी प्रगति, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इन चुनौतियों का समाधान शिक्षा में समावेश, अनुवाद और डिजिटलीकरण, स्थानीय भाषाओं के प्रोत्साहन, आध्यात्मिक पुनर्जागरण तथा सांस्कृतिक चेतना के विकास के माध्यम से किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय समाज की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक नींव है। यह वेदों, उपनिषदों, पुराणों और शास्त्रों पर आधारित है तथा नैतिकता, विज्ञान और दर्शन का समन्वय प्रस्तुत करती है।

(1) सामाजिक एकता का आधार

यह परंपरा लौकिक और पारलौकिक ज्ञान का संतुलन स्थापित कर समाज को एकजुट रखने में सहायक है तथा स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देती है। तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन ज्ञान-केंद्रों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान का प्रसार किया।

(2) शिक्षा और विकास में योगदान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को एक प्रमुख आधार के रूप में स्वीकार किया गया है, जिससे प्राचीन धरोहर के पुनरुद्धार के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा को भी समृद्ध किया जा सके।

(3) समकालीन प्रासंगिकता

आज यह सामाजिक असमानता, जलवायु परिवर्तन और कुटीर उद्योगों से संबंधित समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करती है, विशेष रूप से जनजातीय समुदायों की पारंपरिक प्रौद्योगिकियों के माध्यम से।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान समय में स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक एकता और पर्यावरणीय चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान भी प्रदान करती है। आधुनिक विज्ञान के साथ इसके समन्वय से एक संतुलित और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि आज के स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक एकता और पर्यावरणीय चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है। इसे आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर हम एक संतुलित, समृद्ध समाज बना सकते हैं।

संदर्भ (References)

Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*.

वेद, उपनिषद एवं पुराण (हिंदी अनुवाद)।

मेहता, ममता (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा: अर्थ एवं महत्व. https://jayvijay.co

भारतीय ज्ञान परंपरा (ज्ञानविविधा). https://gyanvividha.com

मिश्रा, आशा. पुरातन में निहित नवीनता: भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक और शैक्षिक योगदान. https://doi.org/10.29070/adcd6897

भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान की संस्कृति. https://ejournals.ncert.gov.in

https://onlinecourses.swayam2.ac.in

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 64-67

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 64-67

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

महिला सशक्तिकरण में भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान

Contribution of the Indian Knowledge Tradition to Women Empowerment

डॉ. किरण वर्मा /Dr. Kiran Verma

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), अंग्रेजी विज्ञान विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of English, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

"I measure the progress of a community by the degree of progress which women have achieved." — Dr. B.R. Ambedkar (1942)

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा ने ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को दर्शन, चिकित्सा, कला और शासन में विद्वानों के रूप में महत्व देकर महिला सशक्तिकरण में योगदान दिया है। इसने नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों में शिक्षा को बढ़ावा दिया और महिलाओं को पारंपरिक ज्ञान के महत्वपूर्ण संरक्षक के रूप में मान्यता दी। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

The Indian knowledge tradition contributes to women empowerment by historically valuing women as scholars (Gargi, Maitreyi) in philosophy, medicine, arts and governance. It fostered education in ancient universities like Nalanda and recognized women as crucial preservers of traditional wisdom. This research paper presents an analysis of various dimensions of women empowerment in the Indian knowledge tradition, including historical contributions, educational aspects, and modern relevance.

मुख्य शब्द (Keywords): महिला सशक्तिकरण, भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक काल, महिला शिक्षा, लैंगिक समानता

Keywords: Women Empowerment, Indian Knowledge Tradition, Vedic Period, Women Education, Gender Equality

Introduction

Women empowerment represents one of the most significant developmental priorities of the contemporary world. Defined as the process of enabling women to have control over their lives, make strategic life choices, and participate meaningfully in economic, political, and social spheres (Kabeer, 1999), empowerment encompasses multiple dimensions including economic independence, educational attainment, political participation, and psychological autonomy. While

modern discourse often frames women empowerment through Western liberal frameworks, the Indian knowledge tradition offers a distinct and valuable perspective that merits scholarly attention.

The Indian subcontinent possesses an ancient heritage of intellectual discourse that explicitly included women as active participants. The Vedic period (c. 1500–500 BCE) witnessed remarkable achievements by women scholars known as Brahmavadinis—expounders of Vedic knowledge—who engaged in philosophical debates, composed hymns, and transmitted sacred knowledge across generations (Altekar, 2015). This historical foundation suggests that gender-inclusive education was not alien to Indian civilization but rather constituted an integral component of its intellectual tradition.

Dr. B.R. Ambedkar, the principal architect of the Indian Constitution, articulated the significance of women's progress as a metric for societal advancement. Addressing the Second All-India Depressed Classes Women's Conference at Nagpur on July 20, 1942, he declared: "I measure the progress of a community by the degree of progress which women have achieved" (Ambedkar, 1942, as cited in Jatava, 2001). This perspective resonates deeply with the Indian knowledge tradition, which recognized the complementary nature of masculine and feminine principles in cosmic and social order.

This paper examines the multifaceted contributions of the Indian knowledge tradition to women empowerment, analyzing historical precedents, philosophical foundations, and contemporary applications. The study argues that a synergistic integration of traditional Indian values with modern empowerment frameworks can yield more sustainable and culturally appropriate outcomes for women's development in India and beyond.

Conceptualizing Women Empowerment

Women empowerment is a multidimensional concept that encompasses the enhancement of women's ability to make strategic life choices in contexts where this ability was previously denied to them (Kabeer, 1999). The concept operates across several interconnected dimensions:

• Economic Empowerment: Access to productive resources, financial services, employment opportunities, and economic decision-making power.

• Educational Empowerment: Access to quality education, skill development, and knowledge acquisition that enables informed participation in society.

• Political Empowerment: Participation in governance, policy-making, and civic activities at local, regional, and national levels.

• Social Empowerment: Freedom from discrimination, violence, and harmful practices, alongside recognition of rights and dignity.

• Psychological Empowerment: Development of self-confidence, self-efficacy, and the capacity to challenge oppressive structures.

The National Family Health Survey-5 (2019-2021) developed a Women's Empowerment Index (WEI) measuring empowerment across economic participation, decision-making autonomy, health and nutrition, and gender role attitudes (International Institute for Population Sciences, 2021). This multidimensional approach aligns with the holistic conception of human development found in Indian philosophical traditions.

Historical Foundations: Women Scholars in Ancient India

The Brahmavadini Tradition

The Vedic period witnessed the emergence of women scholars designated as Brahmavadinis—literally, "expounders of Brahman" or ultimate reality. These women dedicated themselves to philosophical inquiry, Vedic learning, and spiritual pursuits, often forgoing marriage to pursue knowledge (Altekar, 2015). The Asvalayana Grihyasutra mentions several women scholars of this category, indicating an institutionalized tradition of female scholarship.

Among the most celebrated Brahmavadinis was Gargi Vachaknavi (c. 700 BCE), daughter of the sage Vachaknu from the lineage of Garga. The Brihadaranyaka Upanishad records her participation in a philosophical debate (brahmayajna) organized by King Janaka of Videha. Gargi challenged the renowned sage Yajnavalkya with probing questions about the ultimate nature of reality, asking progressively deeper questions about what underlies the physical universe, space, and ultimately Brahman itself (Brihadaranyaka Upanishad, 3.6.1-3.8.12). Her intellectual fearlessness and philosophical acumen earned her recognition as one of the Navaratnas (nine gems) of King Janaka's court (Tyagi, 2008).

Maitreyi, another prominent figure in the Brihadaranyaka Upanishad (c. 700 BCE), engaged in profound philosophical dialogue with her husband Yajnavalkya. When offered a choice between material wealth and spiritual knowledge, Maitreyi famously chose the latter, asking: "What should I do with that which would not make me immortal?" (Brihadaranyaka Upanishad, 2.4.2). The subsequent dialogue on the nature of Atman (soul) and Brahman (ultimate reality) demonstrates the high level of philosophical sophistication expected of and achieved by women in Vedic society (Doniger, 2014).

Other notable women scholars include Lopamudra, a poetess and philosopher whose hymns appear in the Rigveda (1.179), and Ghosha, credited with composing devotional hymns expressing spiritual longing. The Rigveda mentions approximately twenty-seven Rishikas (female seers) who contributed to its composition, suggesting that women's intellectual participation was not exceptional but rather normatively accepted in certain contexts (Jamison & Brereton, 2014).

Women and Ancient Indian Universities

The tradition of formalized learning in ancient India created spaces for advanced education that influenced pedagogical practices across Asia. Taxila (Takshashila), established around 700 BCE in present-day Pakistan, functioned as a major center of learning where students studied diverse subjects including mathematics, law, medicine, and philosophy. Historical accounts suggest that

while the university primarily served male students, the broader educational ecosystem in the region accommodated women's learning within certain contexts (Mookerji, 1947).

Nalanda Mahavihara, founded by Kumaragupta I of the Gupta dynasty around 427 CE, evolved into one of the world's most renowned centers of learning. At its peak, Nalanda attracted over 10,000 students and 2,000 teachers from across Asia, including China, Korea, Japan, Tibet, and Central Asia (Xuanzang, 7th century CE, as cited in Dutt, 1962). The university offered instruction in Buddhist philosophy, logic, grammar, medicine, and other disciplines. While the monastic nature of Nalanda imposed certain gender restrictions, the broader Indian educational tradition during the Gupta period allowed for women's education in various settings (Altekar, 2015). Princess Rajyasri, sister of Emperor Harshavardhana (7th century CE), is recorded as having attended philosophical discourses, demonstrating continued elite female engagement with intellectual pursuits (Beal, 1884).

Philosophical Foundations of Gender Equity in Indian Thought

The Indian knowledge tradition articulates several philosophical principles that support gender equity and women's participation in public life:

Complementarity of Masculine and Feminine Principles

Indian philosophical systems recognize the complementary nature of masculine (Purusha) and feminine (Prakriti/Shakti) principles in cosmic functioning. The Samkhya philosophy posits that creation emerges from the interaction of these principles, neither complete without the other. This ontological complementarity provides philosophical grounding for gender partnership rather than hierarchy (Larson, 2014).

Goddess Worship and Female Divinity

The veneration of goddesses—Saraswati (knowledge), Lakshmi (prosperity), Durga (strength)—in Hindu tradition elevates feminine attributes to divine status. The Shakti tradition specifically recognizes the feminine as the dynamic, creative force animating the universe. This theological framework provides cultural resources for affirming women's dignity and capability (Kinsley, 1988).

Education as Universal Right

The concept of Vidya (knowledge) in Indian philosophy is often personified as a goddess and conceived as inherently liberating for all who pursue it. The Upanishadic tradition emphasizes that knowledge of Brahman leads to liberation (moksha) irrespective of social categories, providing philosophical justification for universal access to education (Radhakrishnan, 1953).

Modern Relevance and Contemporary Applications

Integration with National Education Policy 2020

The National Education Policy 2020 explicitly recognizes the Indian Knowledge System (IKS) as a vital component of educational reform, calling for its integration across curricula from school to higher education levels (Ministry of Education, 2020). This policy framework creates opportunities for incorporating traditional perspectives on women's roles in knowledge production and transmission. The establishment of IKS centers at universities nationwide provides institutional platforms for researching and reviving the legacy of women scholars in Indian tradition.

Government Schemes Reflecting Traditional Values

Several contemporary government initiatives resonate with traditional Indian values regarding women's development:

1. Beti Bachao Beti Padhao (Save the Daughter, Educate the Daughter): Launched in 2015, this scheme addresses declining child sex ratios and promotes girls' education, echoing traditional valorization of the daughter as Lakshmi (goddess of prosperity) in Indian households (Ministry of Women and Child Development, 2015).

2. Self-Help Groups and Microfinance: The Deendayal Antyodaya Yojana-National Rural Livelihoods Mission aims to empower 9-10 crore women through Self-Help Groups, applying traditional concepts of community cooperation (sahayog) and collective enterprise (Ministry of Rural Development, 2024).

3. Sukanya Samriddhi Yojana: This savings scheme for girl children's education and marriage reflects traditional concern for daughters' welfare while modernizing investment mechanisms (Ministry of Finance, 2015).

4. Mission Shakti: Launched as an umbrella scheme for women's safety, security, and empowerment, the name invokes the goddess Shakti, symbolizing feminine power (Ministry of Women and Child Development, 2022).

Economic Empowerment Through Traditional Knowledge

Traditional knowledge systems offer significant economic opportunities for women's empowerment. Industries based on traditional crafts, ayurvedic medicine, yoga instruction, classical arts, and organic agriculture provide employment pathways rooted in Indian heritage. The Women Entrepreneurship Platform (WEP) established by NITI Aayog supports women entrepreneurs, many of whom leverage traditional skills and knowledge (NITI Aayog, 2018). The Mahila e-Haat online marketplace enables women to market traditional products nationally and internationally.

Areas of Women's Education Linked to Indian Knowledge System

The integration of Indian Knowledge System with women's education encompasses multiple domains:

Table 1: IKS Components and Applications in different domains

Domain	IKS Components and Applications
Health and Wellness	Ayurveda, Yoga, traditional medicine, nutrition science (Ahara Vijnana)
Mathematics	Vedic mathematics, Lilavati's contributions, geometric principles in architecture
Astronomy	Jyotish Shastra, astronomical calculations, calendar systems
Philosophy	Upanishadic philosophy, consciousness studies, ethics (Dharmashastra)
Arts and Architecture	Classical dance, music, Vastu Shastra, temple architecture, textile design
Environmental Science	Traditional ecological knowledge, sustainable practices, sacred groves

Importance of Women's Education in National Development

Women's education yields transformative benefits across multiple dimensions:

• Economic Growth: Educated women contribute significantly to GDP through formal and informal sector participation. Research indicates that increasing women's education and labor force participation could add $700 billion to India's GDP (McKinsey Global Institute, 2015).

• Poverty Reduction: Women's economic empowerment creates household spillover effects, as women tend to invest larger proportions of income in family welfare (World Bank, 2012).

• Health Outcomes: Educated mothers demonstrate better maternal and child health practices, reducing infant mortality and improving nutritional outcomes (UNESCO, 2014).

• Family Planning: Women's education correlates strongly with fertility rate reduction and informed reproductive choices (Das Gupta et al., 2003).

• Breaking Discrimination: Education enables women to recognize and challenge discriminatory practices and assert their rights (Sen, 1999).

• Enhanced Literacy: Women's education creates intergenerational benefits, as educated mothers more effectively support children's learning (Psacharopoulos & Patrinos, 2018).

Arts and Cultural Preservation

Women have served as primary custodians of India's intangible cultural heritage. Classical performing arts—Bharatanatyam, Kathak, Odissi, Manipuri—were historically transmitted through women practitioners and gurus. Epic narratives from the Ramayana and Mahabharata were preserved through women's oral traditions, including lullabies, folk songs, and storytelling practices. This cultural preservation role continues to provide women with economic opportunities through tourism, cultural industries, and educational institutions.

The recognition of women artists as cultural bearers finds expression in contemporary honors such as the Padma awards and Sangeet Natak Akademi fellowships granted to women practitioners of traditional arts. This institutional recognition validates the traditional role of women in cultural transmission while providing modern platforms for their continued contribution.

Challenges and the Way Forward

Despite the rich heritage of women's intellectual participation in Indian tradition, significant challenges persist:

• The female literacy rate in India (64.6%) remains substantially lower than male literacy (80.9%), reflecting continued educational disparities (Census of India, 2011).

• Women's labor force participation rate (approximately 22%) ranks among the lowest globally, indicating barriers to economic empowerment (International Labour Organization, 2022).

• Cultural practices inconsistent with the philosophical ideals of the tradition continue to restrict women's opportunities in many communities.

• The historical contributions of women scholars remain insufficiently integrated into mainstream educational curricula.

Addressing these challenges requires a multifaceted approach:

1. Curricular Reform: Integration of women scholars' contributions into history, philosophy, and IKS curricula at all educational levels.

2. Role Model Promotion: Highlighting historical and contemporary women achievers rooted in Indian tradition to inspire new generations.

3. Traditional Skills Modernization: Creating economic pathways that leverage traditional knowledge while meeting contemporary market demands.

4. Community Engagement: Working with traditional institutions and community leaders to align contemporary practices with the philosophical ideals of the tradition.

5. Research Support: Funding scholarly research on women in Indian intellectual history to recover marginalized voices and contributions.

Conclusion

The Indian knowledge tradition offers substantial philosophical and historical resources for women empowerment that remain underutilized in contemporary policy discourse. The legacy of Brahmavadinis like Gargi and Maitreyi demonstrates that gender-inclusive intellectual participation was not only accepted but celebrated in significant strands of Indian civilization. The philosophical principles of complementarity, the theological exaltation of feminine divinity, and the conception of knowledge as universally liberating provide robust foundations for gender equity.

Modern initiatives—from the National Education Policy 2020 to schemes like Beti Bachao Beti Padhao and Mission Shakti—increasingly draw upon these traditional resources while adapting them to contemporary needs. The integration of IKS with women's education across domains from

health sciences to arts creates opportunities for meaningful engagement with heritage alongside modern capability building.

As Dr. Ambedkar recognized, the progress of women constitutes the fundamental measure of community advancement. The Indian knowledge tradition, properly understood and applied, provides a culturally resonant framework for achieving this progress. By recovering the empowering dimensions of tradition while critically examining and transforming practices inconsistent with its highest ideals, India can chart a distinctive path toward gender equality that honors its heritage while embracing modernity.

The empowerment of women is not merely a policy objective but a civilizational imperative. When women are educated, economically independent, and socially empowered, families thrive and nations prosper. The wisdom embedded in India's knowledge tradition affirms this truth and calls for its actualization in contemporary practice.

References

Altekar, A. S. (2015). The position of women in Hindu civilization: From prehistoric times to the present day (3rd ed.). Motilal Banarsidass. (Original work published 1938)

Ambedkar, B. R. (1942, July 20). Address at the Second All-India Depressed Classes Women's Conference [Speech]. Nagpur, India.

Beal, S. (Trans.). (1884). Si-Yu-Ki: Buddhist records of the Western world. Trübner & Co.

Census of India. (2011). Literacy and education. Office of the Registrar General and Census Commissioner. https://censusindia.gov.in

Das Gupta, M., Zhenghua, J., Bohua, L., Zhenming, X., Chung, W., & Hwa-Ok, B. (2003). Why is son preference so persistent in East and South Asia? A cross-country study of China, India and the Republic of Korea. Journal of Development Studies, 40(2), 153-187.

Doniger, W. (2014). On Hinduism. Oxford University Press.

Dutt, S. (1962). Buddhist monks and monasteries of India. George Allen and Unwin.

International Institute for Population Sciences. (2021). National Family Health Survey-5 (2019-2021): India fact sheet. Ministry of Health and Family Welfare.

International Labour Organization. (2022). World employment and social outlook: Trends 2022. ILO.

Jamison, S. W., & Brereton, J. P. (Trans.). (2014). The Rigveda: The earliest religious poetry of India (3 vols.). Oxford University Press.

Jatava, D. R. (2001). Dr. Ambedkar's vision of women empowerment. ABD Publishers.

Kabeer, N. (1999). Resources, agency, achievements: Reflections on the measurement of women's empowerment. Development and Change, 30(3), 435-464.

Kinsley, D. (1988). Hindu goddesses: Visions of the divine feminine in the Hindu religious tradition. University of California Press.

Larson, G. J. (2014). Classical Samkhya: An interpretation of its history and meaning (2nd ed.). Motilal Banarsidass.

McKinsey Global Institute. (2015). The power of parity: How advancing women's equality can add $12 trillion to global growth. McKinsey & Company.

Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.

Ministry of Finance. (2015). Sukanya Samriddhi Yojana scheme details. Government of India.

Ministry of Rural Development. (2024). Deendayal Antyodaya Yojana-National Rural Livelihoods Mission. Government of India. https://aajeevika.gov.in

Ministry of Women and Child Development. (2015). Beti Bachao Beti Padhao scheme guidelines. Government of India.

Ministry of Women and Child Development. (2022). Mission Shakti: Integrated women empowerment programme. Government of India.

Mookerji, R. K. (1947). Ancient Indian education: Brahmanical and Buddhist (2nd ed.). Macmillan.

NITI Aayog. (2018). Women Entrepreneurship Platform. Government of India. https://wep.gov.in

Psacharopoulos, G., & Patrinos, H. A. (2018). Returns to investment in education: A decennial review of the global literature. Education Economics, 26(5), 445-458.

Radhakrishnan, S. (1953). The principal Upanishads. George Allen and Unwin.

Sen, A. (1999). Development as freedom. Oxford University Press.

Tyagi, A. (2008). Women's participation in the Vedic learning in India. In M. Kamat (Ed.), Studies in history of mathematics (pp. 112-128). Aryan Books International.

UNESCO. (2014). Teaching and learning: Achieving quality for all. EFA Global Monitoring Report 2013/2014.

World Bank. (2012). World development report 2012: Gender equality and development. World Bank.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 68-76

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 68-76

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

खण्ड IV

प्रबंधन, राजस्व एवं शिक्षा

Management, Revenue & Education

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रबंधन, अर्थव्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में अनमोल अंतर्दृष्टि उपलब्ध है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कर प्रबंधन, राजस्व संग्रह और कोष प्रशासन के व्यापक सिद्धांत वर्णित हैं। प्राचीन गुरुकुल पद्धति और नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रणाली आज भी प्रेरणादायक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति

2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को समाहित किया गया है। यह खण्ड प्रबंधन विज्ञान, राजस्व प्रशासन, रोजगार सृजन और शैक्षिक नवाचार पर केंद्रित शोध पत्रों को प्रस्तुत करता है।

The Indian Knowledge Tradition offers invaluable insights in the fields of management, economics, and education. Kautilya's Arthashastra describes comprehensive principles of tax management, revenue collection, and treasury administration. The ancient Gurukul system and the educational frameworks of universities like Nalanda and Takshashila continue to inspire modern pedagogy. The National Education Policy 2020 has incorporated Indian Knowledge Tradition into its framework. This section presents research papers focused on management science, revenue administration, employment generation, and educational innovation, demonstrating the contemporary relevance of traditional wisdom.

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणालियों में राज्य राजस्व (कोष) प्रबंधन

State Revenue (Kosha) Management in Indian Knowledge Tradition and Modern Direct Tax Systems

अनिमेष पटेल[1], डॉ. लोकेन्द्र विक्रम सिंह[2]/Animesh Patel[1], Dr. Lokendra Vikram Singh[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

[1]Assistant Professor, Department of Commerce, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

[2]प्राध्यापक, मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.), भारत

[2]Professor, Mandsaur University, Mandsaur (M.P.), India

सारांश (Abstract)

भारत में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक राज्य राजस्व (कोष) प्रबंधन शासन का एक केंद्रीय कार्य रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों, विशेष रूप से कौटिल्य के अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र में, नैतिक संग्रह, न्यायसंगत कराधान और पारदर्शी संसाधन आवंटन पर जोर दिया गया है, जो राजकोषीय प्रशासन को सामाजिक कल्याण और धर्म से जोड़ता है। यह शोध पत्र भारत में राजस्व प्रबंधन के विकास का विश्लेषण करता है, प्राचीन और आधुनिक सिद्धांतों की तुलना करता है, और इस बात पर प्रकाश डालता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित नैतिक प्रथाएँ समकालीन कर प्रशासन को किस प्रकार पूरक बना सकती हैं। गुणात्मक और तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन सिद्धांतों, चुनौतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं को समझने के लिए ऐतिहासिक ग्रंथों, विद्वतापूर्ण साहित्य और आधुनिक नीति विश्लेषणों पर आधारित है। निष्कर्ष बताते हैं कि नैतिक शासन, प्रगतिशील कराधान और जवाबदेही ऐसे स्थायी सिद्धांत हैं जो आधुनिक वित्तीय प्रणालियों को बेहतर बना सकते हैं।

State revenue (Kosha) management has been a central function of governance in India from ancient times to the present. Ancient Indian texts, particularly Kautilya's Arthashastra and Dharmashastra, emphasize ethical collection, equitable taxation, and transparent resource allocation, linking fiscal administration to social welfare and dharma. This research paper analyzes the evolution of revenue management in India, compares ancient and modern principles, and highlights how ethical practices from the Indian knowledge tradition can complement contemporary tax administration. Using qualitative and comparative approaches, this study draws on historical texts, scholarly literature, and modern policy analyses to understand principles, challenges, and best practices. The findings indicate that ethical governance, progressive taxation, and accountability are enduring principles that can enhance modern financial systems.

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, कोष प्रबंधन, अर्थशास्त्र, कराधान, प्रत्यक्ष कर, राजकोषीय नीति, नैतिक शासन

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Kosha Management, Arthashastra, Taxation, Direct Tax, Fiscal Policy, Ethical Governance

परिचय *Introduction*

राजस्व संग्रह और प्रबंधन राज्य शासन का आधार है, जो सार्वजनिक सेवाओं के प्रावधान, आर्थिक स्थिरता और राष्ट्रीय सुरक्षा को सक्षम बनाता है। प्राचीन भारत में, कोष राज्य के खजाने का प्रतिनिधित्व करता था और न केवल धन बल्कि नैतिक शासन का भी प्रतीक था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कराधान, कोष प्रबंधन और सार्वजनिक वित्त के व्यापक सिद्धांतों की रूपरेखा दी गई है, जिसमें निष्पक्षता बनाए रखने के लिए शासक के नैतिक और प्रशासनिक कर्तव्य पर जोर दिया गया है (कौटिल्य, लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व)।

आधुनिक भारत आयकर अधिनियम (1961) और उसके बाद के संशोधनों द्वारा शासित आयकर, कॉर्पोरेट कर और संपत्ति कर जैसे प्रत्यक्ष कराधान पर काफी हद तक निर्भर है। आधुनिक प्रणालियाँ कानूनी प्रवर्तन, दक्षता, पारदर्शिता और प्रौद्योगिकी-आधारित प्रशासन पर जोर देती हैं (दास एट अल., 2025)।

इस अध्ययन में मुख्य रूप से निम्नलिखित शोध प्रश्नों पर विचार किया गया है:

1. प्राचीन भारतीय शासन प्रणालियों में कोष का प्रबंधन कैसे किया जाता था?
2. भारत में आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणालियों के सिद्धांत, कार्यान्वयन और चुनौतियाँ क्या हैं?
3. भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतर्दृष्टियाँ समकालीन राजस्व प्रबंधन को कैसे बेहतर बना सकती हैं?

अध्ययन के उद्देश्य *Objectives of Study*

1. प्राचीन भारतीय शासन में कोष प्रबंधन के सिद्धांतों और प्रथाओं का अध्ययन करना।
2. आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणालियों की संरचना, प्रशासन और चुनौतियों का विश्लेषण करना।
3. प्राचीन और आधुनिक राजस्व प्रणालियों के नैतिक, प्रशासनिक और आर्थिक पहलुओं की तुलना करना।
4. पारंपरिक प्रथाओं से प्राप्त जानकारियों के आधार पर समकालीन राजस्व प्रबंधन में सुधार के लिए सुझाव देना।

साहित्य की समीक्षा *Literature Review*

प्राचीन भारतीय राजस्व प्रणालियाँ

1. कौटिल्य (लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व)

कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्य-प्रशासन और राजस्व प्रबंधन का सबसे प्रामाणिक स्रोत बना हुआ है, जिसमें कराधान विधियों, राजकोष प्रशासन और शासकों के नैतिक दायित्वों का विस्तृत वर्णन है। प्रगतिशील कराधान और कल्याणकारी व्यय इसके प्रमुख सिद्धांत थे।

2. शेख और राठौड़ (2025)

शेख और राठौड़ राजस्व संग्रह में नैतिक शासन के महत्व पर जोर देते हैं, यह देखते हुए कि प्राचीन भारतीय कराधान प्रणालियों में निष्पक्षता, सामाजिक समानता और नागरिक शोषण से बचने के तंत्र शामिल थे।

3. भूपिन्द्र (2025)

भूपिन्द्र ने प्राचीन भारत में कर संग्रह प्रथाओं का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया है, जिसमें व्यावसायिक कराधान, भू-राजस्व प्रणाली और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय लेखापरीक्षा पर प्रकाश डाला गया है।

4. सुब्रमण्यन (2022)

सुब्रमण्यन प्राचीन भारतीय कानूनी परंपराओं में राज्य वित्त का अध्ययन करते हैं, और बताते हैं कि कैसे मानवीय कर नीतियों ने राज्य की वित्तीय आवश्यकताओं को बनाए रखते हुए आर्थिक कठिनाई को कम किया।

5. सरकार (1978)

सरकार कोष को संग्रहण, भंडारण, लेखापरीक्षा और आवंटन के संयोजन के रूप में विस्तृत रूप से समझाते हैं, जिसमें राजकोषीय अनुशासन, पारदर्शिता और कल्याणकारी संसाधन वितरण पर जोर दिया गया है।

6. सिंह और रानी (2025)

वे भारतीय कराधान प्रणालियों पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं, राजस्व प्रबंधन में नैतिक, सामाजिक और आर्थिक विचारों के एकीकरण को दर्शाते हैं।

7. टैक्सगुरु

यह समीक्षा प्राचीन कराधान में निहित छूटों, क्षमादानों और नैतिक विचारों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जिसमें निष्पक्षता और सामाजिक कल्याण को मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में उजागर किया गया है।

आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणाली

8. आयकर विभाग

भारतीय आयकर विभाग प्रत्यक्ष कराधान के विकास का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर आधुनिक वैधानिक ढाँचे तक का विवरण प्रस्तुत करता है, जिसमें कानूनी प्रवर्तन और राजकोषीय नीति के उद्देश्यों पर बल दिया गया है।

9. दास (2022)

दास भारत की आधुनिक कर प्रणाली का विश्लेषण करते हुए राजस्व संग्रह में जटिलता, अनुपालन और तकनीकी अनुकूलन जैसी चुनौतियों का उल्लेख करते हैं।

10. दास एट अल. (2025)

यह अध्ययन आयकर अधिनियम (1961) से प्रस्तावित प्रत्यक्ष कर संहिता (2025) तक भारत की प्रत्यक्ष कर प्रणाली के विकास का पता लगाता है, जिसमें विधायी नवाचारों और प्रशासनिक सुधारों पर जोर दिया गया है।

11. पिल्लई (2023)

पिल्लई ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कराधान का तुलनात्मक अध्ययन किया है, जिसमें राजस्व जुटाने, समानता और आर्थिक विकास में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

12. आनंद (2024)

आनंद ने हालिया कर नीति सुधारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया है और आर्थिक विकास, समानता और राजकोषीय स्थिरता पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया है।

13. अग्रवाल (2022)

अग्रवाल ने कॉर्पोरेट रणनीति और अनुपालन पर प्रत्यक्ष करों के प्रभाव का अध्ययन किया है, जिसमें आधुनिक राजस्व प्रबंधन चुनौतियों को दर्शाया गया है।

14. साह (2023)

साह ने भारतीय कर संरचना का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जिसमें प्रशासनिक दक्षता, राजस्व स्थिरता और समानता के उद्देश्यों की जाँच की गई है।

15. थापर (2002)

थापर ने शासन और राजस्व संग्रह में नैतिक सिद्धांतों को जोड़ते हुए ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रदान की है, जिसमें प्राचीन प्रथाओं को आधुनिक कर प्रशासन के लिए उपयोगी पाठों से जोड़ा गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि *Research Methodology*

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाता है, जिसमें ऐतिहासिक, तुलनात्मक और विषयगत दृष्टिकोणों को एकीकृत किया गया है:

1. ऐतिहासिक विश्लेषण: प्राचीन कोष सिद्धांतों को समझने के लिए प्राथमिक ग्रंथों (अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति) का अध्ययन।
2. तुलनात्मक विश्लेषण: प्राचीन और आधुनिक राजस्व प्रणालियों के बीच समानताओं और अंतरों का मूल्यांकन।
3. द्वितीयक डेटा समीक्षा: अकादमिक लेखों, पुस्तकों और सरकारी रिपोर्टों से प्राप्त साहित्य।
4. विषयगत विश्लेषण: समानता, निष्पक्षता, जवाबदेही और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे आवर्ती विषयों की पहचान।

विश्लेषण एवं चर्चा *Analysis and Discussion*

प्राचीन कोष सिद्धांत

नैतिक कर संग्रह: करों का संग्रह नैतिक और सामाजिक जवाबदेही के साथ किया जाता था (शेख एवं राठौड़, 2025)।

प्रगतिशील कराधान: उच्च आय वर्ग और कुछ विशिष्ट व्यवसायों के लोग अधिक कर अदा करते थे (भूपिन्द्र, 2025)।

संसाधन आवंटन: राजस्व से रक्षा, कल्याण, अवसंरचना और धार्मिक गतिविधियों का वित्तपोषण होता था (सरकार, 1978)।

लेखापरीक्षा एवं जवाबदेही: राजकोषीय प्रणालियों ने पारदर्शिता और कदाचार के लिए दंड सुनिश्चित किया (टैक्सगुरु)।

आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणाली

कानूनी ढाँचा: राजस्व संग्रह और प्रवर्तन वैधानिक कानूनों द्वारा नियंत्रित होते हैं (आयकर विभाग)।

प्रगतिशील कराधान: आय-आधारित कराधान समानता के सिद्धांतों के अनुरूप है (पिल्लई, 2023)।

डिजिटल प्रशासन: प्रौद्योगिकी पारदर्शिता, अनुपालन और दक्षता को बढ़ाती है (दास एट अल., 2025)।

राजस्व उपयोग: निधियों का आवंटन कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, अवसंरचना और रक्षा के लिए किया जाता है (आनंद, 2024)।

तुलनात्मक चर्चा

पहलू	प्राचीन कोष	आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणाली
नैतिक आधार	धर्म और निष्पक्षता	कानूनी और नीति-आधारित
कर संरचना	प्रगतिशील, व्यवसाय आधारित	प्रगतिशील, आय आधारित
संग्रहण विधि	मानव प्रशासन, लेखापरीक्षा	डिजिटल, वैधानिक अनुपालन
राजस्व का उपयोग	कल्याण, रक्षा, सार्वजनिक निर्माण	कल्याण, अवसंरचना, विकास
जवाबदेही	नैतिक एवं प्रशासनिक	कानूनी एवं तकनीकी

चर्चा: आधुनिक प्रणालियाँ दक्षता, कानूनी अनुपालन और प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता देती हैं, जबकि प्राचीन प्रणालियाँ नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और कल्याणकारी नीतियों को एकीकृत करती थीं। प्राचीन प्रथाओं से सीखे गए सबक जनविश्वास, अनुपालन और नागरिक केन्द्रित कर प्रशासन को मजबूत कर सकते हैं।

निष्कर्ष *Findings*

1. प्रगतिशील कराधान प्राचीन और आधुनिक दोनों प्रणालियों का एक प्रमुख सिद्धांत है।
2. प्राचीन भारत में नैतिक शासन ने निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित की।

3. आधुनिक प्रणालियाँ प्रौद्योगिकी और कानूनी प्रवर्तन से लाभान्वित होती हैं, लेकिन उनमें नैतिक और नीतिपरक पहलुओं पर जोर नहीं दिया जाता।

4. प्राचीन भारतीय परंपराओं से नैतिक सिद्धांतों को एकीकृत करने से आधुनिक राजस्व प्रणालियों में जनता का विश्वास बढ़ सकता है।

उपसंहार Conclusion

भारत में राजस्व प्रबंधन नैतिक रूप से निर्देशित कोष प्रशासन से विकसित होकर तकनीकी रूप से उन्नत प्रत्यक्ष कर प्रणालियों तक पहुँच गया है। निष्पक्षता, जवाबदेही और प्रगतिशील कराधान जैसे मूल सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक ढाँचों को आधुनिक राजकोषीय उपकरणों के साथ एकीकृत करने से समकालीन राजस्व प्रशासन में समानता, पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ाया जा सकता है।

सिफारिशें Recommendations

1. कर प्रशासन में नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व प्रशिक्षण को शामिल करें।

2. करों के सामाजिक उद्देश्य के बारे में जन जागरूकता को बढ़ावा दें।

3. सामाजिक कल्याण उद्देश्यों के अनुरूप प्रगतिशील कराधान को बनाए रखें।

4. पारदर्शिता सुनिश्चित करने और प्राचीन प्रथाओं से प्रेरित लेखापरीक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करें।

5. पारंपरिक वित्तीय ज्ञान को आधुनिक कर नीतियों के साथ एकीकृत करने के लिए निरंतर अनुसंधान करें।

संदर्भ References

अग्रवाल, एस. (2022). उदारीकृत अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष कराधान: कॉर्पोरेट रणनीति के लिए चुनौतियाँ और निहितार्थ। जर्नल फॉर रीअलैच थेरेपी एंड डेवलपमेंटल डाइवर्सिटीज, 5(2), 480-490।

आनंद, जी. एम. (2024). भारतीय आर्थिक विकास की गतिशीलता का अवलोकन: हालिया कर नीति सुधारों का एक आलोचनात्मक विश्लेषण। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5(4), 784-788।

भूपिन्द्र (2025). प्राचीन भारत में कराधान और राजस्व संग्रह। यूनिवर्सल रिसर्च रिपोर्ट्स।

दास, पी. (2022). भारत की विकसित होती कर प्रणाली: इसकी सफलताएँ और चुनौतियाँ। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 7(7), 118-124।

दास, आर., स्वरूप, एम., तिबरेवाल, ए., मजूमदार, आर., और त्यागी, बी. (2025). भारत का प्रत्यक्ष कर विकास। एकेडमी ऑफ मार्केटिंग स्टडीज जर्नल, 29(5), 1-14।

आयकर विभाग, भारत सरकार। प्रत्यक्ष कराधान का इतिहास। https://incometaxindia.gov.in

कौटिल्य (लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व). अर्थशास्त्र (आधुनिक अनुवाद)।

पिल्लई, एस. (2023). भारत में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर सुधारों का तुलनात्मक अध्ययन। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 4(2), 3699-3710।

साह, एस. के. (2023). भारतीय कर संरचना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। एशियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड कॉमर्स, 4(2), 22-25।

सरकार, के. बी. (1978). प्राचीन भारत में सार्वजनिक वित्त।

शेख इस्माइल, एस. एम., और राठौड़, आर. एन. (2025). प्राचीन भारतीय कराधान प्रणाली और आधुनिक राजकोषीय नीतियों के लिए इसके सबक। विद्याभारती इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल।

सिंह, ए., और रानी, बी. (2025). भारत में कराधान का एक ऐतिहासिक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिव्यू, 12(9)।

सुब्रमण्यन, आर. (2022). प्राचीन भारत में कराधान और राज्य वित्त। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ, मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटीज, 5(3), 252-262।

टैक्सगुरु. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित कराधान और कर प्रशासन। https://taxguru.in

थापर, आर. (2002). प्रारंभिक भारत: उत्पत्ति से 1300 ईस्वी तक। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 79-86

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 79-86

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता

Necessity of Indian Knowledge Tradition in Education System

डॉ. दीपेश कुमार पाठक / Dr. Dipesh Kumar Pathak

सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान), वाणिज्य विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Commerce, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

शास्त्रों में कहा गया है कि *'सा विद्या या विमुक्तये'* - विद्या वही है जो मनुष्य को मुक्त करे। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य के आंतरिक और बाहरी कल्मषों का पूर्ण प्रक्षालन कर एक आदर्श मानव का निर्माण करे। भारतीय संस्कृति में आचरण को विशेष महत्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समावेश की अनुशंसा दी गई है।

The scriptures say 'Sa Vidya Ya Vimuktaye' - that is knowledge which liberates. Education should completely purify a person's internal and external impurities and create an ideal human being. In Indian culture, conduct is given special importance. The National Education Policy 2020 recommends inclusion of Indian Knowledge Tradition at various levels of education.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, चरित्र निर्माण, समग्र विकास

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Education System, NEP 2020, Character Building, Holistic Development

प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति का चरित्र निर्माण और सर्वांगीण विकास करना है। आज की शिक्षा इस उद्देश्य से पूरी तरह भटक गई है। एक अच्छे इंसान का निर्माण शिक्षा की प्राथमिकता होनी चाहिए परंतु अब केवल करियर निर्माण और पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ है, जिसमें मानवीय मूल्य कहीं गुम हो गए हैं। भारत, संस्कृति और संस्कृत - ये तीनों शब्द प्रत्येक भारतीय के भाव हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में समावेशन

आज वैश्विक स्तर पर सर्व सम्मति से योग दिवस की स्वीकृति इसका प्रमाण है। वर्तमान में मनुष्य के स्वास्थ्य, विशेष करके मानसिक तनाव एवं अस्वस्थता का समाधान योग के द्वारा प्राप्त हो रहा है। भारत

में तो सहस्रों वर्षों से योग की परंपरा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में समस्या खड़ी ही न हो या खड़ी भी हो तो समाधान उपलब्ध हो - इस विशेषता के कारण भारतीय ज्ञान न सिर्फ भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समावेश की अनुशंसा की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रस्तावना में लिखा है–

"प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन करना मात्र नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था।"

प्रस्तावना के अंत में नीति के उद्देश्य के संदर्भ में लिखा है कि नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में, बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्य में भी होना चाहिए; साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए, जो मानव अधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हों, ताकि वे सही अर्थों में वैश्विक नागरिक बन सकें।

इसी तरह छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण तथा सभी स्तरों पर, यथा– पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम, परीक्षा-मूल्यांकन, शोध आदि में समग्रता की दृष्टि (Holistic Approach) की बात कही गई है। साथ ही भारतीय संवैधानिक एवं नैतिक मूल्यों, स्वदेशी, स्थानीय भाषा, कला-कारीगरी, परंपरा के समावेश तथा भारतीय संस्कृति, खेल एवं कला के एकीकरण की बात कही गई है।

इन अनुशंसाओं का क्रियान्वयन प्रमुख चुनौती है। स्वतंत्र भारत में अनेक वर्षों तक औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा की चर्चा न के बराबर थी। भारतीय ज्ञान को जानने-समझने वालों को अकादमिक क्षेत्र में किनारे कर दिया जाता था। आनंद की बात है कि पिछले लगभग एक दशक से देश में पुनः चर्चा प्रारंभ हो गई है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को प्राथमिकता देने के बाद इसको अधिक गति मिल गई है और इस हेतु सकारात्मक वातावरण भी बना है।

नई शिक्षा नीति में निम्न मूलभूत सिद्धांत:

1. सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा का विकास।

2. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्तर का शोध।
3. शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा निरंतर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत समीक्षा।
4. हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना।
5. कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं आदि के बीच कोई स्पष्ट अलगाव न हो।
6. रचनात्मक और तार्किक सोच तथा नवाचार को प्रोत्साहित करना।
7. बहु-भाषिकता और अध्ययन-अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन।
8. जीवन कौशल, जैसे आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन।
9. सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर।
10. शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया का केंद्र मानना।

नई शिक्षा नीति के लाभ:

1. छात्रों को इतना कुशल और हुनरमंद बनाया जायेगा कि उनके भविष्य के साथ देश का भी विकास हो सके।
2. पांचवीं कक्षा तक छात्रों की भाषा, गणित और सामान्य ज्ञान के साथ-साथ पारस्परिक कौशल (Interactive Skills) बढ़ाने पर जोर दिया जायेगा।
3. छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों को बहु-आयामी पाठ्यक्रम (Multidisciplinary Courses) के माध्यम से प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जायेगा।
4. नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए भी बहु-आयामी पाठ्यक्रम बनाये जायेंगे।
5. तीन-चार वर्षों की स्नातक शिक्षा के दौरान छात्रों के पास प्रवेश एवं निकास हेतु अनेक विकल्प उपलब्ध होंगे।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर छात्र न केवल अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहार की ओर अग्रसर होंगे, अपितु भविष्य के प्रति भी उल्लासित होंगे। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया तथा विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और

सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने मूल में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण के साथ शिक्षा के लिए अधिक समग्र, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से निहित दृष्टिकोण की ओर एक आदर्श बदलाव को दर्शाती है। यदि सही भावना व दृष्टिकोण से इसे भारतीय शिक्षा प्रणाली में अपनाया जाता है, तो निश्चित ही दूरगामी अनुकूल परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। साथ ही भारत की समृद्ध भारतीय परंपरा की विरासत को स्वीकार करने से, यह नीति शिक्षार्थियों की एक अधिक प्रबुद्ध और सशक्त पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी, जो देश के विकास और वैश्विक जुड़ाव में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार है।

संदर्भ (References)

Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*.

वैदिक साहित्य एवं उपनिषद

आलेख - कुबेर सिंह गुरुपंच, राजीव चंद्राकर

नई शिक्षा नीति-2020

अतुल कोठारी - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारतीयता का पुनरुत्थान

डॉ. एल.बी. वाजपेयी - भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामायिक प्रवृत्तियाँ

क्रॉनिकल ईयरबुक-2023

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 87-90

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 87-90

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा में रोजगार के नए अवसर

New Employment Opportunities in Indian Knowledge Tradition

राजेश मधुकर सोनकुसरे / Rajesh Madhukar Sonkusare

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, कला एवं वाणिज्य नाइट कॉलेज, नागपुर

Assistant Professor, Department of History, Arts and Commerce Night College, Nagpur

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदोंए उपनिषदोंए पुराणों और शास्त्रों में निहित प्राचीन और विविध ज्ञान की एक प्रणाली है, जिसमें दर्षन, आध्यात्मिकता, विज्ञान, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों का समावेश है। यह परंपरा ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने का एक व्यवस्थित तरीका है । यह न केवल भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का संरक्षण करती है, बल्कि आधुनिक अनुसंधान और जीवन के सभी पहलुओं को समग्र रूप से देखने पर भी जोर देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में रोजगार के अवसर शिक्षा, कला, विज्ञान और पारंपरिक शिल्पों में निहित हैं। यह ज्ञान परंपरा न केवल पारंपरिक व्यवसायों को मजबूत करती है, बल्कि आधुनिक उद्योगों के लिए भी नए रास्ते खोलती है, जैसे कि सांस्कृतिक पर्यटनए अनुसंधान और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों पर आधारित प्रबंधन और प्रौद्योगिकी। भारतीय ज्ञान परंपरा में रोजगार के कई अवसर मौजूद हैं, जैसे कि पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करके टिकाऊ कृषि (जैविक खेती), आयुर्वेद, योग और ध्यान जैसे क्षेत्रों में करियर बनाना। इसके अतिरिक्त, भारतीय विरासत, संस्कृति और साहित्य के संरक्षण और प्रचार से संबंधित क्षेत्र जैसे पुरातात्विक स्थलों, कला, संगीत और संग्रहालयों में भी रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा पर ही आधारीत है। इसके तहत रोजगार के कई अवसर प्रदान करे ऐसी षिक्षा पर जोर दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में रोजगार के कई अवसर मौजूद हैं, जैसे कि पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करके टिकाऊ कृषि (जैविक खेती), आयुर्वेद, योग और ध्यान जैसे क्षेत्रों में करियर बनाना। इसके अतिरिक्त, भारतीय विरासत, संस्कृति और साहित्य के संरक्षण और प्रचार से संबंधित क्षेत्र जैसे पुरातात्विक स्थलों, कला, संगीत और संग्रहालयों में भी रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं।

The Indian Knowledge Tradition is a system of ancient and diverse knowledge embedded in the Vedas, Upanishads, Puranas, and Shastras, encompassing philosophy, spirituality, science, ethics, and social values. This tradition provides a structured method for transmitting knowledge from generation to generation. It not only preserves India's cultural and intellectual heritage but also emphasizes a holistic view of modern research and all aspects of life. Employment opportunities within the Indian Knowledge Tradition are rooted in education, arts, sciences, and traditional crafts. This knowledge system not only strengthens traditional occupations but also opens new avenues for modern industries, such as cultural tourism, research, and management and technology based on traditional knowledge systems. There are

numerous employment opportunities within the Indian Knowledge Tradition, such as building careers in sustainable agriculture (organic farming), Ayurveda, yoga, and meditation by applying traditional knowledge. In addition, sectors related to the preservation and promotion of Indian heritage, culture, and literature—such as archaeological sites, arts, music, and museums—are also generating employment opportunities. The National Education Policy 2020 is based on the Indian Knowledge Tradition. It emphasizes education that provides multiple employment opportunities. Within the Indian Knowledge Tradition, there are many avenues for employment, including sustainable agriculture (organic farming), Ayurveda, yoga, and meditation. Furthermore, fields related to the conservation and promotion of Indian heritage, culture, and literature—such as archaeological sites, arts, music, and museums—are also creating employment opportunities..

मुख्य शब्दः भारतीय, ज्ञान, परंपरा, रोजगार, शिक्षा, कला, विज्ञान

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Employment, Ayurveda, Yoga, Cultural Tourism, NEP 2020

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास वेदों से शुरू होकर उपनिषदों, पुराणों और विभिन्न शास्त्रों के माध्यम से विकसित हुआ है। यह एक समृद्ध और विविध परंपरा है जिसमें दार्शनिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और सामाजिक चिंतन शामिल है। इस परंपरा में गणित, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, राजनीति, और साहित्य जैसे कई क्षेत्रों का ज्ञान शामिल है, जो ग्रंथों और मौखिक परंपरा के माध्यम से फैला है। आधुनिक काल में, इस ज्ञान को पुनर्जीवित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा रोजगार के कई अवसर प्रदान करती है, जो न केवल पारंपरिक शिल्प और कलाओं को जीवित रखती है, बल्कि उन्हें आधुनिक संदर्भ में ढालकर नए व्यावसायिक अवसर भी उत्पन्न करती है। सदियों पुरानी यह परंपरा आधुनिक युग की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है और यह रोजगार सृजन, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा प्रमुख चरणः

वैदिक कालः यह परंपरा वेदों के संकलन से शुरू होती है, जिनमें ज्ञान के विभिन्न पहलुओं का वर्णन है।

- **उपनिषद कालः** उपनिषदों ने भारतीय दर्शन की नींव रखी और ज्ञान की जिज्ञासा को तर्क और अनुभव के माध्यम से आगे बढ़ाया।
- **शास्त्रीय और महाकाव्य कालः** इस काल में महाभारत, रामायण, अर्थशास्त्र, और चरक-सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथ रचे गए, जिन्होंने राजनीति, समाजशास्त्र और चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- **भक्ति आंदोलनः** संत साहित्य ने ज्ञान को आम लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें कबीर, तुलसीदास और मीराबाई जैसे संतों ने लोक भाषाओं में रचनाएँ कीं।
- **आधुनिक कालः** ब्रिटिश काल में इस परंपरा को नुकसान हुआ, लेकिन अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे प्रयासों के माध्यम से इसे पुनर्जीवित किया जा रहा है।

मुख्य योगदानः

विज्ञान और गणित: वैदिक गणित और खगोल विज्ञान के सिद्धांतों में विज्ञान के गहरे बीज पाए जाते हैं। **चिकित्साः** चरक और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथों में आयुर्वेद और चिकित्सा विज्ञान का महत्वपूर्ण ज्ञान है।

दर्शन और आध्यात्मः उपनिषदों और विभिन्न दर्शनों ने आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन को समृद्ध किया।

सामाजिक और सांस्कृतिकः यह परंपरा सामाजिक समरसता, नैतिकता और जीवन जीने के तरीकों में भी परिलक्षित होती है।

ज्ञान परंपराः

ज्ञान परंपरा किसी समाज या संस्कृति की सदियों से चली आ रही ज्ञान और शिक्षा की समग्र और विविध प्रणाली है। यह न केवल धार्मिक और दार्शनिक विचारों, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान, साहित्य, नैतिकता और विज्ञान को भी शामिल करती है, जो लिखित ग्रंथों और मौखिक संचार के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें वेद, उपनिषद, शास्त्र, आयुर्वेद और अन्य सांस्कृतिक और शैक्षणिक प्रणालियां शामिल हैं।

भारतीय ज्ञान परंपराः

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों, उपनिषदों, पुराणों और शास्त्रों में निहित प्राचीन और विविध ज्ञान की एक प्रणाली है, जिसमें दर्शन, आध्यात्मिकता, विज्ञान, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों का समावेश है। यह परंपरा ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने का एक व्यवस्थित तरीका है। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का संरक्षण करती है, बल्कि आधुनिक अनुसंधान और जीवन के सभी पहलुओं को समग्र रूप से देखने पर भी जोर देती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की मुख्य विशेषताएंः

- भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन और समृद्ध है। यह वेदों से शुरू होकर उपनिषदों, पुराणों, और संतों के माध्यम से विकसित हुई है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा केवल दार्शनिक या आध्यात्मिक नहीं है, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को भी समग्रता से देखती है।
- भारतीय ज्ञान परंपरामें विज्ञान के क्षेत्र जैसे जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, आयुर्वेद और खगोल विज्ञान शामिल हैं, जो मानव कल्याण के लिए दर्शन और आध्यात्मिकता के साथ एकीकृत हैं।
- भारतीय ज्ञान परंपरा 'वसुधैव कुटुंबकम'जैसे सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देती है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा परंपरा में ज्ञान का विकास प्रयोग, अवलोकन और अनुभव के माध्यम से हुआ है।
- भारतीय ज्ञान परंपरामें आयुर्वेद, योग और स्वस्थ जीवन शैली पर विशेष जोर दिया गया है, जिसमें 100 वर्ष तक स्वस्थ जीवन जीने की अवधारणा शामिल है।

ज्ञान प्राप्ति से रोजगार में फायदेः

ज्ञान प्राप्ति से रोजगार में कई फायदे होते हैं, जैसे कि बेहतर समस्या-समाधान कौशल, बढ़ी हुई आलोचनात्मक सोच, और नई जानकारी को समझने और उसका उपयोग करने की क्षमता। यह रोजगार पाने, कार्य-प्रबंधन में स्वायत्तता और व्यावसायिक प्रगति के लिए आवश्यक है।

ज्ञान प्राप्ति के अनेक लाभ होते है। आपकी कार्यशील स्मृति में नई जानकारी को संसाधित करने के लिए जगह खाली करके लंबित समस्याओं को हल करने में मदद कर सकता है।ज्ञान एक भंडार की तरह काम करता है, जो आपकी आलोचनात्मक सोच और तर्कशक्ति को बढ़ाता है। ज्ञान और विवेक आपको सही और गलत के बीच अंतर करने और कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं।आधारित कर्मचारी स्वायत्त रूप से कार्य करने और अपने करियर में आगे बढ़ने की अधिक संभावना रखते हैं। ज्ञान और अनुभव के माध्यम से लोग अपने श्रम को बेहतर बना सकते हैं और अपने पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति अपनी क्षमताओं और रुचियों के आधार पर कार्य-प्रबंधन करने के लिए अधिक स्वायत्त हो सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने के मार्गः

भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने के लिए आप इस परंपरा के सिद्धांतों को आधुनिक रोजगारों से जोड़ सकते हैं, जैसे कि कौशल विकास, उद्यमिता, और पारंपरिक कलाओं व शिल्प में रोजगार के अवसर तलाशना। इसके अतिरिक्त, आप अपनी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करके चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढ़ा सकते हैं, जो आपको एक सफल पेशेवर बनने में मदद कर सकता है।

रोजगार प्राप्त करने के तरीकेः

- **स्व-रोजगारः** पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली के व्यावसायिक सिद्धांतों को अपनाकर आप अपने व्यवसाय को सफल बना सकते हैं, जैसे कि अचार या अन्य खाद्य उत्पादों का व्यवसाय।
- **कौशल विकासः** विभिन्न गुरुकुलों और संस्थानों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित कौशल, जैसे कि योग, आयुर्वेदिक चिकित्सा, या अन्य पारंपरिक कलाओं में प्रशिक्षित होकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।
- **आधुनिक शिक्षा में एकीकरणः** भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा में शामिल करें, जैसे कि योग और ध्यान से एकाग्रता और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना, जो आपको किसी भी क्षेत्र में एक बेहतर प्रदर्शन करने वाला बना सकता है।
- **सामुदायिक और सामाजिक कार्यः** एनसीसी और एनएसएस जैसे संगठनों से जुड़कर सामुदायिक सेवा के माध्यम से अनुभव प्राप्त करें और सामाजिक कार्यों में रोजगार के अवसर तलाशें, जैसे कि ग्रामीण कृषि और उद्योगों में नवाचार।
- **सरकारी योजनाएंः** सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं, जैसे कि कौशल विकास पहल योजना या मुद्रा लोन, का लाभ उठाएं। यह आपको एक उद्यमी या कुशल कर्मचारी के रूप में रोजगार पाने में मदद कर सकता है।
- **कला और संस्कृतिः** कला, साहित्य, संगीत, नृत्य, और पारंपरिक शिल्पकला जैसे क्षेत्रों में अपनी रुचि और कौशल को विकसित करके रोजगार प्राप्त करें। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसमें रोजगार की बहुत संभावनाएं हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा के लाभः

- भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन से छात्रों के चरित्र का निर्माण होता है और उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है।
- यह परंपरा विभिन्न क्षेत्रों में नए रोजगार के अवसर पैदा करती है, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, और वाणिज्य।

- भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाकर और उसका उपयोग करके आप वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं और अपने करियर में तरक्की कर सकते हैं।
- अंतरराष्ट्रीय अवसरों का लाभ उठाएंः भारत की सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत करें, जिससे आपको विदेशी विश्वविद्यालयों और संगठनों में रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।
- यह परंपरा केवल करियर के लिए ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षः

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिकता या दर्शन तक सीमित नहीं हैए बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान और कौशल का स्रोत है। आज के समय में इस परंपरा से जुड़े अनेक क्षेत्रों में रोजगार और आत्मनिर्भरता के अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, संस्कृत, भारतीय संगीत, नाट्यकला, हस्तशिल्प, पारंपरिक कृषि और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी विशेषज्ञों की मांग लगातार बढ़ रही है।इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन और अनुप्रयोग से युवाओं को सांस्कृतिक मूल्यों के साथ.साथ आधुनिक युग में भी रोजगारए उद्यमिता और वैश्विक पहचान प्राप्त करने के अनेक अवसर मिलते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा रोजगार के अवसरों के लिए एक व्यापक और बहुआयामी मंच प्रदान करती है। यह न केवल रोजगार के नए अवसर पैदा करती है, बल्कि यह सुनिश्चित करती है कि ये अवसर स्थायी और टिकाऊ हों, जो देश के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक पहचान दोनों में योगदान करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक रोजगार की दिशा में सेतु का कार्य कर रही हैए जो परंपरा और प्रगति दोनों को एक साथ जोड़ती है। इसही कारण से ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा पर ही आधारीत है। इसके तहत रोजगार के कई अवसर प्रदान करे ऐसी शिक्षा पर जोर दिया गया है।

संदर्भ (References)

Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*.

गौंड़,रा. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा. अनिल प्रकाशन.

ठाकुर प्रे; महाजन दि. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा प्रबुद्ध भारत. अनूराधा प्रकाशन.

राघव, रां (2022). प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास. आत्माराम ॲण्ड सन्स.

शर्मा, स. (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम. शिप्रा पब्लिकेशन.

गुप्ता, वि. (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा. जेनिक्स बुक्स पब्लिशर्स.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 91-97

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 91-97

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में पुरुषार्थों के माध्यम से विपणन प्रथाओं का अन्वेषणात्मक अध्ययन

An Exploratory Study of Marketing Practices through Purushārthas in the Context of Bharatiya Gyan Parampara

डॉ. लोकेन्द्र विक्रम सिंह,[1] अनिमेष पटेल[2], /Dr. Lokendra Vikram Singh,[1] Animesh Patel[2]

[1]प्राध्यापक, मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.), भारत

[1]Professor, Mandsaur University, Mandsaur (M.P.), India

[2]सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

[2]Assistant Professor, Department of Commerce, Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

पश्चिमी आर्थिक परंपराएं जो लाभ अधिकतमकरण, ग्राहक प्रेरणा और बाजार दक्षता को प्राथमिकता देती हैं, ने विपणन के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई है। हालांकि, इन रणनीतियों ने अनैतिक व्यवहार, अत्यधिक उपभोक्तावाद और पर्यावरणीय क्षति के बारे में चिंताएं भी उत्पन्न की हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा एक व्यापक दार्शनिक ढांचा प्रदान करती है जो नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं को आर्थिक गतिविधियों के साथ एकीकृत करती है। पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - इस परंपरा के मूल हैं। यह अध्ययन पुरुषार्थों के परिप्रेक्ष्य से विपणन तकनीकों का अन्वेषण करता है।

Western economic traditions that prioritize profit maximization, customer persuasion, and market efficiency have played a major role in the development of marketing as an academic study and managerial practice. These strategies have aided in economic growth, but they have also sparked worries about unethical behavior, excessive consumerism, a decline in trust, and environmental damage. As a result, academics have placed more emphasis on the necessity of marketing frameworks that are ethical, value-based, and culturally grounded. The Bharatiya Gyan Parampara provides a comprehensive philosophical framework that integrates the ethical, social, and spiritual aspects of life with economic activities. The idea of Purushārthas—Dharma (righteousness), Artha (financial prosperity), Kāma (desire and delight), and Moksha (liberation and complete well-being)—is fundamental to this tradition. Together, these four objectives direct societal structure and human behavior, including trade, business, and consumption. Using a literature-based exploratory approach, this study looks at marketing techniques from the Purushārthas' perspective. The study conceptualizes marketing as a morally rooted and socially responsible activity rather than a solely transactional role, drawing on both modern marketing literature and classical Indian philosophical sources. The study concludes that incorporating Purushārthas into contemporary marketing theory can encourage moral behavior, sustainable societal well-being, balanced wealth generation, and responsible customer satisfaction.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, पुरुषार्थ, धर्म, नैतिक विपणन, सतत विपणन

Keywords: Bharatiya Gyan Parampara, Purushārthas, Dharma, Ethical Marketing, Sustainable Marketing

INTRODUCTION

Consumer behavior, market structures, and societal ideals are all significantly influenced by marketing. Identifying customer needs, influencing preferences, and attaining organizational profitability are the main goals of modern marketing frameworks. Although these strategies have improved consumer choice and market efficiency, they have also led to moral dilemmas like misleading advertising, consumer manipulation, materialistic value systems, and environmental damage.

Stakeholder theory, relationship marketing, ethical marketing, and sustainable marketing frameworks have emerged as a result of academics' growing recognition of the shortcomings of profit-centric marketing approaches. Nonetheless, a lot of these strategies still function under an instrumental rationality that puts financial results ahead of the overall welfare of people.

The Bharatiya Gyan Parampara, on the other hand, offers a holistic perspective in which moral and spiritual principles are intrinsically connected to economic activity. Indian philosophical traditions place more emphasis on balance and moral control over economic endeavors than they do on material wealth. A systematic framework that balances material achievement with moral duty and spiritual development is provided by the Purushārthas ideology.

In order to build a conceptual understanding of value-based marketing based on Bharatiya philosophical philosophy, this study uses the Purushārtha framework to examine marketing activities. It does this by relying solely on available literature.

OBJECTIVES OF THE STUDY

The research seeks to:

Analyze Purushārthas' philosophical underpinnings in the context of the Bharatiya Gyan Parampara.

Examine the relationship between marketing strategies and Dharma, Artha, Kāma, and Moksha.

Examine current marketing literature from a moral and ethical standpoint.

Consider marketing as a socially conscious and ethically embedded endeavor.

Provide a framework for sustainable marketing based on Purushārtha.

LITERATURE REVIEW

Human Values and the Bharatiya Gyan Parampara

Integrating the moral, material, emotional, and spiritual aspects of life is a key component of Indian philosophy. According to Radhakrishnan (1951), Bharatiya philosophy promotes balanced living

based on moral values rather than rejecting the material world. Therefore, economic action is only seen as significant when it is consistent with higher ideals.

Purushārthas as Life's Objectives

A thorough framework for human development is represented by the Purushārthas, which are Dharma, Artha, Kāma, and Moksha. These objectives are interconnected and must coexist peacefully. Artha and Kāma are legitimate pursuits but must function under the guidance of Dharma and ultimately contribute to Moksha.

Dharma and Ethical Conduct

Dharma represents righteousness, moral duty, and social order. In economic contexts, Dharma governs fair trade, honesty, accountability, and responsibility toward society. This concept provides a strong ethical foundation for marketing practices.

Economic Governance and Artha

A thorough grasp of markets, trade regulation, pricing, and consumer protection may be seen in Kautilya's Arthashastra (Shamasastry, 1915). The essay places a strong emphasis on the production of ethical riches and the role of the state in upholding market justice.

Indigenous Knowledge Systems and Ethics in Business

Indigenous knowledge systems incorporate moral duties into business operations. These systems prioritize social harmony and collective welfare, in contrast to value-neutral market approaches.

Marketing Ethics

According to Kotler and Keller (2016), long-term brand trust and organizational viability depend on ethical marketing strategies. Consumer mistrust and reputational harm are frequently the results of unethical behavior.

Symbolic Consumption and Consumer Desire

According to Belk (1988), objects have symbolic and emotional implications, and consumption is an extension of self-identity. This is consistent with Kāma, which acknowledges pleasure and desire as normal parts of human existence.

Conscious and Mindful Consumption

In response to excessive materialism, Sheth, Sethia, and Srinivas (2011) suggest mindful consumption. This strategy is in line with Moksha-oriented thinking, which places an emphasis on awareness and moderation.

Sustainability and Human Welfare

Schumacher (1973) challenges the idea of unrestricted growth and promotes economic structures that prioritize human welfare over excessive consumerism.

Fairness and Moral Argumentation

Sen (2009) highlights the importance of ethical frameworks like Dharma by emphasizing justice, fairness, and moral reasoning in economic decision-making.

Relationship Marketing

Morgan and Hunt (1994) identify trust and commitment as central elements of long-term marketing relationships, which align with dharmic principles of honesty and responsibility.

Stakeholder Theory

Freeman (1984) argues that businesses must consider the interests of all stakeholders, not just shareholders, reflecting the holistic orientation of Bharatiya philosophy.

Value-Based Marketing

Sheth and Parvatiyar (1995) advocate relationship and value-based marketing approaches that focus on long-term engagement rather than short-term transactions.

Eco-Friendly Promotion

In line with Moksha-oriented sustainability, Peattie and Belz (2010) place a strong emphasis on incorporating social and environmental concerns into marketing tactics.

Indian Management and Philosophy

Iyer (2018) emphasizes how important Bharatiya philosophical ideas are for developing moral and environmentally friendly management techniques.

RESEARCH METHODOLOGY

A qualitative, exploratory, and literature-based research methodology is used in this study.

Study Type: Conceptual and theoretical

Data Sources: Books, peer-reviewed journals, classic texts, and reliable secondary sources.

Method of Analysis: Interpretative synthesis and thematic analysis

Scope: Indigenous knowledge systems, consumer behavior, sustainability, and marketing ethics

Since the goal was theory development through literature integration, no primary data were gathered.

ANALYSIS AND DISCUSSION

Marketing Focused on Dharma

According to published research, Dharma offers the moral basis for marketing. Dharmic marketing must include social responsibility, fair pricing, honest communication, and respect for consumers. Exploitation and deceptive advertising are regarded as transgressions of moral order.

Marketing Focused on Artha

Artha gives economic expansion and wealth production legitimacy. Value generation, innovation, and organizational sustainability are all aided by marketing. Profit, however, needs to be socially beneficial and obtained ethically.

Marketing Focused on Kāma

Customer satisfaction, enjoyment, and experiential value are the main goals of Kāma-oriented marketing. Although desire is recognized as normal, it needs to be controlled to avoid excess and negative social effects.

Marketing Focused on Moksha

By encouraging sustainable development, long-term well-being, and mindful consumption, Moksha elevates marketing. It casts doubt on the notion that limitless consumption is the key to happiness.

FINDINGS

A systematic foundation for marketing ideas is offered by Bharatiya Gyan Parampara.

Dharma guarantees moral behavior and relationships built on trust.

Artha is in favor of prudent and lawful wealth generation.

Kāma improves customer pleasure while adhering to moral principles.

Moksha encourages total well-being and sustainability.

CONCLUSION

This study concludes that the Purushārtha framework of the Bharatiya Gyan Parampara can be used to meaningfully reinterpret marketing techniques based on a thorough analysis of the literature. This strategy incorporates ethics, economics, customer satisfaction, and spiritual well-being, in contrast to traditional profit-centric methods. The study confirms that traditional Indian knowledge provides insightful solutions for modern marketing issues, especially those pertaining to sustainability, ethical governance, and trust.

RECOMMENDATIONS

Include Bharatiya Gyan Parampara in marketing research and instruction.

Promote ethical principles based on Dharma in marketing practices.

Encourage people to make thoughtful purchases.

Align marketing tactics with the long-term welfare of society.

Test Purushārtha-based marketing models through empirical research.

REFERENCES

Belk, R. W. (1988). Possessions and the extended self. *Journal of Consumer Research*, 15(2), 139–168.

Bilimoria, P., Prabhu, J., & Sharma, R. (Eds.). (2007). *Indian Ethics: Classical Traditions and Contemporary Challenges* (Vol. 1). Ashgate Publishing.

Freeman, R. E. (1984). *Strategic Management: A Stakeholder Approach*. Pitman.

Iyer, R. (2018). Indian philosophy and management: Relevance for contemporary business. *Journal of Indian Management*, 15(3), 45–52.

Kautilya. (1915). *Arthashastra* (R. Shamasastry, Trans.). Government Press.

Kotler, P., & Keller, K. L. (2016). *Marketing Management* (15th ed.). Pearson.

Morgan, R. M., & Hunt, S. D. (1994). The commitment-trust theory of relationship marketing. *Journal of Marketing*, 58(3), 20–38.

Peattie, K., & Belz, F. M. (2010). Sustainability marketing: A global perspective. *Journal of Marketing Management*, 26(1–2), 1–22.

Radhakrishnan, S. (1951). *Indian Philosophy* (Vol. 1). George Allen & Unwin.

Schumacher, E. F. (1973). *Small Is Beautiful: Economics as if People Mattered*. Harper & Row.

Sen, A. (2009). *The Idea of Justice*. Harvard University Press.

Sheth, J. N., & Parvatiyar, A. (1995). Relationship marketing in consumer markets: Antecedents and consequences. *Journal of the Academy of Marketing Science*, 23(4), 255–271.

Sheth, J. N., Sethia, N. K., & Srinivas, S. (2011). Mindful consumption: A customer-centric approach to sustainability. *Journal of Public Policy & Marketing*, 30(1), 21–33.

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 98-103

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 98-103

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक महत्व

Social, Cultural and Educational Significance of Indian Knowledge Tradition

डॉ. देवेंद्र कुमार कोली / Dr. Devendra Kumar Koli

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय स्नातक महाविद्यालय, करैरा, जिला - शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत

Assistant Professor, Department of Sociology, Government Degree College, Karera, District - Shivpuri, Madhya Pradesh, India

---

सारांश (Abstract)

भारत प्राचीन काल से हीं मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परम्पराओं का देश रहा है। भारत अपनी संस्कृतिक विशेषता वसुधैव कुटुंबकम के आधार पर पूरी दुनिया को एक परिवार मानता है। भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है वेदों से शुरू होकर उपनिषदों, दर्शनों, महाकाव्यों और अन्य ग्रंथों के माध्यम से विकसित हुआ है। यह परंपरा केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक ही नहीं, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा, अर्थशास्त्र और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी समाहित करती है। इसका प्रसार संतों और विद्वानों द्वारा किया गया और आधुनिक युग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत इसे पुनर्जीवित करने पर बल दिया जा रहा है। ब्रिटिश शासन के दौरान पाश्चात्य ज्ञान प्रणाली के प्रभाव से इस परंपरा को आघात पहुँचा। हालांकि, अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत इसे पुनर्जीवित और संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारतीय ज्ञान परम्पराओं के अध्ययन से भारतीय समाज की मूल संरचना के बारे में जानकारी मिलेगी जिससे दार्शनिक आधार पर अंतरदृष्टि विकसित होगी। विद्यार्थियों में भारतीय परम्पराओं की व्यापक समझ विकसित होगी जो वर्तमान में हमारे समाजीकरण से विलुप्त है। समाजीकरण एवं सभ्यता के विकास ने भारतीय ज्ञान परम्परा की ऊर्जा को कम किया है जिसे पुनर्जीवित करना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परम्परा का उल्लेख प्राचीन काल के मुख्य धार्मिक स्त्रोतों में वर्णन है परन्तु 21वीं सदी में समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ा का अध्ययन करना, मनुष्य का निर्माण करने वाली शिक्षा व्यवस्था को विकसित करना तथा सही और सारगर्भित इतिहास एवम लोक परंपराओं और लोक नायकों को पाठ्यक्रम में शामिल होने से विद्यार्थियों के जीवन में गर्व एवम उत्तम जीवन को जीने का मार्ग प्रशस्त होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करती है, विज्ञान और दर्शन का समन्वय करती है, तथा स्थायी और समग्र जीवन शैली को बढ़ावा देती है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर केंद्रित है, बल्कि स्वास्थ्य, पर्यावरण, कला और अर्थशास्त्र जैसे व्यावहारिक क्षेत्रों में भी

प्रासंगिक है। निस्संदेह भारतीय ज्ञान परम्परा एक गौरवशाली विरासत है इसको समझने, खोजने तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय संदर्भों में स्थापित करने की जरूरत है। परन्तु आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में अन्य वैश्विक ज्ञान परम्पराओं को बगैर सही ढंग से सत्यता तथा तार्किकता की कसौटी पर कसे पूरी तरह से खारिज करना तथा भारतीय ज्ञान परम्परा को समग्रता में अपना लेना उचित नहीं होगा। असल चुनौती प्राचीन ज्ञान विज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता के संदर्भों में पुनर्व्याख्या करने, समझने तथा व्यवहार में लाने की है। विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिए इन्हें पढ़ाना चाहिए।

India has been a country of human values and distinctive scientific traditions since ancient times. Based on its cultural characteristic "Vasudhaiva Kutumbakam," India considers the entire world as one family. The Indian knowledge tradition is thousands of years old, developing from the Vedas through the Upanishads, philosophies, epics, and other texts. This tradition encompasses not only spiritual and philosophical aspects but also science, mathematics, medicine, economics, and various aspects of social life. It was propagated by saints and scholars, and in the modern era, the National Education Policy (NEP) 2020 emphasizes its revival. During British rule, this tradition was adversely affected by the Western knowledge system. However, efforts are now being made to revive and preserve it under the National Education Policy 2020.

The study of Indian knowledge traditions will provide information about the fundamental structure of Indian society, thereby developing philosophical insights. Students will develop a comprehensive understanding of Indian traditions, which is currently missing from our socialization process. The development of socialization and civilization has diminished the energy of Indian knowledge tradition, which needs to be revived. The Indian knowledge tradition is mentioned in ancient religious sources, but studying its impact on 21st-century society, developing an education system that builds human character, and including authentic history, folk traditions, and folk heroes in the curriculum will pave the way for pride and a better life for students.

The Indian knowledge tradition preserves ancient cultural heritage, synthesizes science and philosophy, and promotes a sustainable and holistic lifestyle. This tradition is not only focused on spiritual and moral values but is also relevant in practical fields such as health, environment, art, and economics. Undoubtedly, the Indian knowledge tradition is a glorious heritage that needs to be understood, explored, and established in social and national contexts. However, in the age of modern science, it would not be appropriate to completely reject other global knowledge traditions without properly testing them on the criteria of truth and logic, nor to wholly adopt the Indian knowledge tradition in its entirety. The real challenge lies in reinterpreting, understanding, and applying ancient knowledge and science in the context of modern scientific perspectives and rationality. For world heritage, these rich legacies should not only be nurtured and preserved for future generations but should also be taught through our education system.

प्रमुख शब्द (Keywords): भारतीय, ज्ञान, परंपरा, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, नई शिक्षा नीति, योगदान, महत्त्व

Keywords: Indian, Knowledge, Tradition, Social, Cultural, Educational, NEP 2020, Contribution, Significance

प्रस्तावना (Introduction)

भारत प्राचीन काल से हीं मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परम्पराओं का देश रहा है। भारत अपनी संस्कृतिक विशेषता वसुधैव कुटुंबकम के आधार पर पूरी दुनिया को एक परिवार मानता है। भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है जिसमें आधुनिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, प्रबंध, वाणिज्य सहित सभी विषयों के लिए अद्भुत खजाना है। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान परंपरा और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थी जिसमें मुख्य रूप से उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति ग्रन्थ, दर्शन, धर्मग्रन्थ, भगवत गीता आदि के अध्ययन के द्वारा वर्णित ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में समाहित करके भारतीय समाज की मूल संरचना के बारे में एक धारणा मिलेगी साथ हीं सामाजिक और ऐतिहासिक आधार पर समाज और सामाजिक संस्थाओं के बुनियादी दृष्टिकोण को व्यापकता मिलेगी।

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास वेदों से शुरू होकर उपनिषदों, दर्शनों, महाकाव्यों और अन्य ग्रंथों के माध्यम से विकसित हुआ है। यह परंपरा केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक ही नहीं, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा, अर्थशास्त्र और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी समाहित करती है। इसका प्रसार संतों और विद्वानों द्वारा किया गया और आधुनिक युग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत इसे पुनर्जीवित करने पर बल दिया जा रहा है।

प्रमुख चरण और विकास (Historical Development)

वैदिक काल: भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारंभ वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) से माना जाता है। इनमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा और दर्शन के गहरे बीज पाए जाते हैं।

उपनिषद और दर्शन: उपनिषदों और षड्दर्शनों (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत) ने ज्ञान की जिज्ञासा को तर्क और अनुभव के माध्यम से आगे बढ़ाया।

महाकाव्य और शास्त्र: महाभारत, रामायण, अर्थशास्त्र, चरक और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथों ने राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थव्यवस्था, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मध्यकालीन और भक्ति आंदोलन: कबीर, तुलसीदास, मीराबाई और गुरु नानक जैसे संतों ने लोकभाषा में ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाया, सामाजिक बुराइयों पर प्रहार किया और समानता व भाईचारे का संदेश दिया।

आधुनिक काल: ब्रिटिश शासन के दौरान पाश्चात्य ज्ञान प्रणाली के प्रभाव से इस परंपरा को आघात पहुँचा। हालांकि, अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत इसे पुनर्जीवित और संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन का उद्देश्य/आवश्यकता

1. भारतीय ज्ञान परम्पराओं के अध्ययन से भारतीय समाज की मूल संरचना के बारे में जानकारी मिलेगी जिससे दार्शनिक आधार पर अंतरदृष्टि विकसित होगी।

2. भारतीय ज्ञान परम्पराओं के अध्ययन की सहायता से विद्यार्थियों में भारतीय परम्पराओं की व्यापक समझ विकसित होगी जो वर्तमान में हमारे समाजीकरण से विलुप्त है!

3. समाजीकरण एवं सभ्यता के विकास ने भारतीय ज्ञान परम्परा की ऊर्जा को कम किया है जिसे पुनर्जीवित करना आवश्यक है।

4. भारतीय ज्ञान परम्परा का उल्लेख प्राचीन काल के मुख्य धार्मिक स्त्रोतों में वर्णन है परन्तु 21वीं सदी में समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ा का अध्ययन करना।

5. भारतीय ज्ञान परम्परा द्वारा मनुष्य का निर्माण करने वाली शिक्षा व्यवस्था को विकसित करना।

6. सही और सारगर्भित इतिहास एवम लोक परंपराओं और लोक नायकों को पाठ्यक्रम में शामिल होने से विद्यार्थियों के जीवन में गर्व एवम उत्तम जीवन को जीने का मार्ग प्रशस्त होगा।

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं समाजशास्त्र

भारतीय ज्ञान परम्परा तथा समाजशास्त्र का सम्बन्ध अत्यंत प्राचीन है क्योंकि एक विषय के रूप में समाजशास्त्र का जन्म 1838 में हुआ है जिसके जनक अगस्त कॉम्टे हैं परन्तु जिस विषय वस्तु - परिवार, विवाह, नातेदारी, वर्ण, कर्म, संस्कार आदि का इसमें अध्ययन किया जाता है वह हजारों वर्ष पुरानी है जिसका वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, उपनिषद आदि में उल्लेख है क्योंकि समाज तो तब भी था और समाज का नियंत्रण, समाजीकरण परम्पराओं द्वारा ही होता था। भारतीय ज्ञान परम्परा का आधुनिक दृष्टिकोण से अध्ययन कर हम एक बार फिर से विश्वगुरु बन सकते हैं जिसके लिए हमें इसे समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम में समाहित कर इसे आत्मसात करने की जरूरत है!

भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक योगदान

भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक योगदान नैतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और बौद्धिक क्षेत्रों में है। इसने नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण पर जोर दिया, सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दिया और ज्ञान को आम

जनता तक पहुँचाया। इस परंपरा ने जाति-पाँति जैसी सामाजिक विषमताओं पर प्रहार किया और प्रेम तथा भाईचारे का संदेश दिया, जिससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिला।

नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का प्रसार: इस परंपरा ने नैतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों को बढ़ावा दिया, जो तुलसीदास, कबीर और मीराबाई जैसे कवियों की रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसने चरित्र निर्माण और आत्मविश्वास को सशक्त करने में भी योगदान दिया।

सामाजिक सुधार: भक्ति आंदोलन जैसे सुधार आंदोलनों ने जाति प्रथा, पाखंड और सामाजिक असमानताओं पर सवाल उठाए और प्रेम, समानता व भाईचारे का संदेश दिया।

ज्ञान का जन-जन तक प्रसार: हिंदी साहित्य ने वेदों, उपनिषदों और अन्य शास्त्रीय ग्रंथों को लोकभाषा में प्रस्तुत करके ज्ञान को आम जनता तक पहुँचाया। इससे ज्ञान का स्तर बढ़ा और शिक्षा का प्रसार हुआ।

सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का विकास: इसने सांस्कृतिक मूल्यों और लोक संस्कृति को संजोया। आधुनिक युग में, इसने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया और राष्ट्रीय चेतना तथा एकता को बढ़ावा दिया।

अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन: अनुभव, अवलोकन और प्रयोग पर आधारित यह ज्ञान परंपरा, नौकायन जैसी कलाओं को विकसित करने और गणित, ज्यामिति व आयुर्वेद जैसे विषयों के विकास में सहायक रही।

सामाजिक समरसता और सद्भाव: यह परंपरा सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने में सहायक है, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व इसमें है कि यह प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करती है, विज्ञान और दर्शन का समन्वय करती है, तथा स्थायी और समग्र जीवन शैली को बढ़ावा देती है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर केंद्रित है, बल्कि स्वास्थ्य, पर्यावरण, कला और अर्थशास्त्र जैसे व्यावहारिक क्षेत्रों में भी प्रासंगिक है।

सांस्कृतिक और दार्शनिक महत्व

सांस्कृतिक संरक्षण: यह परंपरा सदियों से चली आ रही हमारी सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर का संरक्षण और पुनरुत्थान करती है।

समग्र दृष्टिकोण: यह व्यक्ति को समाज से, स्थूल को अमूर्त से और सांसारिकता को आध्यात्मिकता से जोड़ती है, जिससे जीवन के हर पहलू का समग्र अध्ययन संभव होता है।

नैतिक मार्गदर्शन: इसमें विभिन्न दार्शनिक ग्रंथों और कथाओं के माध्यम से सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक सिद्धांतों का मार्गदर्शन मिलता है, जो समकालीन समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकता है।

सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व

स्थिरता और सामंजस्य: यह प्रकृति और पर्यावरण के साथ सामंजस्य पर केंद्रित है, और जैविक खेती, फसल चक्र और वर्षा जल संचयन जैसी स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देती है।

आर्थिक स्थिरता: पारंपरिक ज्ञान आधारित स्वदेशी उद्योग जैसे कृषि, मछली पालन, और हर्बल औषधियाँ आर्थिक स्थिरता और बेहतर जीवन स्तर की कुंजी हो सकती हैं।

सतत विकास: यह परंपरा असमानता, जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा जैसी चुनौतियों से निपटने में सहायक है और सतत विकास की ओर एक मार्ग प्रदान करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा भारतीय ज्ञान परम्परा

भारतीय ज्ञान परंपरा ने गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान जैसे कई विज्ञानों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वैदिक गणित जैसी पारंपरिक पद्धतियाँ आज भी आधुनिक गणनाओं में सहायक हो सकती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसे एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में अपनाती है, जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करना है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली से अपेक्षा है कि हमें भारतीय ज्ञान परंपरा पर स्वाभिमान हो और उसे पर हम पुनः वैज्ञानिक चिंतन करें। अतः आवश्यकता है इसके सैद्धांतिक आधार को समझने की। भारत वैदिक काल से ही ज्ञान का उपासक रहा है। ज्ञान की इस परिवेश में तंत्र, विज्ञान, इतिहास आदि को भारत ने अपनी दृष्टि से समझा। इस विद्या से शिक्षा तक लाकर सरल रूप दिया। इसको भारत की पुरातन शिक्षा नीति के रूप में उतारा गया। इस पर भारत का अपना हजारों वर्ष का अनुभव है।

इस शिक्षा पद्धति से पिछले 75 वर्षों में भारतीय ज्ञान परंपरा स्वामी समाप्त होने लगी। वर्तमान में परंपरा के महत्वपूर्ण शब्द 'विद्या' उसकी संकल्पना को भी अनदेखा किया। साथ ही जिस 'शिक्षा' शब्द का भारतीय ज्ञान परंपरा में केवल वैदिक ज्ञान के लिए प्रयुक्त होता था उसको केवल भौतिक ज्ञान तक सीमित कर दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समावेश की अनुशंसा की गई है। नीति के उद्देश्य के संदर्भ में लिखा है कि नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्य के साथ-साथ ज्ञान, कौशल, मूल्यों एवं सोच में भी होना चाहिए। साथ ही नैतिक मूल्यों, स्वदेशी, स्थानीय भाषा, कला, भारतीय संस्कृति - इस प्रकार की अनेक अनुशंसाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में की गईं हैं। हाल के वर्षों में भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा ने गति प्राप्त की है जिसका उद्देश्य भारत की प्राचीन परम्पराओं और ज्ञान को पुनर्जीवित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारत, भारतीय ज्ञान परम्पराओं के आधार पर अपनी शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन के लिए एक परिवर्तनकारी यात्रा की शुरुआत कर रहा है जिसकी सम्पूर्णतः भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

निस्संदेह भारतीय ज्ञान परम्परा एक गौरवशाली विरासत है। इसको समझने, खोजने तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय संदर्भों में स्थापित करने की जरूरत है। परन्तु आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में अन्य वैश्विक ज्ञान परम्पराओं को बगैर सही ढंग से सत्यता तथा तार्किकता की कसौटी पर कसे पूरी तरह से खारिज करना तथा भारतीय ज्ञान परम्परा को समग्रता में अपना लेना उचित नहीं होगा।

असल चुनौती प्राचीन ज्ञान विज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता के संदर्भों में पुनर्व्याख्या करने, समझने तथा व्यवहार में लाने की है। विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिए इन्हें पढ़ाना चाहिए।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दे जैसे लैंगिक भेदभाव, बाल शोषण, मानव तस्करी, साइबर क्राइम, आपदा प्रबंधन आदि के मुद्दों को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना अति आवश्यक है जिससे नैतिकता के साथ पोषण किया जा सके और सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जा सके!

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

कोठारी, अतुल। (2024)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारतीयता का पुनरुत्थान।* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली। पृष्ठ 177।

शर्मा, डॉ. गणेश दत्त। (2018)। *वैदिक चिंतन की धाराएं।* उर्मिला प्रकाशन, साहिबाबाद, गाजियाबाद।

सिंह, प्रो. उमेश कुमार। (2024)। *व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण।* म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल। पृष्ठ 104।

पंत, डॉ. नीता। (2024)। भारतीय ज्ञान परंपरा। *रचना द्विमासिक पत्रिका,* ISSN 2249-506, मार्च-अप्रैल 2024, पृष्ठ 73-82।

https://hi.wikipedia.org

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 104-111

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 104-111

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में पुस्तकालय की भूमिका एवं योगदान

Role and Contribution of Libraries in the Development of Indian Knowledge Tradition

डॉ. दीपक मालवीय / Dr. Deepak Malviya

ग्रंथपाल (अतिथि संकाय), शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातक महाविद्यालय, आष्टा, जिला - सीहोर, मध्य प्रदेश - 466116, भारत

Librarian (Guest Faculty), Shaheed Bhagat Singh Government Degree College, Ashta, District - Sehore, Madhya Pradesh - 466116, India

सारांश (Abstract)

विश्वगुरु नाम से पूरी दुनिया में विख्यात भारतवर्ष में ज्ञान और विज्ञान की परंपरा बहुत प्राचीन समय से चली आ रही है, यही कारण है कि भारत को आज भी पूरी दुनिया बुद्ध के देश (Land of Buddha) के नाम से जानती है। पुराने समय से ही भारत की संस्कृति और सभ्यता अन्य देशों की तुलना में काफी समृद्ध थी। यही कारण रहा है कि अतिथि देवो भव: विश्व के अनेक देशों के बुद्धिजीवी, शिक्षाविद और विद्वान शिक्षा ग्रहण और ज्ञान प्राप्त करने के लिए भारत आया करते थे। यहाँ स्थित विशालकाय विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों जैसे-तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला इत्यादि उस समय ज्ञान के भंडार को अपने में समेटे हुए थी। भारतीय ज्ञान परम्परा को सशक्त बनाने में जितना योगदान विश्वविद्यालयों ने दिया उससे कहीं ज्यादा योगदान पुस्तकालयों का रहा है। नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने, भारतीय ज्ञान परंपरा और गौरवशाली विरासत के बारे में जानकारी पुस्तकालयों के माध्यम से ही मिलती है। पुस्तकालय एक मात्र ऐसा स्थान होता है जहाँ वर्तमान और भविष्य की जानकारी समाहित होती है। पुस्तकालय ज्ञान जगत का केंद्रबिंदु है।

India, known worldwide as Vishwaguru, has a tradition of knowledge and science that has been continuing since ancient times. This is the reason why India is still known to the whole world as the Land of Buddha. Since ancient times, India's culture and civilization were much richer compared to other countries. This is why intellectuals, educators and scholars from many countries of the world used to come to India to receive education and gain knowledge following the principle of 'Atithi Devo Bhava'. The massive universities and libraries located here, such as Takshashila, Nalanda and Vikramshila, contained vast repositories of knowledge. Libraries have contributed even more than universities in strengthening the Indian knowledge tradition. Information about Indian knowledge tradition and glorious heritage, connecting the new generation to their roots, is obtained only through libraries. A library is the only place where information about the present and future is contained. The library is the focal point of the world of knowledge.

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, ज्ञान का केंद्रबिंदु, पुस्तकालय, भारत का बौद्धिक इतिहास, शैक्षणिक विस्तार, तक्षशिला, नालंदा

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Focal Point of Knowledge, Library, Intellectual History of India, Educational Expansion, Takshashila, Nalanda

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा अति-प्राचीन होने के साथ विकसित और विविधतापूर्ण इतिहास रखती है क्योंकि यह पद्धति आदियुग से चली आ रही है जो सदियों से मानव सभ्यता को आकर देती रही है। यह परंपरा सिर्फ भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं बल्कि विश्व के अलग-अलग हिस्सों में भी इसका समय-समय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने सदियों से विज्ञान, आयुर्वेद, चिकित्सा, गणित, खगोल और दर्शन जैसे क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है। भारतीय ऋषिमुनियों, आचार्यों और विषय विशेष्यज्ञों ने अपने गहन चिंतन और अनुसंधान के दम पर भारत का लोहा पूरे विश्व में मनवाया था।

शोध का उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में पुस्तकालय के योगदान, भूमिका एवं उपयोगिता को सिद्ध करना।

2. वर्तमान और भविष्य के परिपेक्ष में नई पीढ़ी को भारत की गौरवशाली विरासत की जानकारी पुस्तकालय के केंद्र बिंदु के रूप में सार्थकता को प्रतिबिंबित करना।

परिकल्पना

1. भारतीय ज्ञान परंपरा से नई पीढ़ी को लाभ होगा।

2. पुस्तकालय के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतिबिम्बित विकास होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आयाम

वेद और उपनिषद: भारत में भारतीय ज्ञान का आधार वेद और उपनिषद हैं। इन ग्रंथों में धर्म, दर्शन, गणित, विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

गणित: भारतीय गणितज्ञों ने शून्य, दशमलव प्रणाली और बीजगणित जैसे महत्वपूर्ण गणितीय सिद्धांतों का विकास किया।

आयुर्वेद: आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है जो रोगों के उपचार और निदान के लिए है।

योग: योग शरीर, मन और आत्मा को एकीकृत करने में मदद करता है।

ज्योतिष: ग्रहों और नक्षत्रों की गति के आधार पर भविष्यवाणी करने की एक विधि है।

खगोल विज्ञान: प्राचीन भारतीय खगोलविदों ने ग्रहों की गति और ब्रह्मांड की संरचना के बारे में गहन अध्ययन किया।

धातुकर्म: भारतीयों ने धातुओं और उनसे विभिन्न उपकरण बनाने की कला में महारत हासिल की थी।

चित्र के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के विस्तार के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है जिसमें भगवान गौतम बुद्ध अपने अनुयायियों को बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्रदान कर रहे हैं।

पुस्तकालय

पुस्तकालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका और योगदान को समझने से पहले पुस्तकालय होता क्या है यह समझना अति-आवश्यक है। पुस्तकालय एक ऐसा स्थान होता है जहां पर पाठक अपने विषय से सम्बंधित अध्ययन सामग्री जैसे-अखबार, पत्र-पत्रिकाएं, मैप, एटलस, पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, पांडुलिपियों एवं अन्य मुद्रित या डिजिटल सामग्रियों का एक व्यवस्थित संग्रह होता है, जिसे लोग पढ़ने, अध्ययन करने, अध्ययन सामग्रियों को एक स्थान पर शांत वातावरण में बैठकर अपनी जिज्ञासा अनुसार ज्ञान में वृद्धि कर सकता है और उधार लेने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। यह एक भौतिक भवन या एक आभासी स्थान हो सकता है, और इसका मुख्य उद्देश्य ज्ञान और सूचना को एक समुदाय के लिए सुलभ बनाना है। वही दूसरी ओर आज वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में डिजिटल पुस्तकालय/ई-पुस्तकालय इतने आधुनिक हो गए है कि आप किसी भी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस (मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप, आईपैड इत्यादि) के माध्यम से एक

क्लिक (one click) पर दुनिया भर की अध्ययन सामग्रियों को दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर इलेक्ट्रॉनिक फॉर्मेट में आसानी से प्राप्त और उसका इस्तेमाल कर सकते है। बाकायदा आपके पास उसे एक्सेस करने के लिए इंटरनेट होना जरूरी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में मध्य प्रदेश शासन की पहल

मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा छात्र-छात्राओं को पुस्तकालयों में पढ़ने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तकें उपलब्ध कराई जा रही है जिससे वे अपने विषय से हटकर अन्य पुस्तकों का ज्ञान अर्जित कर सकते है। मध्य प्रदेश शासन का यह निर्णय भारतीय परंपरा और अपनी भारतीय संस्कृति को बचाने का महत्वपूर्ण कदम है।

ई-ग्रंथालय

देश के अधिकांश पुस्तकालयों में उपयोग होने वाला ई-ग्रंथालय सॉफ्टवेयर के माध्यम से भी भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तकों का अध्ययन उसे उपयोग करने वाले पाठकों द्वारा किया जाता है जो कि उपयोगकर्ताओं के लिए निशुल्क है। इसके लिए पाठक का ई-ग्रंथालय में पंजीकृत होना आवश्यक है तभी इसका इस्तेमाल और लाभ लिया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में पुस्तकालयों की भूमिका एवं योगदान

भारतीय ज्ञान के प्रचार-प्रसार, ज्ञान को सुरक्षित रखने और शैक्षणिक प्रक्रिया में पुस्तकालयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। नालंदा और तक्षशिला जैसे पुस्तकालय ज्ञान का ऐसा केंद्र बिंदु थे। ज्ञान के भंडार को सहेजने में इन दोनों विश्वविद्यालयों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। तक्षशिला को किसी एक व्यक्ति ने नष्ट नहीं किया, बल्कि इसे कई बार अलग-अलग शासकों और आक्रमणकारियों ने नष्ट किया। इसे 5वीं शताब्दी ईस्वी में हूणों ने तोड़ा और बाद में 7वीं शताब्दी में भी इसे नुकसान पहुँचाया गया। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि 12वीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी के आक्रमणों ने नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों को नष्ट किया था, जबकि तक्षशिला का पतन उससे पहले ही हो गया था।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक पुस्तकालय ने ज्ञान को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा न केवल प्राचीन काल में बल्कि आज भी विज्ञान, चिकित्सा, गणित और अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। भारत के मनीषियों और वैज्ञानिकों का योगदान आने वाले समय में भी अमूल्य रहेगा। भारतीय ज्ञान की यह परंपरा हर पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है।

संदर्भ (References)

e-Granthalaya: A digital agenda for automation and networking of government libraries. (n.d.). Retrieved November 25, 2025, from https://egranthalaya.nic.in

Mandal, A., & Ghosh, S. (2018). Digital libraries in India: Initiatives and prospects. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology, 38*(4), 234–240.

National Library of India. (2025). *Home*. https://www.nationallibrary.gov.in

Tiwari, D. S. (2023). Indian Knowledge System (IKS) as a significant corpus of resources useful for personal and professional development. *International Journal of Humanities and Social Science Invention, 12*(9), 191–200.

गौर, स. (सं.). भारतीय ज्ञान परंपरा एक विमर्श। मीना बुक पब्लिकेशन।

पाणिनी कालीन भारतवर्ष (पृ. 2)। मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

भारतीय ज्ञान और विज्ञान परंपरा: एक दृष्टि। (2025, November 20). *Khan Global Studies Blogs*. https://khanglobalstudies.com

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग, 2026, 112-116

RSYN PROCEEDINGS, 2026, 3(1), 112-116

संपादक: धर्मेंद्र सूर्यवंशी, भास्कर परमार, शशांक दुबे

ISBN: 978-81-998593-3-3, 978-81-998593-4-0 DOI: 10.70130/RP.2026.0301

Released under CC BY-NC-ND 4.0 | https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

सारांश (Summary)

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग (2026)

प्रस्तुत संकलन इस मौलिक धारणा पर आधारित है कि **भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS)** न केवल ऐतिहासिक गौरव का विषय है, बल्कि यह 21वीं सदी की जटिल चुनौतियों—जैसे जलवायु परिवर्तन, मानसिक स्वास्थ्य, आर्थिक विषमता और तकनीकी नैतिकता—के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है।

1. वैज्ञानिक और गणितीय उत्कृष्टता (Scientific & Mathematical Paradigm)

शोध पत्रों का एक बड़ा हिस्सा यह प्रमाणित करता है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों ने प्रेक्षण और तर्क (Reasoning) के माध्यम से विज्ञान की नींव रखी थी।

- **भौतिकी और रसायन:** डॉ. शशांक दुबे और अखिलेश शिंदे के शोध बताते हैं कि 'कणाद' का परमाणु सिद्धांत और बौद्ध दर्शन का 'क्षणभंगवाद' (Anicca) आधुनिक क्वांटम भौतिकी और रासायनिक गतिकी के समकक्ष हैं।

- **गणित:** डॉ. सपना ताम्रकार और वसीम खान के अनुसार, शून्य, दशमलव और ज्यामिति के भारतीय सिद्धांत केवल गणना के उपकरण नहीं थे, बल्कि वे जीवन प्रबंधन और स्थापत्य कला के आधार थे।

2. पर्यावरण और पारिस्थितिकी (Environment & Ecology)

शीला मेवाड़ा, प्रथम भनोत्रा और डॉ. मेघा जैन के लेखों का निष्कर्ष है कि भारत ने प्रकृति को कभी 'उपभोग' की वस्तु नहीं माना।

- **पंचमहाभूत सिद्धांत:** पृथ्वी, जल और वायु का देवतुल्य सम्मान संसाधनों के अति-दोहन को रोकता है।
- **सतत विकास (SDG):** प्राचीन 'यज्ञ' और 'लोक-परम्पराओं' के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का जो मॉडल भारत ने दिया, वह आज के संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (UNSDGs) के पूर्णतः अनुकूल है।

3. सामाजिक संरचना और महिला सशक्तिकरण (Social Structure & Women Empowerment)

भास्कर परमार, डॉ. किरण वर्मा और डॉ. ललिता राय श्रीवास्तव के शोध पत्रों ने इस मिथक को तोड़ा है कि प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति गौण थी।

- **विदुषी परंपरा:** गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों के उदाहरण सिद्ध करते हैं कि ज्ञान प्राप्ति में लिंग-भेद का कोई स्थान नहीं था।
- **शासन कला:** भगवत सिंह पाल के रामायण आधारित शोध से स्पष्ट है कि जनमत और नैतिकता आधारित शासन (Good Governance) भारतीय लोकतंत्र की प्राचीन विरासत है।

4. आधुनिक प्रबंधन और आर्थिक न्याय (Management & Economic Justice)

अनिमेष पटेल, डॉ. लोकेन्द्र सिंह और डॉ. दीपक मालवीय के निष्कर्ष आधुनिक व्यावसायिक जगत के लिए दिशा-निर्देश देते हैं:

- **राजस्व प्रबंधन:** कौटिल्य का अर्थशास्त्र 'उचित कर' और 'कोष' की सुरक्षा पर जोर देता है, जो आधुनिक प्रत्यक्ष कर प्रणालियों के लिए प्रेरणा है।

- **विपणन (Marketing):** पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के माध्यम से व्यवसाय को केवल लाभ तक सीमित न रखकर 'नैतिक संतुष्टि' से जोड़ा गया है।

5. शिक्षा और भविष्य (Education & The Way Forward)

डॉ. दीपेश पाठक और राजेश मधुकर के अनुसार, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** भारतीय ज्ञान परंपरा को मुख्यधारा में लाने का एक ऐतिहासिक अवसर है। कौशल विकास (Skill Development) और चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुल पद्धति के व्यावहारिक तत्वों को अपनाना अनिवार्य है।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान परंपरा एक **'जीवन्त परम्परा' (Living Tradition)** है। यह संकलन वैश्विक समुदायों को यह संदेश देता है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच कोई द्वंद्व नहीं है; बल्कि, भारतीय परंपरा की नींव पर ही एक टिकाऊ और न्यायपूर्ण वैश्विक भविष्य का निर्माण संभव है।

नाम अनुक्रमणिका (Name Index)

अ / A

- **अखिलेश शिंदे (Akhilesh Shinde):** लेखक (बौद्ध दर्शन एवं रासायनिक गतिकी)
- **अंजलि आचार्य (Anjali Acharya):** लेखक
- **अदिति (Aditi):** वैदिक देवसत्ता और प्रकृति का प्रतीक
- **अतुल कोठारी (Atul Kothari):** शिक्षाविद (IKS संदर्भ)
- **अनिमेष पटेल (Animesh Patel):** लेखक (राजस्व प्रबंधन एवं विपणन)
- **अगस्त्य ऋषि (Sage Agastya):** विद्युत एवं ऊर्जा विज्ञान के प्रणेता
- **अप्पय दीक्षित (Appayya Dikshita):** दार्शनिक
- **आर्यभट्ट (Aryabhata):** महान गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री

क / K

- **कणाद ऋषि (Sage Kanada):** वैशेषिक दर्शन एवं परमाणुवाद के जनक
- **कौटिल्य / चाणक्य (Kautilya):** अर्थशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र के प्रणेता
- **कालिदास (Kalidasa):** महाकवि (प्रकृति चित्रण एवं साहित्य)

ग / G

- **गार्गी (Gargi):** वैदिक काल की महान विदुषी एवं दार्शनिक
- **गोस्वामी तुलसीदास (Tulsidas):** रामचरितमानस एवं सामाजिक मूल्य

ज / J

- **जीतेन्द्र गुप्ता (Jitendra Gupta):** लेखक (भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास)

ड / D

- **डॉ. किरण वर्मा (Dr. Kiran Verma):** लेखक (महिला सशक्तिकरण)
- **डॉ. दीपक मालवीय (Dr. Deepak Malviya):** लेखक (पुस्तकालय विज्ञान)
- **डॉ. दीपेश कुमार पाठक (Dr. Dipesh Pathak):** लेखक (शिक्षा पद्धति एवं NEP)
- **डॉ. ललिता राय श्रीवास्तव (Dr. Lalita Rai):** लेखक (सामाजिक आयाम)
- **डॉ. लोकेन्द्र विक्रम सिंह (Dr. Lokendra Singh):** लेखक (प्रबंधन एवं विपणन)
- **डॉ. मेघा जैन (Dr. Megha Jain):** लेखक (धर्म एवं आध्यात्म)
- **डॉ. शशांक दुबे (Dr. Shashank Dubey):** लेखक (प्राचीन भौतिक विज्ञान)
- **डॉ. सपना तामकार (Dr. Sapna Tamrakar):** लेखक (गणितीय योगदान)

ध / D

- **धर्मेंद्र सूर्यवंशी (Dharmendra Suryavanshi):** लेखक (सामाजिक उपयोग)

प / P

- **पतंजलि (Patanjali):** योग सूत्र के प्रणेता
- **प्रथम भनोत्रा (Pratham Bhanotra):** लेखक (पर्यावरण एवं सह-अस्तित्व)

- **पाणिनी (Panini):** अष्टाध्यायी (भाषा विज्ञान एवं व्याकरण)

ब / B

- **बिन्देश कुमार शुक्ला (Bindesh Shukla):** लेखक (वैज्ञानिक विरासत)
- **ब्रह्मगुप्त (Brahmagupta):** गणितज्ञ (शून्य एवं बीजगणित)

भ / B

- **भगवत सिंह पाल (Bhagvat Singh Pall):** लेखक (रामायण एवं शासन कला)
- **भास्कर परमार (Bhaskar Parmar):** लेखक (महिला सशक्तिकरण)
- **भास्कराचार्य (Bhaskaracharya):** सिद्धांत शिरोमणि (गणित एवं खगोल)

म / M

- **मैत्रेयी (Maitreyi):** दार्शनिक एवं विदुषी
- **महर्षि दयानंद (Maharishi Dayanand):** वेदों की ओर लौटो

र / R

- **राजेश मधुकर सोनकुसरे (Rajesh Madhukar):** लेखक (रोजगार एवं शिक्षा)

व / V

- **वराहमिहिर (Varahamihira):** पंचसिद्धांतिका (खगोल एवं ज्योतिष)
- **वसीम खान (Vasim Khan):** लेखक (गणित एवं जीवन-शैली)
- **विदुर (Vidur):** नीति शास्त्र के ज्ञाता
- **वेद व्यास (Ved Vyas):** वेदों के संकलनकर्ता एवं महाभारत के रचयिता

श / S

- **शीला मेवाड़ा (Sheela Mewada):** लेखक (पर्यावरण संरक्षण)
- **शंकराचार्य (Shankaracharya):** अद्वैत दर्शन के पुनरुद्धारक

वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका (Alphabetical Subject Index)

अ / A

- **अंक प्रणाली (Number System)**
    - शून्य (Zero): ऐतिहासिक उद्गम और महत्व
    - दशमलव पद्धति (Decimal System): स्थानीय मान की अवधारणा
- **अग्स्त्य संहिता (Agastya Samhita):** प्राचीन विद्युत विज्ञान और ऊर्जा के सिद्धांत
- **अद्वैत वेदांत (Advaita Vedanta):** जीव और ब्रह्म की एकता, वैश्विक चेतना
- **अधिकार एवं स्थिति (Rights & Status):** वैदिक समाज में स्त्रियों के अधिकार
- **अर्थशास्त्र (Arthashastra):**
    - कौटिल्य: सप्तांग सिद्धांत, कोष (Treasury) प्रबंधन
    - कराधान (Taxation): उचित संग्रह और वितरण के नियम
- **अहिंसा (Non-violence):** व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक न्याय
- **अष्टधा प्रकृति (Eightfold Nature):** गीता के अनुसार प्रकृति के घटक

आ / I

- **आयुर्वेद (Ayurveda):** * त्रिदोष सिद्धांत: वात, पित्त, कफ का संतुलन
    - निवारक स्वास्थ्य: ऋतुचर्या और दिनचर्या
- **आर्यभटीय (Aryabhatiya):** खगोल विज्ञान और गणितीय गणनाएँ
- **आधुनिक प्रत्यक्ष कर (Modern Direct Tax):** प्राचीन राजस्व नीति के साथ सामंजस्य

इ / E

- **इतिहास (History):** ज्ञान परंपरा का विकास और निरंतरता
- **इलेक्ट्रॉनिक विन्यास (Electronic Configuration):** प्राचीन भौतिकी और आधुनिक रसायन का अंतर्संबंध

क / K

- **कणाद ऋषि (Sage Kanad):** वैशेषिक दर्शन और परमाणुवाद (Atomic Theory)
- **कौटिल्य (Kautilya):** प्रशासनिक नैतिकता और आर्थिक नीतियां
- **कौशल विकास (Skill Development):** 64 कलाएँ और व्यावसायिक शिक्षा

ख / A

- **खगोल विज्ञान (Astronomy):** ग्रह गति, ग्रहण गणना और काल मापन

ग / G

- **गणित (Mathematics):**
    - बीजगणित: शुल्ब सूत्र और समीकरण
    - त्रिकोणमिति: ज्या (Sine) और कोज्या (Cosine) की उत्पत्ति
- **गुरुकुल पद्धति (Gurukul System):** प्राचीन शिक्षण विधियाँ और आचार्य-शिष्य परंपरा

च / C

- **चरक संहिता (Charaka Samhita):** औषधीय विज्ञान और चिकित्सा नैतिकता

ज / B

- **जैव-विविधता (Biodiversity):** प्रकृति संरक्षण और पवित्र उपवन (Sacred Groves)
- **जनमत (Public Opinion):** रामायण कालीन शासन में प्रजा की भूमिका

त / T

- **तकनीकी विरासत (Technical Heritage):** प्राचीन भारतीय धातुकर्म और वास्तुकला

द / D

- **दार्शनिक आधार (Philosophical Foundations):** सांख्य, योग और न्याय दर्शन
- **दंड नीति (Policy of Punishment):** न्यायपूर्ण शासन के सिद्धांत

ध / D

- **धर्म (Dharma):** कर्तव्य, नैतिकता और सामाजिक व्यवस्था

न / N

- **नारी शक्ति (Women Power):** विदुषी परंपरा (गार्गी, मैत्रेयी)
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020):** भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का एकीकरण

प / P

- **पंचमहाभूत (Panchamahabhuta):** पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश
- **पुस्तकालय विज्ञान (Library Science):** पांडुलिपि संरक्षण और सूचना प्रबंधन
- **पुरुषार्थ चतुष्टय (Four Goals of Life):** धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

ब / B

- **बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy):**
    - क्षणभंगवाद (Anicca): अनित्यता और रासायनिक गतिकी
    - संघ प्रबंधन: सामूहिक नेतृत्व के सिद्धांत

भ / B

- **भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS):** समग्र अवधारणा और वैश्विक प्रासंगिकता
- **भौतिक विज्ञान (Physics):** ऊर्जा, गति और पदार्थ के प्राचीन नियम

म / M

- **मानव-प्रकृति संबंध (Human-Nature Relationship):** पारिस्थितिक नैतिकता और सह-अस्तित्व
- **विपणन प्रथाएं (Marketing Practices):** नैतिकता आधारित व्यवसाय और ग्राहक संतुष्टि

र / R

- **रामायण (Ramayana):** रामराज्य, आदर्श शासन और नीति मूल्य
- **राजस्व प्रबंधन (Revenue Management):** प्राचीन भारत की कर प्रणाली और वित्तीय सुदृढ़ता

व/V

- **वैदिक काल (Vedic Era):** ज्ञान का उद्भव और संहिताएं
- **वसुधैव कुटुम्बकम् (Global Family):** सार्वभौमिक भाईचारा और वैश्विक शांति

स/S

- **सतत विकास (Sustainable Development):** संयमित उपभोग और प्रकृति पोषण
- **सांख्य दर्शन (Samkhya Philosophy):** प्रकृति और पुरुष का विवेक

विषय अनुक्रमणिका (Subject Index)

I. विज्ञान, गणित एवं तकनीकी आयाम (Science, Mathematics & Technology)

- **भौतिक विज्ञान एवं परमाणु सिद्धांत**
  - वैशेषिक दर्शन (कणाद ऋषि): परमाणुवाद, द्रव्य, गुण, कर्म
  - ऊर्जा एवं गति: अगस्त्य संहिता, प्राचीन विद्युत अवधारणाएं
  - पदार्थ विज्ञान: पंचभूत और भौतिक गुण
- **गणितीय विरासत**
  - अंक प्रणाली: शून्य (Zero), दशमलव, स्थानीय मान
  - बीजगणित एवं ज्यामिति: शुल्ब सूत्र, त्रिकोणमिति (ज्या/कोज्या)
  - खगोल विज्ञान: आर्यभटीय, ग्रह गति, काल गणना
- **रासायनिक गतिकी एवं बौद्ध दर्शन**
  - क्षणभंगवाद (Anicca): अनित्यता, निरंतर परिवर्तनशीलता
  - अभिक्रिया दर: आणविक संघट्ट, प्राचीन प्रक्रियात्मक दर्शन
  - तुलनात्मक विश्लेषण: बौद्ध न्याय एवं आधुनिक रसायन विज्ञान

II. पर्यावरण, दर्शन एवं जीवन पद्धति (Environment, Philosophy & Lifestyle)

- **पारिस्थितिकी एवं प्रकृति संरक्षण**
  - पंचमहाभूत सिद्धांत: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश
  - वैदिक सूक्त: पृथ्वी सूक्त (भूमि माता), शांति पाठ
  - पर्यावरण नैतिकता: अष्टधा प्रकृति, पारिस्थितिक संतुलन
- **दार्शनिक आधार एवं सह-अस्तित्व**
  - मानव-प्रकृति संबंध: अद्वैत वेदांत, सांख्य दर्शन
  - सतत विकास (SDG): संयमित उपभोग, लोक-कल्याण
  - जैव-विविधता: वनस्पति पूजा, पवित्र उपवन (Sacred Groves)
- **अध्यात्म एवं वैश्विक चेतना**
  - वसुधैव कुटुम्बकम्: वैश्विक नागरिकता, सार्वभौमिक भाईचारा
  - योग एवं आयुर्वेद: मानसिक स्वास्थ्य, त्रिदोष सिद्धांत (वात, पित्त, कफ)
  - जीवन मूल्य: सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह

III. सामाजिक संरचना एवं महिला सशक्तिकरण (Social & Gender Dimensions)

- **नारी शक्ति एवं सशक्तिकरण**
  - वैदिक विदुषियाँ: गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा
  - अधिकार एवं स्थिति: स्त्री शिक्षा, सामाजिक न्याय
  - आधुनिक प्रासंगिकता: नेतृत्व, समानता, सांस्कृतिक विरासत
- **राजनीति एवं शासन कला**
  - रामायण (आदर्श राज्य): रामराज्य, जनमत, प्रजा-हित

- नीति शास्त्र: विदुर नीति, शुक्र नीति
- प्रशासनिक नैतिकता: धर्म-आधारित शासन, दंड नीति

IV. प्रबंधन, राजस्व एवं शिक्षा (Management, Revenue & Education)

- **आर्थिक एवं राजस्व प्रबंधन**
  - कौटिल्य का अर्थशास्त्र: कोष प्रबंधन, कराधान (Taxation) सिद्धांत
  - प्रत्यक्ष कर प्रणालियाँ: उचित संग्रह, पारदिर्शता
  - राजस्व नैतिकता: जनकल्याणकारी अर्थव्यवस्था
- **व्यावसायिक एवं विपणन प्रथाएं**
  - पुरुषार्थ चतुष्टय: धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
  - नैतिक विपणन (Marketing): ग्राहक संतुष्टि, सत्यनिष्ठा
  - संगठनात्मक व्यवहार: नेतृत्व गुण, टीम भावना
- **शिक्षा एवं रोजगार**
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020): भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का एकीकरण
  - कौशल विकास: प्राचीन भारतीय कलाएँ और विज्ञान (64 कलाएँ)
  - पुस्तकालय एवं सूचना: पांडुलिपि संरक्षण, ज्ञान का लोकतंत्रीकरण

मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग

Utility of Indian Knowledge Tradition in Human Life

भारत की ज्ञान परंपरा 'सत्य' की खोज और 'लोक-कल्याण' पर आधारित है। यह केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि 21वीं सदी की समस्याओं—जैसे जलवायु परिवर्तन और नैतिक संकट—का समाधान है। प्रस्तुत पुस्तक उन 20 शोध पत्रों का संकलन है जो विज्ञान, प्रबंधन, समाज और पर्यावरण के क्षेत्रों में भारतीय प्रज्ञा की वैश्विक श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं। यह संकलन शोधार्थियों के लिए एक वैचारिक सेतु का कार्य करेगा।

यह पुस्तक प्रमाणित करती है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों ने प्रेक्षण के माध्यम से आधुनिक विज्ञान की नींव रखी। कणाद का परमाणुवाद और आर्यभट्ट की खगोलिकी आज भी प्रासंगिक हैं। पुस्तक का निष्कर्ष है कि 'पंचमहाभूत' का संतुलन ही 'सतत विकास' (SDG) की कुंजी है। इसके अतिरिक्त, कौटिल्य की राजस्व नीति और रामायण की शासन कला आधुनिक लोकतंत्र के लिए मार्गदर्शक हैं।

RSYN RESEARCH LLP, India
rsynresearch.com

स्मारिका

इस स्मारिका का उद्देश्य 'मानव जीवन में भारतीय ज्ञान परंपरा' पर हुए गहन शोध और विमर्श को एक स्थाई दस्तावेज़ के रूप में संजोना है।

प्रमुख आकर्षण:

- **शोध पत्र संकलन:** 20 विशेषज्ञ शोधार्थियों के लेख जो विज्ञान से लेकर आध्यात्म तक फैले हैं।
- **वैचारिक प्रेरणा:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप भारतीय ज्ञान के एकीकरण पर जोर।
- **सांस्कृतिक धरोहर:** आष्टा (सीहोर) क्षेत्र और शहीद भगत सिंह महाविद्यालय की शैक्षणिक यात्रा का विवरण।

ISBN 978-819985933-3
books.rsyn.org